Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक था ईश्वर

डॉ. प्रतिभा पुरन्धि

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ईश्वर की हवेली का आधुनिक रूप

Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक था ईश्वर

(पञ्चमहायज्ञ प्रार्थना भजन सहित)

डॉ॰ प्रतिभा पुरन्धि
असिस्टैण्ट प्रोफेसर
संस्कृत विभाग, जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू।
(शास्त्री, एम. ए, एम.फिल, पीएच.डी,
शिक्षा शास्त्री, व्याकरणोत्तमा)

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समर्पण श्रद्धामयी माँ को

क्षमा व करुणा वत्सलता में

तुझ सा न कोई है विलक्षण

ऋजु मञ्जु मृदु उज्ज्वल

स्फटिक सा पारदर्शी मन

तप त्याग वैराग्य भावना

कहीं न देखा तुझ सा संयम

तेरी साधना से रचित यह

'एक था ईश्वर' तुझे समर्पण

✡✡✡✡✡

लम्हें जिन्दगी के भले खत्म हो जाएँ।
होठों की मुस्कान कभी खत्म न हो।।
फूलों की तरह बिखरे मुस्कुराहटें।
इन्सानियत के गुलिस्तां कभी खत्म न हों।।
अपने लिए तो सारा जहाँ जी रहा है।
गैरों के निगहबाँ कभी खत्म न हो।।
दयानन्द की तरह जहर पीने वाले।।
दीन दुखियों के मेहरबां कभी खत्म न हो।

CC-0 In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आत्मनिवेदन

आज से लगभग 23 वर्ष पूर्व मेरी त्यागमयी आ॰ माँ ने अपने पू॰ पिता ईश्वरदास को श्रद्धांजलि के रूप में उनके जीवन सन्दर्भों को पुस्तिकाकार रूप में प्रकाशित करने की इच्छा व्यक्त की। बाल्यकाल से ही अपने मातृमुख से पू॰ नाना जी के विलक्षण व्यक्तित्व तथा राष्ट्र के विघटनकाल की दर्द भरी गाथाएँ हम भाई बहिन बड़ी जिज्ञासा तथा उत्सुकता से श्रवण करते थे। अब अवसर था इन्हें पृष्ठों में समेटने का। मैने इस उत्तरदायित्व को पूर्ण करने का संकल्प लिया और झटिति इस कार्य हेतु जुट गई मैंने अपने मामा जी (जो रिश्ते में मामा थे किन्तु हमारे पारिवारिक हर निर्णय में हमारे गुरू, निर्देशक, ज्ञानवृद्ध, वयोवृद्ध, अनुभववृद्ध से भी कहीं बढ़ कर थे। आयु में हमारी माँ से लगभग बीस वर्ष बड़े थे) के पास जाकर ईश्वरदास जी के सम्बन्ध में कई महत्त्वपूर्ण तथ्य व जीवनवृत्त संगृहीत किए किन्तु मेरे विवाह के अन्तराय ने इस कार्य को 23 वर्ष का दीर्घकालीन विराम दे दिया।

विघटनकाल में मेरी माँ की आयु 14 वर्ष की थी। 66 वर्ष पूर्व की गाथाओं की तस्वीर अब उनके स्मृतिपथ में बड़ी धुँधली हो चुकी थी पुनरपि मेरे आग्रह पर मध्य के इन 22–23 वर्षों में अपने गृहकार्य से किसी प्रकार अवसर निकाल कर अपने दुर्बल मस्तिष्क से विस्मृत अतीत को वे ढूँढ ढूँढ कर उन्हें कलमबद्ध करती रहीं। इस आयु में मेरी माँ का यह प्रयास कठिन किन्तु श्लाघनीय था। ये सब उन्हीं के आयास व बलवती इच्छाशक्ति का परिणाम है कि आज यह लघु पुस्तिका आप सब के सम्मुख प्रस्तुत है। इस अवसर पर जगत जननी जगदम्बा ईश्वर व अपने श्रद्धेय गुरुजनों के प्रति कृतज्ञ हूँ। मेरे प्रत्येक सत्कार्य में मेरे पति डॉ॰ नरेश बत्रा जी की प्रेरणा और

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
प्रोत्साहन सदैव प्राप्त होता है। मेरी आ॰ माँ एवं आ॰ मासी शशि जी बड़ी भाभी व बहिनों ने न केवल मानसिक प्रोत्साहन दिया बल्कि आर्थिक सहयोग भी दिया। तदर्थ इन सब का कृतज्ञतापूर्वक धन्यवाद।

इस कार्य को अन्तिम रूप देते हुए यद्यपि मेरे मन के एक कोने में परिताप भी है कि माँ की इस लघीयसी अभिलाषा को पूर्ण करने में मैंने इतने वर्ष बिता दिए। सामग्री तो प्राप्त हो गई थी किन्तु बिखरी हुई थी, उसे क्रमबद्ध व व्यवस्थित करना सरल न था अतः इसमें समय भी लगा और परिश्रम भी। अन्ततः उनकी यह सदिच्छा पूर्ण हुई इसका सन्तोष भी है।

महान पुरूषों के जीवन प्रसंग दीपशिखा बन कर हम सब के जीवन की घोरघनी तमिस्रा को आलोकित करते हैं। मेरे नाना श्री ईश्वरदास के भी जीवन सन्दर्भ जन जन हेतु प्रेरणास्रोत बनेंगे, ऐसी मुझे आशा है।

प्रतिभा

ओं नृचक्षसो अनिमिषन्तो अर्हणा बृहद्देवासो अमृतत्वमानशुः।
ज्योतीरथा अहिमाया अनागसो दिवो वर्ष्माणं वसते स्वस्तये।।

ऋ॰ – 10/63/2

निरन्तर परोपकार की दृष्टि रखने वाले प्रकाशपथ पर गतिशील अपने शरीर, वाणी, कर्म से किसी भी प्रकार कष्ट न देने के स्वभाव से युक्त, पाप रहित, जगत के कल्याण के लिए उत्पन्न आत्माएँ संसार में सर्वोच्च पद प्राप्त करते हुए अमरता को प्राप्त करती हैं।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय सूची

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक था ईश्वर

भारतवसुन्धरा को रत्नगर्भा होने के साथ साथ उन ऋषि मुनि योगी महात्मा तपस्वी वीरपुरूषों की भी जन्मदात्री होने का गौरव प्राप्त है जिनकी यशस्सुरभि भारत के दिग् दिगन्त को ही नहीं बल्कि भारत से बहिः सुदूर प्रदेशों को भी सुरभित सुवासित करती रही है। इन के मध्य ऐसी भी असंख्य विलक्षण विभूतियाँ हुई जिनका जीवन वृक्ष के बीज की भान्ति था। माटी की मोटी तहों मे बन्द रहने के कारण वे अपने आसपास की सुवास को बाह्य पदार्थों तक पहुँचाने में समर्थ न हो सके न ही वे इतिहास के पृष्ठों पर अपनी सुवास की स्याही बिखेर पाये। किन्तु शाखाओं प्रशाखाओं व पल्लव युक्त हरे भरे विशाल वृक्षों को तैयार कर स्वयं विशीर्ण हो गये। ऐसी ही दिव्यविभूतियों में से थे – श्रीईश्वरदास

जन्म व जन्मभूमि

आज से लगभग 111 वर्ष पूर्व जब भारत में अंग्रेजों का आधिपत्य था, जम्मू कश्मीर राज्य के अन्तर्गत राजौरी से लगभग दस मील दूर हिमाच्छादित पर्वतों पर एक सुन्दर ग्राम था – भ्रोट। मुस्लिम बहुल इस गाँव में एक प्रतिष्ठित, कुलीन सुसमृद्ध हिन्दू परिवार भी था जिनके पूर्वज जमींदार व जागीरदार थे। इस परिवार में तीन भाईयों के परिवार का एक साथ एक ही घर में निवास था। इनके क्रमशः नाम थे– नन्दलाल, सावनमल्ल तथा बेलीराम। नन्दलाल के तीन पुत्र थे – सन्तराम, मोहनलाल तथा दुर्गादास। इन्हीं तीन भाईयों के मध्यम भाई सावनमल्ल तथा उनकी पत्नी श्रीमती मन्ना देवी जी के घर ईश्वरदास ने जन्म लिया।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रथम पत्नी जमुना देवी से सावनमल्ल को कोई सन्तान नहीं हुई तो इन्होंने किसी मन्ना देवी नामक विधवा से पुनर्विवाह करने का निश्चय किया। गाँव के उस अज्ञानमय अविकसित वातावरण के कारण इस विवाह का तीव्र विरोध हुआ, किन्तु समीप के ही गाँव थन्नामण्डी में रह रहे स्वामी सहजानन्द जी से इन्हें अतिशय प्रेरणा और उत्साह प्राप्त हुआ, जिससे यह पुनर्विवाह करने में सफल हुए। वस्तुतः यह घटना तत्कालीन परिस्थितियों में एक महान् क्रान्ति थी। सम्पूर्ण परिवार में इस विवाह से इनके प्रति रोष उत्पन्न हो गया। परिणामतः भविष्य में मन्ना देवी तथा उनकी सन्तान को यावज्जीवन कठोर यातनाएँ झेलनी पड़ी। ऐसी विषम परिस्थितियों में सन् 1898 में इसी भ्रोट गाँव में सावनमल्ल के यहाँ ईश्वरदास का जन्म हुआ। यह सन्तान अपने परिवार में निराली प्रवृत्तियों से सुशोभित थी।

बाल्यकाल

शहर की अपेक्षा इस भ्रोट गाँव का वातावरण अविकसित था। यहाँ शिक्षा की कोई व्यवस्था न थी किन्तु इस परिवार में सावनमल्ल की पत्नी जमुना देवी के निर्देश से मन्ना देवी दोपहर को अपने परिवार के सभी सदस्यों को एकत्रित करके सत्संग का आयोजन करती थी, जिसमें आर्य संगीत रामायण तथा आर्य संगीत–महाभारत अलिफलैला, तोता मैना की कहानियाँ सुनाती थीं। इसी सत्संग से परिवार के सभी सदस्यों को सद्विचार व उत्तम प्रेरणायें प्राप्त होती थीं।

ईश्वरदास बाल्यकाल से ही विलक्षण प्रकृति के थे। मनसा, वाचा, कर्मणा सत्य ही इन्हें प्रिय था। विषम परिस्थितियों में भी धीर गम्भीर बने रहते थे। जब इनके अन्य साथी अपना अधिकांश समय

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परस्पर कलह, क्रीड़ा, आमोद प्रमोद में व्यतीत करते थे तब ईश्वरदास एकान्त में बैठकर चिरकाल तक ईश्वर के ध्यान में मग्न रहते थे। प्रभु सज्जनों को कष्टों की अग्नि में तपाकर उनकी कठोर परीक्षा लिया करता है। अल्पायु में ही ईश्वरदास के लिए कष्टों का दौर आरम्भ हो गया था। छह वर्ष की आयु में विधि के क्रूर पञ्जों ने इनके 32 वर्षीय पिता सावनमल्ल को सदा–सदा के लिए छीन लिया। ईश्वरदास अब पितृविहीन हो गये थे। निर्दय भाग्य ने इनकी पूर्व विधवा माँ को भी फिर से वैधव्य का चोला पहनने को बाध्य कर दिया था।

माँ सहित ईश्वरदास अब जीवन के उस चतुष्पथ पर खड़े थे जहाँ सब ओर कंटीली झाड़ियों से घिरा घोर घना जंगल था। प्रभुविश्वासी ईश्वरदास कांटों की चुभन की परवाह किये बिना अपनी आत्मा में बल एंव आलोक संगृहीत कर आगे बढ़ते चले गये।

वह पथ क्या पथिक कुशलता क्या जिसमें बिखरे शूल न हों।
नाविक की धैर्य परीक्षा क्या जब धारा ही प्रतिकूल न हो।।

ईश्वरदास की माता मन्ना देवी के पुनर्विवाह के समय से ही मन्ना देवी के प्रति पारिवारिक जनों का व्यवहार ठीक न था अब पुनर्विधवा हो जाने के कारण इन्हें और अधिक अपमान, उपेक्षा और तिरस्कार का सामना करना पड़ा। ईश्वरदास को अकारण ही सब तरफ से प्रताड़ना प्राप्त होती थी। जीविकोपार्जन हेतु ईश्वरदास ने अपने चचेरे भाईयों के साथ एक दुकान पर बैठना आरम्भ किया। सत्यता के पुजारी ईश्वरदास से उनकी सत्यप्रियता के कारण आर्थिक लाभ तो दूर रहा, बल्कि नुकसांन होने लगा, परिणामतः अपने चचेरे भाईयों के लिए ये आंखों की किरकिरी बन गये। दुकान से कुछ न कुछ चुराना और उसके लिए ईश्वरदास को दोषी ठहराना

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ईश्वरदास के विरूद्ध अनुचित गलत शिकायतें कर, ईश्वरदास को चाचा से झाड़ फटकार दिलाना, ये सब इनके चचेरे भाईयों के दैनिक कृत्यों का अंग बन गया था। किन्तु स्थितप्रज्ञ ईश्वरदास शान्ति, सन्तोष, धैर्य के साथ सब कुछ सहते चले गये। इन कार्यों के साथ–साथ ईश्वरदास ने अपना अध्ययनक्रम भी जारी रखा। तीन चार घण्टे तक ये अब भी ईश्वरध्यान में आसन लगा कर बैठा करते थे।

एक दिन ईश्वरदास ध्यान में तल्लीन थे कि अन्तरात्मा से एक आवाज आई कि – "ईश्वरदास! ध्यान से अधिक आवश्यक है कि अपनी माँ के दुःखों पर भी दृष्टिपात करना और उनके कष्ट निवारण का उपाय करना। तुम्हारी माँ को तुम्हारे सहारे की आवश्यकता है" अब ईश्वरदास ने अपनी माँ का विशेष ध्यान रखना आरम्भ किया। वे ध्यान में अब भी स्थित रहते किन्तु पूर्वापेक्षया उसकी अवधि न्यून कर दी। माँ के पास बैठकर उनका सुख दुःख समझते। माँ की सेवा शुश्रूषा में भी समय लगाते थे। इसी मध्य इनकी पूर्व माता जमुना देवी का भी स्वर्गवास हो गया।

भाईयों से अलग

इनके चाचे के परिवार में मुर्गे आदि के मांस का सेवन भी किया जाता था अतः ईश्वर को मुर्गे पकड़ कर लाने का भी आदेश दिया जाता था किन्तु ईश्वर के हृदय में न केवल मनुष्यों के प्रति बल्कि सभी पशुपक्षी जीव जन्तु आदि के लिए अपार करूणा थी। इन्हें अपने चचेरे भाईयों का मांस भक्षण करना सर्वथा नापसन्द था। अतः ईश्वर मुर्गे पकड़ने की अपेक्षा उन्हें खदेड़ देते थे। परिणामतः इन्हें अपने चचेरे भाइयों से अतिशय भर्त्सना का शिकार होना पड़ता था।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
इस प्रकार इनके तथा इनके भाईयों के गुण कर्म स्वभाव तथा विचारों में महान् मतभेद था अतः इन्होंने उनसे अब अलग रहने का निश्चय किया। इसके लिए इन्होंने उनसे पैतृक जमीन का भाग मांगा तो उन्होंने यह कहं कर कि यह विधवा की सन्तान है इसे यहाँ से सुई की नोक के बराबर भी ज़मीन नहीं मिलेगी, इन्हें कुछ भी देने से इन्कार कर दिया। पुनः अपने मौसेरे भाई भगतराम सर्राफ तथा मनीराम सर्राफ जी से ईश्वर ने ऋण लेकर मुकद्दमा कर दिया। अठारह वर्ष तक मुकद्दमा चला अन्त में मुकद्दमें के द्वारा राजौरी की हवेली का कुछ भाग मिला। हवेली के अतिरिक्त कुछ ज़मीन का भाग भी मिला।

पूर्व भी परिचय दिया जा चुका है कि भ्रोट ग्राम मुस्लिम बहुल ग्राम था। भ्रोट ग्राम के आस पास के गाँवों में भी मुस्लिम लोग ही रहा करते थे। वे मध्य मध्य में पाँच दस वर्षों में हिन्दुओं पर आक्रमण करते थे, उनके घरों को जला देते थे और तथा उनकी सम्पूर्ण धन पूञ्जी का अपहरण कर लेते थे अतः उनकी बर्बर हरकतों से त्रस्त होकर इस परिवार ने भ्रोट गाँव को छोड़ कर राजौरी में बसने का निश्चय किया।

राजौरी का सौन्दर्य एवं संक्षिप्त इतिहास

चहुँ और नीलगगन को चूम लेने को आतुर पर्वतों की उत्तुंग शिखरमाला और उन पर्वतों के नीचे नगर के दोनों ओर गम्भीर ध्वनि के साथ बहती हुई नदियाँ, तट पर हरितपरिधानधारिणी सीढ़ीनुमा खेतों की पंक्तियां, कहीं शुभ्र उज्ज्वल मुक्ताकण बिखेरते बड़े वेग से गिरते जलप्रपात तो कहीं कठोर पर्वतीय प्रदेशों के अन्तस्तल से निकलते हुए ऋजु निर्मल जल के चश्में आदि भरपूर सौन्दर्य प्रकृति

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने राजौरी नगर पर न्यौछावर किया है। कभी कलकल छलछल कर्णमधुर ध्वनि से नगरवासियों को आनन्द प्रपूरित करने वाली इन नदियों में आज जल सीमित तथा बहाव कम हो गया है। एक नदी को दरहाली तवी तथा दूसरी नदी को तवी कहा जाता है। राजौरी की धरती उपजाऊ है। यहाँ सर्वाधिक खेती चावल तथा मक्की की होती है।

राजौरी का प्राचीन नाम रामपुर राजौरी था। यह अति पुरातन नगर है। मुगलों के समय के खण्डहर यहाँ अभी भी प्राप्त होते हैं। ऐतिहासिक तथा भौगोलिक दृष्टि से भी इस प्रदेश का अतिशय महत्त्व है। संस्कृत के कल्हण कवि द्वारा विरचित 'राजतरङ्गिणी' ग्रन्थ में भी इस नगर का उल्लेख है। प्राचीनकाल में पंजाब से काश्मीर जाने का मार्ग राजौरी के मार्ग से जाता था। मुगल बादशाह इसी मार्ग से काश्मीर जाया करते थे इसलिए आज भी राजौरी के आसपास भिम्बर, राजौरी तथा अन्य नगरों में विशाल मुगल सरायें बनी हुई हैं। इस रास्ते में राजौरी के पास 'नूरी छम्ब' नामक सुन्दर जल प्रपात है। कहा जाता है कि जहाँगीर की महारानी नूरजहाँ इसके किनारे बैठकर कर इसकी फुहार का आनन्द लेती थी, इसी कारण इसका नाम नूरीछम्ब पड़ा।

राजौरी नगरी इतिहास प्रसिद्ध बन्दा वीर वैरागी की भी जन्मदात्री रही है। इनका पूर्वनाम लक्ष्मणदास डोगरा था पुनः माधवदास रखा गया ये राजौरी के क्षत्रिय परिवार से उत्पन्न हुए। एक घटना से दुखी होकर सब कुछ त्याग कर वैराग्य धारण कर नान्देड़ में भक्ति करने लगे। गुरू गोविन्द सिंह ने इन्हें हिन्दू धर्म की प्रेरणा दी और इनको 'बन्दाबहादुर' नाम दिया। इन्होंने हिन्दुओं की रक्षा में अपना

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
महान् योगदान दिया। मुगल इनके घोर शत्रु बन गये। इनकी सेना और इन्हें बड़ी निर्ममता से मौत के घाट उतारा।

राजौरी का उस समय भी व्यापार की दृष्टि से बहुत महत्त्व था। काश्मीर आदि नगरवासियों के साथ इनके व्यापारिक सम्बन्ध थे। राजौरी के पास थन्ना नाम के कस्बे को थन्ना मण्डी कहा जाता हैं क्योंकि वह एक व्यापारिक मण्डी थी। राजौरी तथा आसपास के प्रायः लोग समृद्ध थे। पुरूष और स्त्रियाँ स्वस्थ बलिष्ठ व सुन्दर थीं। ये लोग धार्मिक तथा सीधे सादे थे। हिन्दू यहाँ पाँच छह हजार के लगभग थे।

जब विक्रमी सम्वत् 1988 का गदर पड़ा, हिन्दू मुस्लिम झगड़े हुए तो ईश्वरदास का समस्त परिवार राजौरी आ गया। मुसलमानों ने भ्रोट में इन के मकानों को जला दिया और इन्हें घर से भगा दिया। कहा जाता है कि उन भवनों में इतना समान व अनाज था जो कि छह महीने तक जलता रहा।

महाशय फकीरचन्द का सत्संग

यह दुराशा है कि कोई साथ देगा,
पग फिसला कि कोई हाथ देगा।
विश्व विघ्नों में पग आगे बढ़ा,
सृष्टि का कण कण झुका निज माथ देगा।।

भीषण झँझावातों में ईश्वर ने पीछे मुड़कर न देखा। चुनौती भरे पथ पर चलता रहा, आगे निकलता रहा। इस मध्य ईश्वर ने आठवीं कक्षा उत्तीर्ण कर ली। अब ईश्वर को ऐसे व्यक्ति का वरदहस्त प्राप्त हुआ जिसने इनके हृदय के भीतर दबी हुई वैदिक धर्म व आर्य

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संस्कारों की चिंगारी को और भी प्रज्ज्वलित किया। उनकी प्रेरणा ने ईश्वर को आस्तिक के साथ साथ सच्चा ऋषि भक्त भी बना दिया। ये थे—राजौरी के सम्मानित, प्रतिष्ठित व्यक्तित्व महाशय फकीर चन्द जी। आप वैदिक धर्म के प्रति दृढ़ आस्थावान थे। आपके जीवन का अधिकांश समय वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार में व्यतीत होता था। आपने अपने प्रयासों से राजौरी में आर्य समाज की स्थापना की। आप अदालत में अर्जिनवीस का कार्य करते थे। प्रारम्भ में आप मूर्त्तिपूजक व मांसमक्षी थे किन्तु ऋषिवर दयानन्द रचित अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश को पढ़कर आपके जीवन में क्रान्तिकारी परिवर्त्तन हुआ। आप मूर्ति पूजा, मांसभक्षण तथा अन्य कुरीतियों को त्याग कर वैदिक धर्मी बन गए और दृढ़ता के साथ आजीवन इसके प्रचार प्रसार में लगे रहे। बिना सन्ध्या तथा यज्ञ किए आपने कभी भोजन ग्रहण नहीं किया। आपने राजौरी में कई विद्वानों को बुलाकर वैदिक धर्मी लोगों तथा पौराणिकों के मध्य शास्त्रार्थ भी करवाए। अपने राजौरी के पश्चिम में 'आर्यनक्षेत्रन' नामक ग्राम में जिसे आज 'इरयाखेत्तर' कहते और जहाँ विशिष्ट जाति के लोग रहते हैं, वहाँ पाठशालाएँ खोलीं। स्वधर्म से विमुख होकर मुसलमान बने हुए लोगों का पुनरुद्धार किया फिर से शुद्धि करा कर उन्हें पुनः हिन्दू बनाया। महाशय फकीरचन्द ने वर्षों से दृढ़ता से आबद्ध, हिन्दू जाति को भीतर से खोखला कर रही कुरीतियाँ, पाखण्ड, रूढ़ियाँ, आडम्बरों को दूर किया। वैदिक विवाह का प्रचार किया। डा॰ आदर्श (महाशय फकीर चन्द के पौत्र) ने लिखा—

"1914 तक राजौरी में, बाहर उठती लहरें, अपनी हलचलें पहुँचाने लगी थीं। समूचे पंजाब से लेकर मुम्बई तक आर्यसमाज की विचारधारा व ऋषि दयानन्द के तेजस्वी जीवन का व्यापक प्रभाव पड़

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहा था। शुद्धि अभियान, स्त्री शिक्षा और देश की स्वतंत्रता के लिए आर्यसमाज ने जो अभियान छेड़ा था, वह प्रबुद्ध लोगों को शक्तिशाली चुम्बक सा आकर्षित कर रहा था। सैकड़ों वर्षों से मुस्लिम कहर व जुल्मों का शिकार हिन्दु अब खम ठोक कर शास्त्रार्थ की चुनौती देने लगा था, साथ ही वह अपने समाज में छाई रूढ़ियों, मूर्ति–पूजा व जड़ता को नकार रहा था। आर्यसमाज के प्रचारकों का राजौरी आगमन होने लगा था। उनके तर्क अर्जीनवीस फकीरचंद के मस्तिष्क में हलचल मचाने लगे। पीढ़ी–दर–पीढ़ी जो धार्मिक विश्वास गहरे भीतर तक घर कर चुके थे, उनका टूटना इतना सरल न था। इसके लिए बड़े साहस व संकल्प की ज़रूरत थी। सभी रिश्ते–नाते कट्टर सनातनधर्मी मान्यताओं वाले थे, उनके लिए भी सोचना था। तर्क की एक जलती दियासलाई में उन्हें अपने भीतर–बाहर का अंधकार साफ दिखने लगा। फकीरचन्द के लिए अब इस अंधकार में बने रहना सम्भव नहीं रहा। अपनों का तीव्र विरोध सहते हुए वह ऊर्जावान् आर्यसमाजी बने। संध्या व दैनिक यज्ञ नियमित रूप में आरम्भ हुआ। सामाजिक जागृति का उन्होंने व्रत लिया। रामलीला के दिनों में उन्हें जमे–जमाए दर्शक श्रोता रूप में मिले। बड़ी रुचि से वह रामलीला करवाते। एक दृश्य के बाद जब दूसरा दृश्य खुलने का समय होता, वह अपनी कविताओं, चुटकुलों, व्यंग्योक्तियों आदि के माध्यम से सामाजिक कुरीतियों, अंधविश्वासों और कुप्रथाओं पर प्रहार करते। समाज में उनका आदर–सम्मान एक जागरूक, ज़िम्मेदार और आदरणीय व्यक्ति के रूप में होने लगा। लोग उनकी बातों को न केवल गम्भीरता से सुनते बल्कि उन पर चलते भी। सबके साथ मिल–बैठ कर उन्होंने व्यर्थ के आडम्बर और फिजूल खर्ची रोकने के लिए कुछ सामाजिक नियम बनाए। अनेक कुप्रथाओं को बन्द करवाया।"

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ये व्यक्ति, ईश्वरदास के चचेरे भाई मनीराम की पत्नी मालिन देवी के भाई थे। इस प्रकार महाशय फकीरचन्द की संगति से ईश्वरदास के विचारों में महान् परिवर्तन आया। ये महाशय फकीरचन्द के ही अनुयायी नहीं बल्कि उनकी प्रेरणा से सच्चे आर्य समाजी बन गये। उनसे प्रेरित ईश्वर ने ऋषि दयानन्द द्वारा विरचित लगभग सभी ग्रन्थों का श्रद्धा से आद्योपान्त अध्ययन किया।

ईश्वरदास का विवाह

अब इनके चाचा नन्दलाल को इनके विवाह की चिन्ता हुई। अब भी उन लोगों के हृदय में इनके प्रति विद्वेष की भावना समाप्त नहीं हुई थी। अतः जानबूझ कर उन्होंने इनके साथ अन्याय करते हुए राजौरी के पास ढाँगरी गाँव की एक सर्वथा अनपढ़ तारावती नाम की सात वर्षीया ग्रामीणा के साथ इनके विवाह की वार्त्ता चलाई। ईश्वर ने इस अनमेल विवाह से स्पष्ट इन्कार कर दिया। पर इस विवाह पर उन्हें कटिबद्ध देखते हुए ईश्वर घर से भाग गये और छह मास तक घर से बाहर रहे। महाशय फकीरचन्द इन्हें कहीं से ढूंढकर लाये और जैसे कैसे इन्हें इस विवाह के लिए सहमत किया गया। विवाह सम्पन्न हो गया। विवाह के समय ईश्वरदास 18 वर्ष के थे तथा उनकी पत्नी तारावती सात वर्ष की थी। तारावती को विवाह के पश्चात् अपने पितृगृह में ही रखा गया। जब तारावती चौदह वर्ष की हुई तभी ईश्वरदास उसे अपने घर लाए। तारावती चूंकि बिल्कुल अनपढ़ थी अतः ईश्वर ने बड़े परिश्रम से उसे अक्षराभ्यास करवाना आरम्भ किया। तारावती भी बड़े मनोयोग व लगन से पढ़ती और लिखती चली गई। धीरे धीरे वह पत्र आदि लिखने में भी अभ्यस्त हो गई। ईश्वर ने उसे सन्ध्या हवन का भी प्रशिक्षण दिया। अब वह

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धार्मिक पुस्तकें व शिक्षाप्रद कहानियों के स्वाध्याय में भी रूचि लेने लगी।

ईश्वरदास जी का दैनिक जीवन तथा विलक्षण व्यक्तित्व

ईश्वर का रोम रोम ईश्वर की भक्ति से आपूरित था। उनकी वाणी व उनके प्रत्येक कार्य से आस्तिकता प्रस्फुटित होती थी। अतः सभी लोग इन्हें भक्त जी व महाशय जी के नाम से सम्बोधित करते थे।

ईश्वरदास प्रतिदिन ब्राह्म मुहूर्त में तीन बजे उठते थे। शौच दन्तधावन स्नान आदि से निवृत्त होकर चार बजे ध्यान में बैठते थे। प्रतिदिन सपरिवार आर्य समाज के सत्संग में जाते। सांयकाल भी घर में पत्नी तथा बच्चों के साथ सन्ध्या करते। ईश्वर की तीन पुत्रियां थी सुदर्शन, विनोद, शशि व एक पुत्र सतीश था।

जीविकोपार्जन हेतु सर्वप्रथम कपड़े की दुकान खोली। उस दुकान में इन्हें आर्थिक हानि हुई तो इन्होंने करियाने की दुकान खोली किन्तु सत्यता और ईमान ने इन्हें व्यापार में हानि ही दी। पुनः वैद्य लोगों की संगति में इन्होंने विविध रोगों की चिकित्सा तथा ओषधि आदि का ज्ञान प्राप्त किया। आयुर्वेद के ग्रन्थों का अध्ययन किया। नाड़ी विज्ञान का शिक्षण भी लिया। अन्त में करियाने के कार्य को छोड़कर वैद्य बन गये और अपनी दुकान पर रोगियों की जाँच करने लगे। वहाँ भी परोपकार की भावना अधिक तथा आजीविका की भावना गौण थी। निर्धन व निराश्रित लोगों को निःशुल्क दवा देते थे। इनकी चिकित्सा पद्धति व दवाईयाँ लोगों के लिए प्रभावोत्पादक सिद्ध हुई। इनकी वाणी का माधुर्य भी लोगों को आकृष्ट करता चला

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गया। इनकी कीर्त्ति दूर दूर तक प्रसृत होने लगी थीं। दवा के साथ साथ ये लोगों में आर्यत्व के विचार और भावनाएँ भी जागृत करते थे। जागीरदारी व साहूकारिता इन्हें विरासत में मिली थी। अब ये मनसा वाचा, कर्मणा तथा धनेन दुखी, अपंग, अनाथों के लिए समर्पित थे। पिता द्वारा प्रदत्त ब्याज पर दिये हुए धन से ऋणी लोगों को मुक्त कर दिया। ये यूँ ही लोगों को धन की सहायता करते अथवा अति न्यून ब्याज पर लोगों को धन देते थे। अन्य लोभी ब्याजखोर लोगों को इनकी उदारता के कारण आर्थिक हानि उठानी पड़ती थी इसलिए इनके द्वेषी जनों की संख्या भी कम न थी। ईश्वर की ज्येष्ठा पुत्री सुदर्शन रानी के कथनानुसार – "पिता जी हम सभी बहिन भाईयों को सन्ध्या हवन में अपने साथ बैठाते थे। बचपन से ही हम सभी को उंगली पकड़ कर आर्यसमाज में ले जाते थे। उनकी सज्जनता के कारण लोगों में उनके प्रति अत्यधिक स्नेह सम्मान था। इसलिए दुष्ट लोग इनसे चिढ़ते थें और इन्हें जान से मारने के लिए षड्यन्त्र रचते थे। अतः जब तक पिता जी घर नहीं आ जाते थे, मुझे बड़ी चिन्ता रहती थी। रात्रि में जब पिता जी के घर आने का समय होता तो मैं घर की डयोढ़ी पर ही लैम्प लेकर बैठ जाती थी क्योंकि डयोढ़ी में अन्धेरा रहता था। उन्होंने घर की सारी चाबियाँ मुझे दी हुई थी। हम सभी बच्चों को वे बहुत स्नेह व प्यार देते थे। और प्यार से ही सम्बोधित करते थे। मुझे भी 'बेटी सुदर्शन जी' कह कर बुलाते थे। अदालत आदि में इन्हें अतिशय सम्मान प्राप्त होता था। सरकार का भी इन पर पूर्ण विश्वास व प्रतिष्ठा थी। इनकी नेकी, सच्चाई आस्तिकता वा धार्मिकता किसी से भी छिपी न थी। अपने साथ इन्होंने सनातन धर्म सभा के शास्त्री–सीताराम जी को भी मिला लिया। जिन हिन्दुओं को बलात् मुसलमान बना दिया था उनकी शुद्धि करके पुनः हिन्दू बनाया जाता था। ऐसे कार्यो में सीताराम शास्त्री

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का सहयोग उल्लेखनीय है। इनके इस प्रकार के कार्य से पौराणिक लोग उनसे रूष्ट हो गये।"

हवेली

राजौरी में तहसील के समक्ष स्थित ईश्वरदास की हवेली अपनी विशालता, दृढ़ता तथा भव्यता के लिए सम्पूर्ण नगर में प्रसिद्ध थी। इसकी दिवारे किले की तरह चौड़ी थी। उनकी चौड़ाई डेढ़ मीटर थी। डयोढ़ी पक्की, लोहे व लकड़ी से निर्मित विशाल तथा ऊँचे किवाड़ थे और उनमें अन्दर की और पीछे बड़ा सा रूड़ा (दरवाजा बन्द करने के लिए) लगा हुआ था।

हवेली के अतिरिक्त नदी के पार दूर तक, राजौरी से लेकर भ्रोट तथा थन्नामण्डी में लगभग 10–15 मील तक इनकी ज़मीन थी। मीलों दूर तक इनके खेत थे। इनकी हवेली में कार्य करने हेतु नौकर व हर प्रकार की सुख सुविधा की वस्तुएँ थी। समृद्धि के साथ–साथ दानशीलता भी इनका प्रमुख अलंकरण था। खेतों में जब गेहूँ मक्की व चावल की फसल तैयार होती तो दूर दूर तक निर्धन लोगों के घरों में निःशुल्क अनाज पहुँचाने का प्रबन्ध किया जाता था। यशैषणा से दूर होकर ईश्वर उन निर्धन लोगों में दाता के रूप में अपना नाम भी उजागर नहीं होने देते थे। यह उस समय की बात है जब पर्वतीय गाँवों में सड़के व मार्ग नहीं थे। छोटी छोटी पगडण्डियों से तथा पैदल ही आवागमन होता था।

यज्ञ, दान तथा वेद प्रचार में रूचि

ईश्वर भक्त ईश्वरदास के ह्रदय में वेद तथा यज्ञादि के प्रति अपार आस्था व श्रद्धा थी। वे हरिद्वार गुरुकुल कांगड़ी आदि दूरवर्ती

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थानों से विद्वानों को सादर निमन्त्रित कर राजौरी में हर वर्ष महायज्ञों तथा उत्सवों का भव्य आयोजन करते थे। दूर दूर के गाँव व नगरों से इनके उपदेशों को सुनने व यज्ञ में सम्मिलित होने के लिए श्रद्धालु अच्छी संख्या में उपस्थित होते थे। गुरुकुलों के ब्रह्मचारी भी इन महोत्सवों में भाग लेते थे। ईश्वरदास गुरुकुलीय शिक्षा को अत्यधिक महत्त्व दिया करते थे। 30–40 ब्रह्मचारी यहाँ आकर लाठी, भाला, तलवार चलाने आदि का एक साथ जब प्रदर्शन करते तो दर्शक उन्हें देखते ही रह जाते थे। वे सरिया मरोड़ना, शीशेपर चलना, हाथ से शीशा मसलना, थाली तोड़ना, पेट पर पत्थर फोड़ना आदि दुष्कर प्रदर्शन भी करते थे जिन्हें देखकर सभी विस्मित हो जाते थे। ईश्वरदास सर्वत्र डोंगी पिटवा कर महोत्सवों के दिनों में अनाथ निर्धन निराश्रित लोगों को अनाज, खाण्ड व शक्कर निःशुल्क वितरित करते थे। यज्ञ की पूर्णाहुति तक प्रतिदिन यह कार्यक्रम जारी रहता था।

जब कभी नई फसल तैयार होने से पूर्व पुराने अन्न की न्यूनता हो जाती तो लोलुप व्यापारी अपने गोदामों पर ताला लगा देते थे ताकि समय आने पर मनमाने उच्च मूल्य पर इन्हें बेच कर अधिकाधिक लाभ लिया जा सकें किन्तु करूणाशील ईश्वरदास इससे विपरीत, मन्दी के दिनों में डोंगी पिटवा कर सस्ते दामों पर अनाज बेचते थे। जब फसल तैयार होती थी तो जहाँ अन्य व्यापारी खेतिहर मज़दूर व किसानों को फसल का चतुर्थ भाग देते थे वहीं ईश्वरदास आधा उन्हें और आधा अपने पास रखते थे।

अतिथि प्रेम

'अतिथिदेवो भव' की भावना से ईश्वर का रोम रोम अनुप्राणित

CC-0 In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
था। बाहर के नगर गाँव से श्रान्त क्लान्त मुसाफिरों के लिए इनकी हवेली निःशुल्क धर्मशाला थी। सुदूर स्थानों से जो घोड़े आदि सवारी के साथ आते थे। इस हवेली में घोड़ों आदि के लिए भी भोजन चारा इत्यादि हर प्रकार की समुचित व्यवस्था थी।

सेवाभाव, शिक्षा व आर्य संस्कृति का प्रचार एवं शुद्धि आन्दोलन

'सेवाधर्मः परमगहनो योगिनामप्यगम्यः'

दीन हीन अस्पृश्य समझे जाने वाले तथा निर्धन लोगों के प्रति ईश्वर के हृदय में सेवा की उत्कट भावना थी। उस समय भी ऐसे लोगों के प्रति उच्च जाति के लोगों में घृणा व पक्षपात की भावना थी। वे स्वयं भी ऐसे लोगों से किसी भी प्रकार व्यवहार नहीं करते थे। और उनसे सम्बन्ध रखने वाले लोगों का उच्चवर्ग के लोगों द्वारा बिरादरी से बहिष्कार कर दिया जाता था। ऐसी दुरवस्था को देखकर ईश्वर व्यथित और उद्वेलित हो जाते थे। ईश्वर इन लोगों के मध्य जाकर उनके कष्टों को दूर करने का प्रयत्न करते थे। ईश्वर के मित्रों में निम्नवर्ग के तथा निर्धन मित्र अधिक थे। जिनमें मक्खनलाल से इनका प्रगाढ़ सम्बन्ध था। ईश्वर इनके दुखनिवारण का स्थायी समाधान चाहते थे। वे भली भान्ति जानते थे कि इनके शोषण, अन्याय आदि दुखों का सर्वप्रमुख कारण इनकी अशिक्षा है, जिससे ये कर्त्तव्याकर्त्तव्य, उचित अनुचित का विवेक नहीं कर पाते हैं और दूसरों के द्वारा सरलता से मूर्ख बना लिये जाने पर कष्ट पाते हैं। स्थिति इससे भी कहीं अधिक शोचनीय थी। उच्चवर्ग द्वारा निम्नवर्ग तथा निर्धन जनों के प्रति उपेक्षा, तिरस्कार, अन्याय, घृणा तथा पक्षपात का दूरँगामी कुपरिणाम ईश्वरदास से छिपा न था। ईसाई व मुसलमान इस प्रतिकूल स्थिति का भरपूर लाभ उठा रहे थे वे ऐसे

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
उपेक्षित लोगों को शिक्षा, धन व रोजगार का लोभ देकर उन्हें अपने मत में सम्मिलित कर रहे थे। ईश्वरदास ने ऐसे लोगों के मध्य शिक्षाभियान चलाया। इन्होंने नमला तथा मनेला जैसे ग्रामों में आर्यसमाजों की स्थापना की और आर्य पाठशालाएँ खोली। निःशुल्क अध्यापन की व्यवस्था की। अध्यापकों को अपनी तरफ से ही वेतन देते थे। वैदिक धर्म की मान्यताओं का प्रचार किया। सन्ध्या हवन का प्रशिक्षण दिया। सन्ध्या हवन की पुस्तकें सर्वत्र वितरित की। हिन्दूधर्म से विमुख हुए लोगों को जागरूक किया। उन्हें शुद्ध कर पुनः हिन्दू बनाया। ऐसे सभी लोगों को आर्य अथवा महाशय नाम दिया।

बालविवाह का विरोध

उस समय बालविवाह की कुरीति भयँकर रूप ले रही थी। अल्पायु में तो विवाह होते ही थे। गर्भावस्था में भी पल रहे शिशुओं बल्कि जन्म से भी पूर्व विवाह सम्बन्ध कर दिए जाते थे। इस प्रकार एक तो अनमेल विवाह में गृहस्थाश्रम दुखदायी होता था दूसरा दुर्देव से बालक के मर जाने पर अल्पायु में ही बालिका आजीवन वैधव्य का कलंक झेलती थी। जो कली अभी खिली ही नहीं व समय से पूर्व ही बिखर जाती थी। ईश्वरदास ने इसका घोर विरोध किया तथा पुनर्विवाह का भी प्रचार किया।

माता मन्ना देवी का स्वर्गवास

ईश्वरदास की माता मन्नादेवी भी प्रभुभक्त थी। दैनिक जीवन में वे प्रातः सायं दोनों समय प्राणायाम सन्ध्या उपासना आदि करने के पश्चात् ही नाश्ता ग्रहण करती थी। शीत ऋतु थी। ईश्वरदास प्रातःकालीन नित्यकर्म से निवृत्त होकर प्रातराश ग्रहण कर भ्रोट गाँव की ओर चले गये। मन्नादेवी ने गर्म पानी से स्नान किया।

CC-0 In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इधर चूल्हे में आग जल रही थी। वे पालथी मार कर सन्ध्या करने बैठ गई। गायत्री मन्त्र का उच्चारण करने के पश्चात् प्राणायाम किया। जैसे ही प्राणों को भरा, उसके पश्चात् श्वास बाहर नहीं लौटे। उन्होंने अपनी ज्येष्ठ सुपुत्री सुदर्शन रानी जिसे ज्वर था वह सामने ही बिस्तर पर थी उसे कुछ संकेत किया। सभी घर में इकट्ठे होकर मन्ना देवी के पास आए। उन्हें उठाकर बिस्तर पर लिटा दिया गया और डाक्टर को बुलाया गया। शरीर सुन्न पड़ता जा रहा था। डाक्टर ने इन्जैक्शन लगाया। भ्रोट में किसी को भेजकर ईश्वर को बुलाने भेजा। उन के हाथ पैरों की मालिश की गई। भ्रोट ग्राम पास नहीं था। ईश्वरदास के आने से पूर्व ही मन्ना देवी ने आँखे बन्द कर ली और सांयकाल ईश्वरदास के आगमन के पश्चात ही प्राण त्याग दिए। उस समय सत्रह दिन के पश्चात् 'उठाला' करने की और एक वर्ष तक मातम मनाने की परम्परा थी पर ईश्वरदास ने तेरह दिन के पश्चात् किसी को भी मातम नहीं मनाने दिया।

अनन्तराम की दर्दनाक मृत्यु

लगभग सन् 1945 की यह घटना है। ईश्वरदास जी के साले अनन्तराम की पत्नी का अकस्मात् देहावसान हो गया। वह राजौरी के पास ढांगरी गाँव में रहता था। ईश्वरदास के बार–बार आग्रह करने पर कुछ दिन पश्चात् वह राजौरी आ गया। बाह्य रूप से ऐसा प्रतीत हो रहा था कि अनन्तराम का जीवन यहाँ आकर सामान्य हो गया है किन्तु ऐसा न था। राजौरी में अनन्तराम ने एक दुकान खोल ली थी। एक रात अनन्तराम अपनी दुकान पर सोया हुआ था कि अचानक वहाँ कुछ खूखार गुण्डे आ धमके। उन्होंने अनन्तराम को जबर्दस्ती शराब पिला दी और उसे लूट लिया। तदनन्तर वे निर्दयी गुण्डे उसे खाट पर बाँधकर नदी के पास स्थित मन्दिर के पास ले गये और

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
उसके पेट में छुरा घोंप कर बड़ी बेदर्दी से उस की जीवन लीला का अन्त कर दिया। उस समय वहाँ कुछ नागे साधु भैरव की पूजा में लगे हुए थे। अनन्तराम की चीख पुकार सुन कर आए और अनन्तराम को बचाने का प्रयास भी किया किन्तु उन्हें भी धमका कर भगा दिया। बाद में वे गुण्डे अनन्तराम की मृत देह को पुनः खाट से बाँध कर उसी की दुकान पर छोड़ गये। नदी से लेकर दुकान तक का मार्ग अनन्तराम के रक्त से रञ्जित हो गया। दुकान के समीप हलवाईयों के समक्ष यह हत्याकाण्ड हुआ किन्तु सभी ने भय के कारण चुप्पी साधी। ईश्वरदास ने अदालत में गुहार लगाई किन्तु गवाही देने कोई भी नहीं आया जैसे कैसे तीन आदमी पकड़े गये किन्तु वे भी रिश्वत देकर छूट गये। ईश्वरदास निराश नहीं हुए क्योंकि 'न्यायात्पथः प्रविचलन्ति पद न धीराः'। ईश्वर अब जम्मू आए। जम्मू में तब राजा हरिसिंह का राज्य था। राजा हरिसिंह अपनी बग्घी से कहीं जा रहे थे तो मध्य में जाकर ईश्वर ने उनकी गाड़ी रोक कर सारी व्यथा कथा उनके समक्ष रखी तथा न्याय की गुहार लगाई। यह ईश्वरदास का ही प्रभाव था कि राजा हरिसिंह ने ईश्वर की बात को बड़े ध्यान से सुना और इसे गम्भीरता से लिया। राजा हरिसिंह ने पुलिस विभाग तथा आफीसर्स के तबादले करवा दिए। कातिलों में से एक को सरकारी गवाह बनाया गया। शेष को 14 वर्ष की सजा हुई। काले पानी भेजने का आदेश दिया गया।

राजौरी का रक्तरञ्जित इतिहास

स्वतन्त्रता सेनानियों के अविस्मरणीय त्याग व असंख्य कुर्बानियों के पश्चात् भारत को अन्ततः 15 अगस्त सन् 1947 को चिरप्रतीक्षित स्वतन्त्रता प्राप्त हुई। सम्पूर्ण राष्ट्र में हर्षोल्लास की लहर उमड़ पड़ी। शहनाइयाँ बज उठी। शोभायात्राँए निकाली गई। एक तरफ आजादी

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
का सूरज चमका तो दूसरी ओर देशविभाजन की घोषणा हुई। इस घोषणा के साथ ही जम्मू काश्मीर के नगर ग्रामों में बीभत्स खूनी खेल खेला जाने लगा। राजौरी, मीरपुर, कोटली, भिम्बर, नौशहरा मुजफ्फराबाद उड़ी, बारामूला, पुंछ, आदि नगरों में लगभग छः सात माह तक सर्वत्र पाकिस्तानी दरिन्दों ने जो जुल्म ढाये, उन्हें पढ़ कर या सुन कर रोंगटे खड़े जो जाते हैं। पाषाण हृदय भी विगलित हो उठते हैं। भारत विभक्त हुआ। सहस्रशः हिन्दू मारे गये। असंख्य स्त्रियों ने जौहर किया। अगणित हिन्दुओं ने दर दर की ठोकरें खाई। अरबों की सम्पत्ति नष्ट हो गई। लाखों सैनिकों ने उत्सर्ग किया। सुहागिनों ने वैधव्य का चोला धारण किया तो कई माताओं की गोद सूनी हो गई।

बलराज मधोक ने 'कश्मीर जीत में हार' नामक पुस्तक में लिखा–

"जब कश्मीर घाटी पर पाकिस्तान ने आक्रमण किया तब कुछ सैनिक उड़ी से पंचाल पर्वत पर चढ़ गये और हाजीपीर तथा गुलमर्ग होते हुए बनिहाल की सुरंग, जिसमें से होकर जम्मू–श्रीनगर सड़क गुजरती है, की ओर बढ़ने लगे। उनकी योजना जम्मू–श्रीनगर सड़क को बन्द करने की थी ताकि कश्मीर से सैनिक सहायता न पहुँच सके। यह मार्ग पंचाल पर्वत–शृंखला के उच्चतम भाग के साथ–साथ चलता था, जिसमें गुलमर्ग और नन्दीमर्ग जैसे कई बड़े मैदान भी पड़ते हैं। घाटी से आक्रान्ताओं के खदेड़े जाने और उड़ी पर भी भारतीय सेना का अधिकार हो जाने से उनके लिए उड़ी के रास्ते वापस जाना कठिन हो गया। बनिहाल सुरंग की सुरक्षा का भी कड़ा प्रबन्ध कर दिया गया था। इसलिए उनमें से कुछ गुलमर्ग से पुंछ की ओर उतरने लगे और कुछ नन्दीमर्ग से राजौरी की ओर। वे

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सशस्त्र तो थे ही, रास्ते में उन्होंने स्थानीय मुसलमानों की सहायता भी प्राप्त की। इस प्रकार राजौरी पर उत्तर से संकट आ गया। पहले उन्होंने थन्ना की मण्डी को लूटा और जलाया। वहाँ से बहुत से हिन्दू पहले ही राजौरी नगर में चले गए थे। थन्ना से वे राजौरी की ओर बढ़ने लगे।

राजौरी के आसपास के मुसलमान भी पाकिस्तान प्रचार और लूटमार के लालच में राजौरी को घेरने की योजना बना रहे थे। नन्दीमर्ग से सशस्त्र पाकिस्तानियों के आने से उनके हौसले और बढ़ गए। इस प्रकार राजौरी का यह प्राचीन नगर पाकिस्तानियों और उनके स्थानीय सहायकों के घेरे में आ गया।

राजौरी में उस समय 7–8 हज़ार के लगभग हिन्दू थे। वहाँ संघ की अच्छी शाखा थी और निष्ठावान् स्वयंसेवकों की एक अच्छी टोली थी। एक छोटा–सा पुलिस का दल भी वहाँ था परन्तु वहाँ सेना नाममात्र को थी। पाकिस्तान की सीमा से दूर होने के कारण उस पर सीधे पाकिस्तान की ओर से खतरे की सम्भावना कम थी। कश्मीर की घाटी की ओर से पाकिस्तानी आक्रान्ता वहाँ आ धमकेंगे इसकी कल्पना स्थानीय लोगों ने नहीं की थी।

ज्यों–ज्यों शहर का घेरा छोटा होने लगा और पाकिस्तानियों की गोलियाँ नगर में चोट करने लगी, त्यों–त्यों लोगों में घबराहट बढ़ने लगी। उन्होंने जम्मू से सम्पर्क कर वहाँ से सहायता मँगवाने का भरसक प्रयत्न किया परन्तु शेख अब्दुल्ला के रवैये और यातायात तथा संचार–साधनों के अभाव में किसी प्रकार की सहायता न पहुँच सकी।"

CC-0 In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पिशोरी लाल (जन्जोटिया) ने राजौरी नगर का खूनी इतिहास पुस्तक में लिखा–

"ग्राम ग्राम से हिन्दू लोगों का भाग कर नगर में आना शुरू हुआ। नगर का मुसलमान भाग कर साथ वाले जंगलों में और गांवों में चला गया। इसी बीच में बाहर के हिन्दू को लूट लिया और मार दिया, नगर में मुसलमान और हिन्दू जिनको पंच कहा जाता था, मिल कर एक अमन कमेटी बनाई गई। जिसमें यह तय पाया कि अगर बाहिर से हिन्दू या मूसलमानों की तरफ से हमला हुआ तो दोनों फिर से मिल कर उसका मुकाबला करें। लेकिन अंत में मुसलमानों में उसके विरोध किया पूरी रजौरी तहसील में नगर की रक्षा के लिए 'मुकामी पुलीस स्टेशन और 19 मिलिट्री के untrained सैनिक अपने एक नाईक के साथ थे। जिनकी Duty खजाने पर थी। थाकने में पाँच पेटी अमीनेशन था जिसके लिए नगर के R.S.S. के worker ने वह अमीनेशन देने के लिए मांग की। जिससे S.H.O. ने इंकार कर दिया। फिर यू और हालात बिगड़े तो महाराजा हरिसिंह ने एक छोटी गाड़ी में चालीस Retired सैनिक राजौरी भेजे इसी बीच में कोई हिन्दू नगर के बाहर मुसलमानों को मिल जाता। तो वह उसे कत्ल कर देते और भी कई किस्म की धमकियां मिलने लगी।

जब 20–25 की संख्या में शस्त्रास्त्रों से लैस पाकिस्तानी दरिन्दों ने राजौरी के गाँव गाँव में हिन्दुओं पर भीषण अत्याचार ढाने आरम्भ किए तब उन गाँवों से जनता राजौरी में एकत्रित हो गई। इनमें महिलाओं तथा बच्चों की संख्या अधिक थी। सब मिला कर उस समय कुल संख्या 40 हज़ार के लगभग बताई जाती है। राजौरी निवासियों ने उन्हें काफी दिनों तक रोकने का प्रयत्न किया पर

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शस्त्रास्त्रों से लैस पूर्णतः प्रशिक्षित पाकिस्तानियों के समक्ष राजौरीवासी कितने समय तक आत्मरक्षा कर सकते थे?"

चारों तरफ अफरातफरी का माहौल था। जान बचाने के लिए कुछ लोग नदियों में जा छिपे तो कुछ घनी कंटीली झाड़ियों में। कुछ लोग नदियों के मार्ग से तो कुछ जंगलों के मार्ग से भागने का प्रयास करने लगे।

2004 विक्रमी सम्वत् की कार्त्तिक मास की 25 वीं तिथि को प्रातःकालीन सूर्य घोर निराशामयी काली रात लाने के लिए उदित हुआ। पाकिस्तानी दरिन्दों की नगर को शीघ्रातिशीघ्र खाली करने की लगातार चेतावनी दी जा रही थी। औरतों तथा बेटियों को (कहीं कहीं उनके नामों का जिक्र किया जाता था) अपने हवाले करने के आदेश के पर्चे भी गिराये जा रहे थे। दुश्मनों के बन्दूकों से गोलियाँ निरन्तर चल रही थीं। राजौरी के बहादुर लोग अपनी अपनी राइफल व बन्दूकें लेकर यथाशक्ति उनकी गोलियों का उत्तर दे रहे थे। राइफल चलाने में स्वामी शान्तानन्द जी भी थे। वे वहीं शहीद हो गये। तहसील में बहुत अधिक संख्या में लोगों के इकट्ठे होने व दहशत का माहौल होने के कारण सभी प्यास से तड़प रहे थे। पाकिस्तानी बहुत पास आ चुके थे।

सूर्य अब थककर अस्ताचल में निमग्न होना चाहता था। राजौरीवासियों के लिए भयानक निर्णय की घड़ी थी। महिलाओं के समक्ष अपने सतीत्व तथा धर्म की रक्षा का प्रश्न था। पाकिस्तानी दरिन्दों का उद्देश्य पुरूषों की निर्मम हत्या तथा महिलाओं के सतीत्व का नाश करना था। मीरा जैसी प्रेम दीवानी व गुलाब के समान कोमल मन की नारियों ने पल भर में सूर्य के समान तेज को धारण

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करते हुए कठोर निर्णय लिया और अपने सतीत्व की रक्षा हेतु अपने आप को स्वाहुत कर दिया। किन्हीं महिलाओं ने मिष्ठान्न की भान्ति प्रसन्नता से विषपान किया तो कई नारियों ने पुरूषों के हाथों से बलात् राइफल या बन्दूक लेकर अपने आपको निशाना बना लिया। कई ललनाओं ने बेटों तथा पतियों से तलवार या कुल्हाड़ी से अपनी इहलीला समाप्त करने की गुहार लगाई। प्रत्यक्षदर्शी उन दर्दनाक क्षणों का स्मरण करते हुए बताते हैं कि तलवार व कुल्हाड़ी के तेजधार न होने के कारण जब एक वार से उन माँ बहिनों के प्राण नहीं निकलते थे तो वे दृढ़संकल्पी पुकार पुकार कर कहती थी कि "मेरे बेटे। मैं अभी जिन्दा हूँ और तेज प्रहार करो ताकि मैं मर कर इन दरिन्दों से बच सकूं"। तहसील में चारों तरफ रक्त का सैलाब बह रहा था। शत्रु के गोले अभी भी बरस रहे थे। बची हुई लगभग तीन हज़ार देवियों ने राजस्थान की वर्षों पूर्व की रानी पदमावती की जौहर गाथा का स्मरण कर उनका अनुसरण करने का निश्चय किया। लकड़ियाँ, छतों के शहतीर, मकानों के द्वार आदि एकत्रित कर सर्वप्रथम प्रभुभक्ति के गीत गए। चिता बनाई आग जलाई और जलती चिता में कूद कर वे भस्म हो गई। खूंखार पाकिस्तानी जब तक इनके पास पहुँचते। ये अपने शरीर को राख की ढेरियों में परिवर्त्तित कर चुकी थीं। धन्य हो भारत की देवि! धन्य हो राजौरी की नारि!

ईश्वरदास के परिवार का कांटो भरा सफर

पाकिस्तानी आक्रमण के समय अपनी चल अचल सम्पत्ति की परवाह न करते हुए जैसे कैसे राजौरीवासी राजौरी से निकल पड़े। ईश्वरदास भी अपनी पत्नी तारावती, बेटा सतीश (12 वर्ष) विवाहिता पुत्री सुदर्शन (14 वर्ष), पुत्री विनोद (9 वर्ष), पुत्री शशी (2 वर्ष) तथा सुदर्शन जी की ननद सन्तोष को साथ लेकर रात्रि को निकल पड़े।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खाण्डल दरिया के मार्ग से ही छुपते छुपाते चलते रहे। राजौरी से भागते हुए पहले शशि, तत्पश्चात् सतीश मार्ग में ही बिछड़ गये। सर्वत्र मुस्लिम हिन्दुओं की ताक में थे। इस परिवार के साथ कई और परिवार भी भाग रहे थे। उनमें एक किच्छो मासी के नाम से प्रसिद्ध महिला का छः वर्षीय शिशु रात भर भूख से परेशान प्रातः जोर जोर से रोने लगा तो मुसलमानों को इन सभी के वहाँ होने का पता चल गया जिससे लम्बी भूरे रंग की दाढ़ी वाले बकरवाल ने (पहाड़ी मुस्लिम) ने आकर इन सब को पकड़ लिया। उस समय सभी मुसलमान व बच्चे बच्चे हिन्दुओं की जानी दुश्मन बने हुये थे। सभी के हाथों में कुल्हाड़ियाँ आदि शस्त्र होते थे। राजौरी से भागते समय हड़बड़ाहट में थोड़े बहुत रूपये, पैसे, अथवा हल्के फुल्के जेवर आदि जो कुछ भी मिला ईश्वर ने अपने वस्त्रों की जेबों में डाल दिया था। अब उस बकरवाल ने सब कुछ लूट लिया। ईश्वर के पहने हुए सभी वस्त्र भी छीन लिए और उन्हें लगभग निर्वस्त्र सा कर दिया। महिलाओं के भी ऊपरी दुपट्टे आदि झपट लिये। यह गाँव ढांगरी था। वहाँ से इसी बकरवाल के कहने पर ये परिवार 'दलोड़ी' नाले के पास हिन्दुओं की आबादी वाले नरसिंहपुरा गाँव में पहुँचा। वहाँ भी हिन्दुओं ने मुसलमानों के आतंक के कारण इन्हें सहायता या शरण देने से इन्कार कर दिया। अन्त में किसी ब्राह्मण परिवार में चार पाँच घण्टा रुके। भूख प्यास से व्याकुल उन सब की स्थिति दयनीय बनी हुई थी। रात भर पानी में चलने के कारण ईश्वरदास की पत्नी की टांगे सूज चुकी थी। ऐसे समय उस परिवार ने इनकी बहुत सहायता की। भोजन कराया और टांगों को सेक करने के लिए पानी उबाल कर दिया। अकस्मात् ईश्वरदास के थकेहारे मस्तिष्क में एक स्मृति कौंधी। उन्हें अपने एक मित्र लहनूराम का स्मरण आया जो यहीं कहीं रहता था। ढूंढते–ढूंढते लहनूराम का घर मिल गया। भाग्य से

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लहनूराम घर पर ही मिल गया। जब कि वह सेना में था और बहुत कम छुट्टी मिलती थी। वह संयोग से छुट्टी पर घर आया हुआ था। इस घोर आपत्ति में ईश्वर के लिए लहनूराम का मिलना किसी देवता से मिलना था। हालांकि लहनूराम स्वयं भी मुसलमानों से भयभीत था। उसने इन्हें भरपेट भोजन करवाया और वस्त्र भी दिए। रात को सोने के लिए मोटा और बड़ा कम्बल भी दिया। रात्रि को लहनूराम इन्हें जंगल में छोड़ देता था। वह स्वयं भी मुसलमानों के डर से रात को अपने घर नहीं सोता था। जंगल में खूंखार पशु घूमते थे और बकरवालों का भी भय होता था अतः जहाँ पर इकट्ठे सात आठ वृक्ष गोलाकार में होते थे वहाँ चारों तरफ कंटीली झाड़ियां लगा कर उनके बीच में जैसे कैसे ये सभी नींद लेने का प्रयास करते थे। लहनूराम के घर से छुप कर रोटियाँ बना कर लाते और लस्सी के साथ गुफाकार स्थान में ही बैठकर खाते थे। अभी बकरवाल और उनके बच्चे कुल्हाड़ी व तेवरे (कुल्हाड़ी जैसा तेज धार वाला हथियार) लिए टोली बनाकर हिन्दुओं को ढूँढते रहते थे। आवाज़ लगाते थे ताकि ये बाहर आएँ और हम इन्हें मारे। दिन का भी एक एक पल इनके लिए आतंक भरा था। लहनूराम के घर ये लगभग एक मास तक रहे। तदनन्तर यह परिवार पुनः आगे बढ़ने लगा। भटकते भटकते जहाँ कहीं इन्हें कोई गाँव या बस्ती दिखाई देती और जहाँ कहीं इन्हें खाद्य पदार्थों की प्राप्ति की आशा होती वहीं ये शेर चीते आदि की भयानक गुफाओं में उन्हें कंटीली झाड़ियों से ढक कर दिन व रात्रि व्यतीत करते थे। जब अन्धेरा होता कहीं से रोटी, कहीं से दाल मक्की गेहूँ दाने या मीठा कद्दू लाकर चूल्हा बनाकर कच्चा पक्का खाना बनाकर अपनी क्षुधा को शान्त करते थे।

वहाँ से यह परिवार चेतराम के यहाँ पहुँचा। चेतराम का छोटा

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
भाई कभी ईश्वरदास के घर में (राजौरी) तो कभी आर्यसमाज में रहा करता था। ईश्वर उसे पढ़ाया करते थे। चेतराम ने भी इसे सहयोग दिया। चेतराम ने इन्हें एक ऐसे जंगल में रहने का स्थान बताया जहाँ गुफाकार जैसा स्थान था जहाँ बस मुश्किल से बैठा ही जा सकता था। रात को घर जंगल खेतों से दूर सुरक्षित स्थान जिन्हें वहाँ की भाषा में ढाँव कहा जाता था, वहाँ छोड़ आता था और इन्हें पाँच छः दिन रोटियाँ देता रहा।

चेतराम के घर में रहने के पश्चात् उसके घर से ऊपर एक और मुस्लिम परिवार में इस परिवार ने शरण ली उन्होंने इन्हें रहने का स्थान तो दिया पर गायों अथवा बकरियों के बाड़े में स्थान मिला।

पौष मास आरम्भ हो चुका था। मजबूत पक्की छत वाले मकानों के भीतर मोटी रजाइयाँ ओढ़े स्वस्थ शरीर वाले लोगों को भी सुन्न कर देने वाली शीतऋतु अपना विस्तार करती जा रही थी पर ईश्वर के परिवार के पास इस कम्पकंपाती ठण्ड में न तो तन ढकने को पर्याप्त वस्त्र थे और न ही कोई स्थायी ठौर या छत ही। जहाँ कहीं पशुओं के बाड़े में शरण मिलती तो वहाँ जहरीले कीड़े (जिन्हें वहाँ की भाषा में मोमनू कहा जाता है) उन्हें रात भर डँसते रहते थे।

चलते–चलते ये एक राजपूतों की बस्ती में जा पहुँचे, उस गाँव का नाम था – नमला। उस बस्ती मे़ं केवल चार पाँच ही घर थे। वहाँ बेलीराम नामक राजपूत की इस परिवार पर विशेष कृपा रही। उसने कुछ दिन अपने पास बड़े प्रेम से रखा। सोने के लिए इन्हें वस्त्र, भोजन के लिए आटा दिया। जिससे ये लोग रोटियाँ बनाकर स्वयं भी खाते और बेलीराम को भी बनाकर देते थे। बेलीराम स्वयं भी अपने घर में नहीं सोता था। बेलीराम इस परिवार को अपनी जगह

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
से दूर पहाड़ी के नीचे किसी ओर सुरक्षित मकान में ले जाता था। लगभग 15–20 दिन वहीं रहकर ये परिवार आगे बढ़ा।

आगे बढ़ते हुए एक मुस्लिम परिवार ने इन्हें शरण दी। उस परिवार का मुखिया वृद्ध व्यक्ति था किन्तु वह मानवीय गुणों से युक्त था। ईश्वरदास के परिवार की दुर्दशा देखकर उसके हृदय में दया भावना जागृत हुई। उसने इस परिवार को हर प्रकार का सहयोग दिया। उसने इन्हें एक कमरे के कोने में रहने को कुछ स्थान दे दिया। इन्होंने पतीला तवा आदि कुछ बर्तनों का प्रबन्ध किया। बिछाने के लिए पलाली मिली। चूल्हा बनाया और जीवन निर्वाह के अन्य साधन ढूँढे। इन दिनों फसलें कट रही थी। कटाई होती तो नीचे बिखरे हुए दानों को इकट्ठा करके ये उन्हें घर्राट (पानी में चलने वाली अनाज पीसने की चक्की) में ले जाकर पिसवाते और परिवार के भोजन का प्रबन्ध करते। कटाई के समय भी ईश्वर कार्य करवाते तो वहाँ से भी इन्हें कुछ अन्न प्राप्त हो जाता था। गाँव में यदा कदा भण्डारा होता था। ईश्वरदास को भी निमन्त्रण दिया जाता था। भण्डारे में गौ मांस व रोटियाँ परोसी जाती थी। ईश्वरदास यह कहते हुए कि बच्चे भूखे हैं उन्हें जाकर खिलाऊँगा वे भोजन घर लाते। रात को गौमास भूमि में गाढ़ देते और रोटियाँ मिल कर खाते थे।

ईश्वर ओर उनके परिवार के सदस्यों को नहाये धोये हुए महीनों बीत चुके थे। सभी के कपड़ों व सिर में बड़ी बड़ी जुएँ पड़ गई थी। वस्त्रों में भारी मैल जमा हो गई थी अतः उस घर में सभी ने वस्त्र धोने तथा नहाने का निश्चय किया। कहीं से इन्हें मिट्टी का तसला मिला। लकड़िया बटोर कर चूल्हा बनाया। पानी डाल उबाला देकर वस्त्र साफ किए।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काल की गति बड़ी विचित्र है। निराश्रित, दीन हीन दुःखी जनों को कभी दोनों हाथों से भोजन, धन, अन्न व आश्रय बाँटने वाले ईश्वर के पास आज कुछ भी न था। उसका परिवार भूख से बेहाल दर दर की ठोकरें खा रहा था। इस परिवार ने ऐसे भी कई दुर्दिन देखे जब कुछ भी खाने को न होता था। भूख की तीव्र ज्वाला को शान्त करने के लिए इन्हें वृक्षों के पत्ते तथा मिट्टी खाने को बाध्य होना पड़ता था। इनकी स्थिति इतनी शोचनीय हो गई थी कि आत्मरक्षा व जीवन धारण करने हेतु हिन्दू रूप छिपा कर मुसलमान बनने का भी इन्हें ढोंग करना पड़ा। ईश्वर अरबी फारसी के विद्वान् थे। जिज्ञासु प्रवृत्ति के कारण ये रईस मुसलमान व मौलवियों को सम्मानपूर्वक घर में निमन्त्रित करते थे। सभा होती थी। खुदा, अल्लाह, ईश्वर आत्मा जैसे विषयों पर वादविवाद हुआ करते थे। इसलिए ईश्वर को मुसलमानों के मत के सम्बन्ध में बहुत कुछ ज्ञात था। उनकी नमाज भी उन्हें कण्ठस्थ तथा ज्ञात थी। ईश्वर ने अपने परिवार को पाँच पाँच कलमें स्मरण करा दी। कलमों का अर्थ भी हृदयंगम करवा दिया और सभी के नाम मुसलमानों के नाम पर रख दिए। समय उपस्थित होने पर ये कीर्त्तन की भान्ति कलमों को गा गा कर नमाज पढ़ते थे।

कभी कभी इस परिवार की दुरवस्था से रूद्र देवता भी द्रवित हो जाते थे और अपना रौद्ररूप त्याग कर दूसरों के हृदयों में इनके प्रति करूणा भर देते थे। जिनके घर में यह परिवार रहता था उस मुखिया का बेटा तावलदीन इन्हें अपने घर समरोटगाला गाँव ले गया, वहाँ उसकी पत्नी व बच्चे भी थे। वह स्वयं भी अध्यापक था, उसने अपनी पत्नी को कुरान शरीफ पढ़ाने के लिए ईश्वरदास को नियुक्त किया। उन्होंने इनके लिए बिस्तर, खाट, चूल्हें, हांडी आदि की व्यवस्था कर दी। वहाँ जहाँ गेहूँ की फसल बोई हुई थी, उनके मध्य

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
साग के पत्ते चुन कर लाते उनमें नमक डालकर मांगे हुए आटे की रोटियाँ बनाकर उनके साथ खाते थे। पास ही एक मन्दिर था जिसमें दो जोगी (गृहस्थी) थे। जब मध्य मध्य में हमले होते थे तो यह परिवार रात को मन्दिर में शयन करता था। वहाँ उस समय कुछ ऐसे वृक्ष थे जिनकी पत्तियां भेड़ बकरियां खाया करती हैं, उनमें झाग हुआ करती है, उस समय उन पेड़ों को 'घमन' कहा जाता था, उन पत्तों की झाग से इस परिवार के लोग अपने सिर के बाल आदि धोते थे।

सतीश की मृत्यु की दास्ताँ

कार्त्तिक के महीने इस परिवार ने अपना घर त्यागा था अब बेघर होकर ठोकरें खाते हुए चार माह हो चुके थे। चैत्र मास आरम्भ हो गया था। एक दिन जब ईश्वरदास मांगा हुआ अनाज घाट पर पिसवाने गये तो वहाँ एक कश्मीरी मुसलमान मिला, उसके पास ईश्वरदास की ज़मीन थी। उसने झट ईश्वरदास को पहचान लिया कभी सुसमृद्ध जीवन व्यतीत करने वाले ईश्वरदास को आज इस फटेहाल स्थिति में देखकर उसकी आँखों में आँसू आ गये। उसने इनकी दुखभरी गाथा सुनी उसने ईश्वरदास को उनके बेटे सतीश की दर्दनाक मौत की दास्ताँ सुनाई कि मुसलमानों ने पटवारी इन्द्रजीत की बेटी सत्या (जो अपनी पाँच बहिनों में सबसे सुन्दर थी) तथा ईश्वर के पुत्र सतीश जो राजौरी से भागते हुए अन्धेरे में कहीं गुम़ हो गया था, अपने कैद में रखा हुआ था। उन्हें एक प्रकार से अपने घर में शरण दी हुई थी। किन्तु सत्या के प्रति उनकी दृष्टि ठीक नहीं थी। सत्या वहाँ से मुक्ति चाहती थी, सत्या को तो उन्होंने नहीं छोड़ा किन्तु सतीश को अपने एक व्यक्ति के साथ कैम्प के लिए भेज दिया। जाते जाते उस दुखी कन्या ने अपनी दर्दभरी कहानी से

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
युक्त एक पत्र छुपाकर सतीश को पकड़ा दिया ताकि उसके परिवार वाले यह पत्र पढ़कर उसकी मुक्ति के लिए प्रयास कर सकें। मार्ग में जाते जाते उस व्यक्ति को कुछ सन्देह हुआ उसने सतीश से पूछा कि उस लड़की ने तुम से क्या कहा? सतीश ने कुछ भी बताने से इन्कार कर दिया। इन्कार करने पर उस खूँखार व्यक्ति ने सतीश को नंगा किया और उस कुल्हाड़ी से निर्दयता पूर्वक मार कर उसका अन्त कर दिया। बाद में मालुम हुआ कि उसके टांगों के ऊपर सोने के कंगन व वह पत्र बन्धा हुआ था। इस प्रकार सतीश ने उस कन्या को बचाने के लिए अपने आप को कुर्बान कर दिया ?

ईश्वरदास को तो यह आस थी कि मेरा पुत्र सतीश भले ही गुम हो गया है किन्तु जहाँ कहीं होगा जीवित होगा पर यह हृदयविदारक घटना सुनकर ईश्वरदास के हृदय में गहरा आघात पहुँचा। ईश्वरदास दृढ़हृदयी थे वे तो संन्यास के मार्ग का अवलम्बन करना चाहते थे। बड़े से बड़ा संकट भी उन्हें विचलित नहीं कर सकता था किन्तु पुत्र की इस मौत ने उन्हें भीतर से झकझोर कर रख दिया। कई दिनों तक वे इस दारूण दुख को न भुला पाये। दिन तो जैसे कैसे व्यतीत हो जाता था किन्तु रात्रि होते ही उन्मत्त के समान प्रलाप करते रहते थे – "ओ मेरे पुत्तर सतीश! मैं तो तुझे गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार भेजने वाला था पर परिवारवारों ने ऐसा करने न दिया। आज यदि तू वहाँ होता तो जीवित होता। ....तुझे मैं अपनी पीठ पर सुलाता था। मैने तो सोचा था कि मेरी मृत्यु के पश्चात् तू समस्त उत्तरदायित्व सम्भालेगा। मेरी उत्तम कुल परम्पराओं को आगे बढ़ायेगा। ....मैं जीवित हूँ और तू मुझे छोड़कर इतनी बुरी मौत को गले लगा गया। हाय! मेरा जीवन किस काम का ?"

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिस कश्मीरी मुसलमान् ने सतीश की कथा सुनाई उस मुसलमान् ने राजौरी जाकर वहाँ शेष बचे हुए हिन्दुओं की व्यवस्था हो रही थी। कैम्प लगाये जा रहे थे वहाँ ईश्वरदास के परिवार की दुर्दशा के विषय में बताया।

मिंर्जा मुहम्मद सेन जुराल ने राजौरी जिले का नेतृत्व सम्भाल लिया। कैम्प बना कर शरणार्थी के रूप में उजड़े हुए हिन्दुओं को रखा गया। उनकी सुरक्षा, भोजन पानी आदि व्यवस्था की गई। ताग़वलद्दीन के घर में रहते हुए ईश्वर को सन्देशा मिला कि मिर्जा मुहम्मद सेन जुराल ने उसे सपरिवार बुलाया है। ये सुन कर ईश्वरदास अपनी पत्नी दो पुत्रियां (इनमें एक सबसे छोटी पुत्री शशि राजौरी से भागते हुए इनसे बिछुड चुकी थी) बड़ी बेटी की ननद सन्तोष को साथ लेकर राजौरी की ओर चल पड़े। रास्ते में एक पौंठ गाँव पड़ता था। रात्रि वहीं विश्राम किया और प्रातः चलकर राजौरी पहुँचे। गुर्दन में भी कैम्प था। वहाँ सन्तोष के अपने परिवार के लोग थे अतः सन्तोष को वही छोड़ दिया। स्वयं ईश्वर राजौरी आ गये। मिर्जा मुहम्मद सेन के ईश्वर के साथ अच्छे सम्बन्ध थे। वह भ्रोट गाँव का ही निवासी था। उसने इनकी व्यवस्था अपने ही रिश्तेदार मुंशीजमालद्दीन के घर पर कर दी (यह घर आजकल जज्जी के पास रघुवीर का है जो आर्यसमाज के सामने लोहे की वस्तुओं की दुकान चला रहा है। मुसलमानों ने इन सबके घरों में कब्जे कर लिये थे।) ईश्वर के परिवार के लिए राशन बर्तन आदि का भी व्यवस्था की गई।

जब ईश्वर का परिवार राजौरी आया तो राजौरी का सर्वनाश देखकर इनकी आत्मा काँप उठी। सारा नगर वीरान और उजड़ा हुआ था। घरों के दरवाजे खिड़कियाँ टूट चुकी थी। कई मकान बन्द थे

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
तो कई मकान गिरे हुये थे। हिन्दू तथा मुसलमान दोनों तरफ से जहाजों की उड़ानें होती रहती थी। प्रतिदिन मुसलमानों की भविष्य को लेकर मीटिंग चलती रहती थी। ईश्वरदास का एक मित्र नन्दस्वरूप का परिवार भी साथ रहता था।

छोटी पुत्री शशी की प्राप्ति

दरिया की ओर भागते भागते छोटी पुत्री शशि (2 वर्ष) परिवार से बिछुड़ गई थी। अपने माँ बाप को कहीं न पाकर वह रोने लगी। पास ही खड़े एक व्यक्ति पिशोरी लाल माथुर जो स्वयं अपनी जान बचाकर भाग रहा था उसे देखकर उसने उनकी अंगुली पकड़ ली और टूटी फूटी अस्पष्ट शब्दों में कहा – 'पिता जी (के पास) जाना .....मुझे नहीं छोड़ना।' सुनकर उसका हृदय वात्सल्य से भर आया। उन्होंनें उसे गोद में उठाया और पाँच सात मील तक भागता रहा। मुसलमानों ने उसे पकड़ लिया जब वे उसे मारने लगे तो पिशोरीलाल ने कहा कि मुझे मत मारो। उसने शशि की ओर संकेत करके कहा कि ये मेरे पास किसी की अमानत है। मुझे अपनी चिन्ता नहीं है किन्तु मुझे इसकी रक्षा करनी है और इसे सही ठिकानें पर छोड़ना है। पिशोरीलाल के द्वारा इस प्रकार कहने पर मुसलमानों ने उसे छोड़ दिया। कुछ समय के पश्चात् जब स्थिति कुछ ठीक हुई तो पीर हैदरशाह ने यह कह कर कि यह बच्ची मेरे मित्र ईश्वर की है इसे मैं सम्भालूँगा तो उसने उसे पाँच छः महीनें अपने पास रखा। सभी मनुष्य एक समान नहीं होते। जहाँ हिन्दुओं को काफिर समझने वाले और इन्हें घृणा की दृष्टि से देखने वाले, इन्हें देखते ही इन्हें बेदर्दी से खत्म करने वाले मुसलमान थे वहीं ऐसे संकट काल में सदाशयता, सहृदयता से युक्त करुणाशील मुसलमान भी थे। पीरहैदर शाह को जब मालुम हुआ कि ईश्वरदास राजौरी आ गये हैं तो उन्होंने शशि को

CC-0 In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहला धुलाकर उत्तम वस्त्र सिलवा कर पहनाये और अपने गाँव ददासनी से उसे राजौरी लाए और उसे ईश्वरदास को सौंप दिया। पीरहैदरशाह ने बड़े आश्चर्य से ईश्वर को शशि के सम्बन्ध में यह बात भी बताई कि "आपकी पुत्री मासूम होते हुए भी बहुत समझदार है। इसने कभी हमारे साथ माँस अण्डा नहीं खाया। यह दूध रोटी व साग युक्त भोजन ही लेती रही। मैंने इसे पिता का पूर्ण प्यार दिया है। आपकी पुत्री को मैने पूरी हिफाजत के साथ रखा है। अब ये अमानत आपके हवाले कर के मैं निश्चिन्त हो जाना चाहता हूँ।"

ईश्वर के परिवार की सुरक्षा की दृष्टि से रात को मुंशी जमालदीन के घर में नन्दस्वरूप के परिवार के साथ सोने की व्यवस्था थी और प्रातः पुनः अपने ठिकाने पर (अन्दरकोट के अन्त में मध्यवाला घर) रहते थे। इन्द्रगुप्ता सत्या के घर के पीछे तथा दाई ओर (आजकल दीपमोदी जिसके पुत्र पप्पू व संजय है) मोदी परिवार के पीछे अन्दरकोट में तहखाना बना हुआ था, जहाँ उनके बचे हुये बच्चे, औरत व पुरूष थे। यह चैत्र का महीना था, जब ईश्वरदास राजौरी पहुँचे तो सभी संगी साथी जो कई महीनों से परस्पर बिछुड़े हुये थे मिल कर बहुत प्रसन्न हुये। इधर मुसलमानों का आतंक बढ़ता जा रहा था। मौत का साया कुछ ही कदमों पर था। एक ही पल में कुछ भी घटित हो सकता था। अपेक्षाकृत तहखाने वाला स्थान सुरक्षित था अतः वहाँ पर स्थित ईश्वरदास के हितैषी मित्र बन्धुजनों ने उन्हें वही रूक जाने के लिए भरसक आग्रह किया किन्तु ईश्वरदास ने कहा कि जहाँ मेरी व्यवस्था सरकार ने की है मुझे वही रहना है वैसे भी ये अपने परिवार से अलग होकर मिलने आए थे और परिवार को छोड़ कर यहाँ कैसे रूक सकते थे। ईश्वर ने उन्हें यह भी स्पष्ट किया कि छः महीने से जो परिवार मेरे साथ है उसे

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
छोड़कर मैं यहाँ अकेला कैसे रुक सकता हूँ। ईश्वर ने यह कह कर भी तहखाने में रहने वाले अपने बन्धुओं का आश्वस्त किया कि मैं मिर्जा मुहम्मद सेन को पूछ कर आता हूँ। मिर्जा मुहम्मद सेन स्वयं ही घबराया हुआ था। नीचे फौज ऊपर जहाज कुछ भी समझ नहीं आ रहा था कि भविष्य के गर्त में अब क्या छिपा है? उधर हिन्दुस्तानी फौज भी राजौरी पहुँचने वाली थी। हिन्दुस्तानी फौज के पहुँचने से पहले मुसलमानों की अज्ञात कार्यवाही से हर हिन्दू के हृदय में भयानक खौफ उत्पन्न हो रहा था। ईश्वरदास अपने परिवार के पास वापिस आ गये। सन्तरी आया और सपरिवार ईश्वर को सध्याल गाँव जाने का आदेश सुनाया। ईश्वरदास सपरिवार सध्याल गाँव आ गये। वहाँ पहले से ही 20–25 पुरूष महिलाओं और बच्चों सहित एकत्रित थे। वहाँ यह परिवार एक रात्रि रहा। वहाँ भोजन आदि की व्यवस्था थी। अब तक हिन्दुस्तानी फौज ने राजौरी को अपने अधिकार में ले लिया था। गुर्दन में जो मुसलमान हुकूमत कर रहे थे उन्हें जैसे ही मालुम हुआ कि हिन्दू फौज पहुँचने वाली है। वे जाते जाते वहाँ एकत्रित हुये असले मसले अमनीशन आदि को आग लगा कर पाकिस्तान की ओर भाग निकले। अतः गुर्दन कैम्प में जो भी हिन्दू थे वे सभी बच गये। तहखाने में जो लोग छुपे थे वे भी सुरक्षित थे। नन्दस्वरूप का परिवार भी बच गया।

ईश्वरदास जी तथा उनकी पत्नी का दुखद अन्त–

मुसलमान् भागते भागते भी कहर ढा कर गये। सध्याल में सभी हिन्दुओं को एकत्रित कर उनमें से पुरूषों को अलग करके उन्हें अपने साथ ले गये। स्त्रियों और बच्चों को वही रहने दिया। पुरूषों को मालुम हो चुका था कि अब हम कुछ ही क्षणों के मेहमान है।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
ईश्वरदास जी की बड़ी पुत्री श्रीमती सुदर्शन जी आँखों में आँसू भरकर उन क्षणों को स्मरण करते हुये बताती हैं– "जब मुसलमान पिता जी को ले जा रहे थे तो मैं सब कुछ समझ गई थी। जाते हुये पिताजी ने मेरे सिर पर हाथ फेरा और कहा कि वे लोग हमें मारने के लिए ले जा रहे हैं। मेरा अन्त अब नज़दीक है। बस हमारा और तुम्हारा शारीरिक सम्बन्ध यहीं तक था। यह शरीर नश्वर है। अब भगवान को ही पिता समझना। वहीं तुम्हारे हर कष्टों में तुम्हारा सहायक होगा।" ईश्वरदास की अपने परिवार के साथ जीवन यात्रा यही तक थी।

मुसलमान् कसाई ईश्वरदास को वधिक स्थल पर ले जाते हुए आगे बढ़ रहे थे। ईश्वर का परिवार हृदय पर पत्थर रखकर मूक भाव से लाचार व अवश नेत्रों से उन्हें मृत्युपथ पर बढ़ते हुये देख रहा था किन्तु विधि के क्रूर विधान के सम्मुख नतमस्तक था।

वह दिन बैसाखी का था। कईं दिनों तक सिर न धो पाने के कारण, इस झंझट से मुक्ति पाने के लिए परिवार की स्त्रियों ने अपने अपने बाल कटवा लिये थे। ऐसी घटनाए कई बार घट चुकी थी कि कई पुरूष अपनी जांन बचाने के लिए महिलाओं के वस्त्र पहन कर महिलाओं में सम्मिलित हो गये थे। मुसलमानों पर खून सवार था। उनमें विवेक शक्ति थी ही नहीं। ईश्वरदास की पत्नी तारावती ने भी बाल कटवा रखे थे। न जाने कैसे मुसलमानों ने इन्हें पुरूष समझ लिया और इन पर गोली चला दी। गोली तारावती के टांग के ऊपरी भाग जांघ में जा लगी और बड़ा सा छेद कर दूसरी ओर निकल गई। रक्त का फव्वारा फूट पड़ा। वे 'पानी पानी' कहते हुए असह्य पीड़ा से कराह रही थी। बड़ी पुत्री सुदर्शन ने अपने दुपट्टे को पानी

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में भिगोकर कुछ बूंदे उनके मुह में डाली उनके दुपट्टे में रोटियाँ बंधी हुई थी वे भी खून से लथपथ हो रही थी। उन्हें सुदर्शन ने निकाल लिया। तारावती ने इसी प्रकार तड़पते हुए धीरे धीरे अपने प्राण छोड़ दिए। अब अपने परिवार में बड़ी पुत्री सुदर्शन अपनी छोटी दो बहिनों (विनोद व शशि) के साथ इस संसार में बिल्कुल अकेली रह गई थीं।

चारों तरफ कोलाहल था। मालुम हुआ कि जब पुरूषों को मारने के लिए ले जाया गया तो ईश्वरदास का एक सम्बन्धी नेत्र प्रकाश भी था। वह कद का छोटा था। बाल पठानों की तरह लम्बे लम्बे थे टोपी भी लाल रंग की (चोटी वाली) पहन रखी थी उसका लिबास पठानों जैसा था। सभी ने अपने नाम मुसलमानों के नाम पर रखे हुये थे। वे नमाज की कलमें भी पढ़ते थे। उस पर मुसलमानों को दया आ गई और उसे छोड़ दिया। एक ओर सम्बन्धी पिशोरीलाल था, उसने उन्हें पैसा व सोना दिया उसके बदले उसे एक मील दूर छोड़ दिया। नेत्र प्रकाश ने मुसलमानों के जुल्मों की कथा विस्तार से बताई कि इन्होंने 10–12 वर्ष के बच्चों को छोड़ दिया। शेष पुरूषों (40–50 के लगभग) को एक कतार में खड़ा कर पीठ पीछे हाथ बाँध कर बड़ी बेदर्दी से कईयों के गोलियों से सीने छलनी कर दिए और कई जनों को तेज धार वाली तलवारों से गर्दने उड़ा दी। ईश्वरदास की साली का लड़का कस्तूरी लाल जो उस समय मात्र 16 वर्ष का था, उसका भी बेदर्दी से अन्त कर दिया।

अब तक हिन्दू फौज ने सम्पूर्ण राजौरी पर अधिकार कर लिया था। मुसलमान्, कबाइले, पठान सभी अपनी अपनी वस्तुओं को समेट, उन्हें बकरियों, घोड़ों और बैलों पर लाद कर सड़कों पर भाग रहे थे। सर्वत्र जुलूस जैसा दृश्य था। पुरूषों को वे पहले ही मार चुके थे अब बचे हुए महिलाएँ व बच्चों को बन्दूक की नोक पर आगे रख

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कर भाग रहे थे। दिन को ये लोगों के मकानों में छिप जाते थे और रात को स्वंयं भी पैदल चलते तथा महिलाओं व बच्चों को भी पैदल चलाते थे।

चलते चलते ये कोटली (जो अब पाकिस्तान में है) के 2–3 मील पहले के स्थान पर जा पहुँचे। हिन्दू फौज को जैसे ही मालुम हुआ कि पठान आदि लोग महिलाओं और बच्चों को अपने साथ ले जा रहे हैं तो उन्होंने इन सब को छुड़ा लिया, सम्पूर्ण कोटली शहर बमवारी से नष्ट हो चुका था। सभी इमारतें ध्वस्त हो चुकी थी। कोटली का आर्यसमाज भी तबाह हो गया था किन्तु दो कमरे अब भी सही अवस्था में थे, वहाँ महिलाओं तथा बच्चों के रहने की व्यवस्था की गई। वहाँ भोजन बर्तन आदि का प्रबन्ध करवा दिया गया। कोटली में सरदार खाँ ओर सूबेदार फजलइलाही ने बहुत प्यार व सुरक्षा दी। वहाँ ये लोग दो तीन महीने रुके। तत्पश्चात् इन्हें मीरपुर (अब पाकिस्तान में है) भेज दिया गया वहां से इन्हें 'दतयाल' में इकट्ठा किया गया। वहाँ मीरपुर की भी औरतें व बच्चे थे। सभी के लिए अलग अलग कमरों की व्यवस्था की गई। वहाँ का एक सेठ अब्दुल अजीज बड़ा करूणाशील तथा सहृदय था, उसने सभी को सुरक्षा दिलाई। वहाँ सुरक्षा हेतु गार्ड तैनात किए गये। वे सभी पर अपना प्रेम प्रदर्शित करते थे। वे सभी को ढांढस बंधाते थे कि आप ईश्वर पर भरोसा रखो। उसका स्मरण करो। तुम्हारे संकट शीघ्र समाप्त हो जाएंगे। वह स्वयं भी धार्मिक था। प्रतिदिन पाँच समय नमाज पढ़ता था। सभी के लिए उसने राशन का प्रबन्ध किया। चक्कियाँ भी लगाई थी। उसमें कैम्प के लोग गेहूँ पीसते थे। उन्होंने दाल, तेल, मीठा आदि सब सामानों की व्यवस्था कराई। इनके प्रयास से इस परिवार को सुचेतगढ़ पहुँचाया गया, फिर वहाँ से आर.

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एस.पुरा। वहां से ये कच्ची छावनी जम्मू आए जहाँ कैम्प बना हुआ था। वहाँ इस परिवार के अनेकों सम्बन्धी जो भी सुरक्षित बच निकले वे मिलने आते रहे। रेडक्रास वाले लोगों ने भी इनसे मिलकर विस्तार के साथ इनकी आपबीती सुनी। ईश्वरदास के चचेरे भाई की बेटी (अमरावती) जम्मू में थी तथा श्री फकीरचन्द का बेटा शान्ति प्रकाश भी जम्मू में थे। अन्य लोग भी थे। सब के आग्रह पर यह परिवार अमरावती जी के घर चला गया। वहां ये 15–20 दिन रहे। ईश्वरदास जी की बड़ी पुत्री सुदर्शन का विवाह विभाजन काल से कुछ समय पूर्व श्री जगदीश राज से हुआ था। जब गदर पड़ा तो इनका भी कुछ अता पता न था। जगदीशराज अपने दो भाईयों के साथ राजौरी से भागने लगे। मुसलमान इनके पीछे लगे हुये थे। जगदीश राज दरिया पार कर घनी झाड़ियों में छिप गये जिन्हें मुसलमान् नहीं ढूँढ पाये और ये सुरक्षित वहाँ से बच निकलें। बाद में इन्हें कई मित्रों ने अपने घर शरण दी जब कि इनके दो भाई दरिया में छुप गये जिन्हें मुसलमानों ने देख लिया और मौत के घाट उतार दिया। जगदीश राज के कई अन्य रिश्तेदार भी विभाजन के भेंट चढ़ गये। जब अमन हुआ तो जगदीश राज अपने परिवार को ढूँढ कर इन्हें लेने आ गये। दो दिन में यह परिवार राजौरी पहुँचा और अन्दरकोट में अपने मकान में रहने लगा।

ईश्वरदास की हवेली पर बम गिरा था अतः उसका एक भाग व छत तथा दीवारें टूट गई थी। उनकी पुनः मुरम्मत करके पहले जैसा बनवा दिया गया।

काल का चक्र घूमता रहा। ईश्वर की मंझली बेटी विनोद बड़ी हो गई थी। विद्याध्ययन कर उसका विवाह राजौरी में ही

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
धर्मनिष्ठ, ईश्वर–विश्वासी, आर्यसमाज के कर्मठकार्यकर्त्ता व राजनीति में भी रूचि लेने वाले श्री त्रिलोकनाथ जी से हुआ। उनके परिवार में आत्मप्रकाश, अजय, विकास, आदर्श (बेटी), अनिल (बेटी) ओम्बाला ये छः संताने हुई। सभी प्रभुविश्वासी व कर्मठ हैं। सभी बच्चों का विवाह हो गया और सभी भाईयों का परिवार एक ही घर में परस्पर प्रेम से रहता है। प्रातः समस्त परिवार इकट्ठे यज्ञ सन्ध्या में भाग लेता हैं, सांय सभी मिल कर सन्ध्या कीर्त्तन करते हैं। चहुँ और आध्यात्मिक वातावरण दिखाई पड़ता है। आज त्रिलोक गुप्ता इस संसार में नहीं हैं पुनरपि सारा परिवार उनके पदचिह्नों पर चल रहा है।

दूसरी पुत्री शशि विद्यालय में अध्यापन कार्य में नियुक्त हो गई। वह भी आर्य समाज के कार्यो में बहुत रूचि लेती थी। आर्यसमाज में सायंकाल छोटी छोटी कन्याओं को एकत्रित कर सभा लगाती थी। उन्हें नैतिक शिक्षा, वैदिक धर्म के सिद्वान्तों की शिक्षा, सन्ध्या, हवन भजन सिखाती थीं। उनका विवाह मीरपुर के रामस्वरूप गुप्ता (दिल्ली) के साथ कर दिया। श्रीरामस्वरूपगुप्ता सुशील सौम्य नम्र सज्जन हैं। शशि जी के प्रति पूर्ण सम्मान भाव उनके हृदय में रहता है। शशि जी अतिशय उदार दानशीला तथा आतिथ्य प्रेम से युक्त हैं। उनके परिवार में पाँच पुत्रियाँ है। ईश्वर की बड़ी पुत्री सुदर्शन जी के घर में आठ सन्तान हुई। रत्नप्रभा, ललित, प्रतिभा सविता, सुकृति, वन्दना छः बेटियाँ व देवरत्न, सुनील दो बेटे हुए। रत्नप्रभा का विवाह बम्बई में धर्मवीर से हुआ, इनके दो पुत्र हुए किन्तु दुर्दैव से सुदर्शन जी की बड़ी बेटी व दामाद दोनों ही असमय में कालकवलित हो गए। उससे छोटी बेटी ललित है उनके पति श्री रमेश गुप्ता तपस्विनी माता भागवन्ती जी के पौत्र हैं जिन्होंने हरिद्वार सप्तसरोवर में व्यास आश्रम संस्थापित किया। माता भागवन्ती की पुत्री विमला जी

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं जो इस समय अपनी बहिन शान्ति जी के साथ पूर्ण समर्पित भाव से इस आश्रम की देख रेख कर रही हैं। इस आश्रम में सर्वदा महान् यज्ञ उत्सव सत्संग योग साधना का कार्यक्रम चलता रहा है। दूर दूर से साधक, सामान्य लोग, योगी विद्वान् व महान पुरुष पुण्यसलिला गंगा के तट पर स्थित, जिसका जर्रा जर्रा माता भागवन्ती जी की तपस्या से पवित्र है, ऐसे व्यास आश्रम की धरती पर आकर पुण्य लाभ प्राप्त करते हैं। ललित से छोटी बेटी डा॰ प्रतिभा ने पाणिनि कन्या महाविद्यालय वाराणसी कन्या गुरुकुल में डा॰ प्रज्ञा देवी व आचार्या मेधा देवी के चरणकमलों में ग्यारह वर्ष रहकर वेद व्याकरण निरूक्तादि शास्त्रों का अध्ययन कर शास्त्री एम.ए एम्फिल पीएचडी कर इस समय जम्मू विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग में असिस्टैण्ट् प्रोफेसर पद पर कार्यरत हैं। उनके पति डा॰ नरेशबत्रा अम्बाला कैण्ट में कालेज में प्रोफेसर हैं। दोनों ही पति पत्नी संस्कृत भाषा व वैदिक संस्कृति के प्रचारक हैं। प्रो॰ नरेशबत्रा सम्पूर्ण भारत में प्रसिद्ध, संस्कृत के महान कवि है। प्रतिभा से छोटी सविता सरल सौम्य विनम्र प्रभुभक्ति में रत रहती हैं। विगतवर्ष उनके पति का अकस्मात् स्वर्गवास हो गया। उससे छोटी सुकृति सामाजिक कार्यकर्त्री, भजनोपदेशिका, आर्यवीरांगना दल रिहाड़ी जम्मू की संचालिका हैं। उनके पति अरूण चौधरी दानशील, उदार, धर्मनिष्ठ, कर्मठ प्रतिष्ठित सामाजिक कार्यकर्त्ता हैं। सबसे छोटी पुत्री डा॰ वन्दना भी संस्कृत में पीएचडी करके सीनियर सैकेण्ड्री स्कूल में लैक्चरर् हैं। इनके पति श्री राजीव गुप्ता बड़े होनहार, बुद्धिमान, विचारक हैं तथा एच.डी.एफ. सी. बैंक में मैनेजर पद पर कार्यरत है। सुदर्शन जी के दोनों पुत्र धार्मिक व ईश्वरभक्त हैं और व्यापार करते हैं। ज्येष्ठ पुत्र देवरत्न गुप्ता उनकी पत्नी सन्तोष गुप्ता है। छोटा पुत्र सुनील जी तथा उनकी पत्नी सुनीति गुप्ता हैं।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोटली आर्यसमाज में रहते हुए ईश्वर की बड़ी पुत्री श्रीमती सुदर्शन ने विभाजन के दर्द की अभिव्यक्ति अपने शब्दों में कुछ इस प्रकार से की-

कैसे कहूँ कोटली मीरपुर राजौरी के दर्दनाक नज़ारे
वो खून की होली खेली गैरों के इशारे–गैरों के इशारे,
कोटली मीरपुर राजौरी का हुआ बुरा हाल क्यों हुआ बुरा हाल क्यों
इज्जत बचाने अपनी बहिन बेटियों ने जहर खाया क्यों? जहर खाया क्यों?
पति भाई पिता को बन्दूक भालों से मारे
वो खून की होली खेली–गैरों के इशारे............
देश आज़ाद हुआ हमके सारे मारे गये, हम के सारे मारे गये
कैसे भोगेगें आज़ादी अकेले ही रह गये अकेले ही रह गये
धन दौलत गया बन्धु बान्धव गये न रही माँ न पिता जी रहे
फिरते रहे हम सभी मारे मारे
वो खून की होली खेली गैरों के इशारे...........
मिलकरके हमने देश से निकाल दिया–देश से निकाल दिया
जाते जाते गोरे अंग्रेजों ने हमको लड़वा दिया–हमको लड़वा दिया
मुगल पठानों ने सबको मारा कहते हैं सारे
वो खून की होली खेली गैरों के इशारे............

✡✡✡✡✡

(किसी तड़पती हुई विधवा की दुर्दशा देखकर रची कविता)
इक छोटी सी विधवा बेचारी।
छोटी उमर ते विपदा सी भारी
बाप होता तो गले लगाता
माँ होती तो ढाँढस बंधाती
भाई होता तो दुखड़े मिटाता
कुढ़ती जलती रहे दुखियारी–इक छोटी
बंट गये लुट गये उजड़ गये हम
दर दर की ठोकरें खाते रहे हम
सब को मारा हमें अपनी निगाहों में रखकर
राजौरी से मैंडर कोटली पहुँच कर
कैम्प में रहने हम सारी। इक छोटी सी............

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कोटली शहर बम्मी से मैदान हो गया।
आर्य स्कूल का एक कमरा बचा
मेजर जनरल सरदार खां फ़ैज इलाही ने
सुरक्षा में सब को रखा
राशन पानी दिया पहनने को कपड़ा दिया
हौंसला बढ़ाया तुमको भेजेंगे अपने घर
आशा बन्धवाई हमारी
इक छोटी सी उमर में.........
कोटली से मीरपुर दतयाल कैम्प में
सेठ अब्दुल अजीज व उसकी बीबी जी
ते अपनी छत्रछाया में रखा हमको
हमारा पत्र व्यवहार रिश्तेदारों से करवा कर
हमें सेवा देते रहे
छः महीने बाद हमको अपने वतन जम्मू हिन्दोस्ता को भेजा गया।
हम सब मिलकर प्रभु परम पिता के आभारी
भूल गई सारी बिमारी
छोटी उमर ते विपदा सी भारी..............

✡✡✡✡✡

निम्नलिखित गीत ईश्वर की मध्यमा पुत्री विनोद जब सैनिक लोग आते थे, उनके समक्ष गाती थी। वे यह गीत विनोद के मुख से सुनकर बहुत प्रसन्न होते थे–

साड़ा प्यारा भारत देश रहे सदा वसदा
जिस चरण दे प्रताप दुख दूर नसदा
फलाँ फुला दे पंक्ति देख है बहार जी
करती नित साडे देश दा शिंगार जी
जिस दी गोदी बैठ कृष्ण गीता ज्ञान दे गये
राम बुद्ध दयानन्द सोनी शान दे गये
सुखदेव भगतसिंह चन्द्रशेखर
सुभाष बोस और गांधी जी
स्वतन्त्र भारत देश पर बलिदान हो गये।

CC-0 In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पञ्चमहायज्ञ

पाँच महायज्ञ निम्नलिखित हैं:–

1. ब्रह्मयज्ञ 2. देवयज्ञ 3. पितृयज्ञ 4. बलिवैश्वदेवयज्ञ 5. अतिथियज्ञ।

इन पाँचों यज्ञों की ऋषिदयानन्द सरस्वतीसम्मत व्याख्या इस प्रकार से हैं:–

1. ब्रह्मयज्ञ – सन्ध्योपासन ही ब्रह्मयज्ञ हैं। इसी को मनुस्मृति में ऋषियज्ञ कहा गया है। वहीं ऋषियज्ञ का अर्थ करते हुए – 'अध्ययन ब्रह्मयज्ञ' कहा गया है। तदनुसार ऋषिवर ने स॰ प्र॰ के चतुर्थ समुल्लास में यज्ञ की व्याख्या करते हुये लिखा– वेदादि–शास्त्रों को पढ़ना पढ़ाना, सन्ध्योपासन योगाभ्यास। ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में भी ऋषि लिखते हैं – (उनमें से प्रथम एक ब्रह्मयज्ञ कहाता है जिसमें अंगों के सहित वेदादि शास्त्रों का पढ़ना पढ़ाना तथा सन्ध्योपासन अर्थात् प्रातःकाल और सांयकाल में ईश्वर की स्तुति प्रार्थना और उपासना सब मनुष्यों को करनी चाहिए)।

2. देवयज्ञ :– अग्निहोत्र ही देवयज्ञ है। जैसा कि ऋषि ने ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में लिखा– 'हे मनुष्यो! तुम लोग वायु ओषधि और वर्षाजल की शुद्धि से सबके उपकार के अर्थ घृतादि शुद्ध वस्तुओं और समिधा अर्थात् आम्र वा ढाक आदि काष्ठों से अतिथिरूप अग्नि को नित्य प्रकाश माना करो। फिर उस अग्नि में होम करने के योग्य, पुष्ट मधुर और सुगन्धित अर्थात् दुग्धघृत शर्कर, गुड़, केशरि, कस्तूरी आदि और रोगनाशक जो सोमलता आदि सब प्रकार से शुद्ध द्रव्य हैं उनकी अच्छी प्रकार नित्य अग्निहोत्र करके सबका उपकार

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करो।' सत्यार्थ प्रकाश में देवयज्ञ की व्याख्या ऋषि ने इस प्रकार से की हैं–

'दूसरा देवयज्ञ'– जो अग्निहोत्र और विद्वानों का संग सेवादिक से होता है सन्ध्या तथा अग्निहोत्र सांय प्रातः दो ही काल करें। दो ही रात दिन की सन्धि वेला है, अन्य नहीं। ऋ॰भा॰भू॰ में वे लिखते हैं– अग्निहोत्र करने के लिए ताम्र या मिट्टी की वेदी बना के काष्ठ चाँदी वा सोने का चमसा अर्थात – अग्नि में पदार्थ डालने का पात्र ओर आज्य स्थाली अर्थात् घृतादि पदार्थ रखने का पात्र लेके, इस वेदी में ढाक वा आम्र आदि वृक्षों की समिधा स्थापन करके अग्नि को प्रज्वलित करके पूर्वोक्त पदार्थों को प्रातःकाल तथा सायंकाल अथवा प्रातः काल ही नित्य होम करें।

3. पितृयज्ञ – पितृयज्ञ तर्पण व श्राद्ध दो प्रकार का है। ऋषियों द्वारा प्रणीत साहित्य का अध्ययन अध्यापन करना तथा जीवित माता पिता गुरुजनों व विद्वानों का श्रद्धा पूर्वक मन वाणी व कर्म से उनका सत्कार व सेवा करना श्राद्ध है।

4. बलिवैश्वदेवयज्ञ – प्रायः गृहस्थ के कार्य करते हुए अज्ञात अदृष्ट जीवों की अनजाने में हत्या हो जाती है। उनके प्रायश्चित्त हेतु यह यज्ञ किया जाता है। ऋषि लिखते हैं– 'जब भोजन सिद्ध हो तब जो कुछ भोजनार्थ बने। उसमें से खट्टा लवणान्न और खार को छोड़कर घृत मिष्टयुक्त अन्न लेकर चूल्हे से अग्नि अलग धर के ....आहुति. .....करें और इसी का कुछ भाग अलग रखकर किसी बुभूक्षित प्राणी अथवा कुत्ते कौवे आदि को दे देना चाहिए।

5. अतिथि यज्ञ – ऋषि ने ऋ॰भा॰भू॰ में अतिथि यज्ञ की परिभाषा करते हुए लिखा है–

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'जिसमें अतिथियों की यथावत् सेवा करनी होती है, उसको लिखते हैं। जो मनुष्य पूर्ण विद्वान् परोपकारी, जितेन्द्रिय, धर्मात्मा, सत्यवादी, छल, कपट, रहित और नित्य भ्रमण करके विद्या धर्म का प्रचार और अविद्या अधर्म क़ी निवृत्ति सदा करते रहते हैं उनको अतिथि कहते हैं।' ऐसे लोगों की सेवा करना अतिथि यज्ञ कहलाता है।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रह्मयज्ञ

वैदिक सन्ध्या

पहले जलादि से बाह्य शुद्धि फिर राग –द्वेषादि के त्याग से भीतर की शुद्धि करनी चाहिए। तत्पश्चात् कुशा या हाथ से मार्जन करें। फिर कम–से–कम तीन प्राणायाम करें। तत्पश्चात् गायत्री मन्त्र से शिखा को बाँधकर रक्षा करें।

आचमनमन्त्रः

ओ३म शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शँयोरभि स्रवन्तु नः।।

–यजुः. 36/12

सर्वव्यापक, सबका प्रकाशक और सबको आनन्द देनेवाला परमेश्वर मनोवाञ्छित सुख और पूर्णानन्द की प्राप्ति के लिए हमारा कल्याण करे तथा हम पर सुख की सर्वदा वृष्टि करे।

इन्द्रियस्पर्शमन्त्राः

पात्र में से बाएँ हाथ में जल लेकर दाहिने हाथ की मध्यमा और अनामिका अङ्गुलियों से स्पर्श करके प्रथम दक्षिण और पश्चात् वामपार्श्व में निम्न मन्त्रों से स्पर्श करें।

ओं वाक् वाक्। ओं प्राणः प्राणः। ओं चक्षुः चक्षुः। ओं श्रोत्रं श्रोत्रम्। ओं नाभिः। ओं हृदयम्। ओं कण्ठः। ओं शिरः। ओं बाहुभ्यां यशोबलम्। ओं करतलकरपृष्ठे।

इन मन्त्रों से ईश्वर की प्रार्थनापूर्वक क्रमशः मुख, नासिक, नेत्र, श्रोत्र (कान), नाभि, हृदय, कण्ठ, सिर तथा भुजाओं के मूल स्कन्ध और दोनों हाथों के ऊपर–तले स्पर्श करें। इसका अभिप्राय यह है कि ईश्वर की कृपा से हमारी ये सब ज्ञानेन्द्रियाँ और कर्मेन्द्रियाँ यश और बल से युक्त हों।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

मार्जनमन्त्राः

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब बाएँ हाथ में जल लेकर मध्यमा और अनामिका अङ्गुली के अग्रभाग से नेत्रादि अंगों पर जल छिड़कें। जो आलस्य न हो और जल प्राप्त न हो तो न छिड़कें।

ओं भूः पुनातु शिरसि। ओं भुवः पुनातु नेत्रयोः। ओं स्वः पुनातु कण्ठे। ओं महः पुनातु हृदये। ओं जनः पुनातु नाभ्याम्। ओं तपः पुनातु पादयोः। ओं सत्यं पुनातु पुनश्शिरसि। ओं खम् ब्रह्म पुनातु सर्वत्र।

प्राणों से भी प्रिय परमात्मा सिर में पवित्रता करे। दुःख–विनाशक परमात्मा आँखों में पवित्रता करे। सदा आनन्दमय और सबको आनन्द देनेवाला परमात्मा कण्ठ में पवित्रता करे। सबसे महान् और सबका पूज्य परमात्मा हृदय में पवित्रता करे। सर्वजगत् उत्पादक परमात्मा नाभि में पवित्रता करे। दुष्टों को सन्ताप देनेवाला परमात्मा पैरों में पवित्रता करे, सत्यरूप अविनाशी परमात्मा पुनः सिर में पवित्रता करे। सर्वव्यापक, सर्वतोमहान् परमात्मा शरीर में सर्वत्र पवित्रता करे।

प्राणायाममन्त्राः

पुनः शास्त्रोक्त रीति से प्राणायाम की क्रिया करता जावे और नीचे लिखे मन्त्रों का जप भी करता जावे। इस रीति से कम–से कम तीन और अधिक–से–अधिक 21 प्राणायाम करें।

ओ३म भूः। ओ३म् भुवः। ओ३म् स्वः। ओ३म महः। ओ३म् जनः। ओ३म् तपः। ओ३म् सत्यम्।। —तैत्ति. प्र. 10/27

परमपिता परमात्मन्! आप प्राणों के प्रिय, दुःख विनाशक और सुखप्रदाता, आनन्दमय ओर आनन्ददाता, सर्वतोमहान् सकल जगत् के उत्पत्तिकर्त्ता, दुष्टों को दण्ड देनेवाले, सदा एकरस, अखण्ड, अविनाशी और अपरिवर्तनशील हो।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस प्रकार ईश्वर के गुणों का स्मरण करते हुए उसमें अपने–आपको मग्न करके अत्यन्त आनन्दित होना चाहिए।

अघमर्षणमन्त्राः

तत्पश्चात् सृष्टिकर्त्ता परमेश्वर और सृष्टिक्रम का विचार नीचे लिखे मन्त्रों से करें और जगदीश्वर को सर्वव्यापक, न्यायकारी, सर्वत्र, सर्वदा सब जीवों के कर्मों के द्रष्टा को निश्चित मान के पाप की ओर अपने आत्मा और मन को कभी न जाने दें किन्तु सदा धर्मयुक्त कर्मों में वर्त्तमान रक्खें। (संस्कारविधि)

ओ३म ऋतं च सत्यं चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत।
ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रो अर्णवः।।1।।
समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत।
अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी।।2।।
सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्।
दिवं च पृथिवीं चान्तरिक्षमथो स्वः।।3।।

ऋ॰10/190/1–3

सर्वत्र प्रकाशमान ईश्वर के अनन्त सामर्थ्य से वेदविद्या और त्रिगुणात्मक प्रकृति उत्पन्न हुई। उसी परमात्मा के सामर्थ्य से प्रलय उत्पन्न हुआ और उसी परमात्मा से महासमुद्र उत्पन्न हुए।।1।।

सारे ब्रह्माण्ड को सहज ही में अपने वश में रखनेवाले परमेश्वर ने समुद्र की उत्पत्ति के पश्चात् संवत्सर–वर्ष और फिर इनके विभाग, दिन, रात, क्षण मुहूर्त्त आदि को रचा।।2।।

सब जगत् को धारण और पोषण करनेवाले परमात्मा ने जैसे पूर्वकल्प में सूर्य और चन्द्र रचे वैसे ही इस कल्प में भी रचे हैं। ठीक उसी प्रकार द्युलोक, पृथिवीलोक, अन्तरिक्ष और आकाश में जितने लोक हैं उनका निर्माण भी पूर्वकल्प के अनुसार किया है।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओ३म् शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये।
शँयोरभि स्रवन्तु नः।। —यजुः. 36/12

इस मन्त्र से पुनः तीन आचमन करें। तदनन्तर गायत्र्यादि मन्त्रों के अर्थविचारपूर्वक परमेश्वर की स्तुति अर्थात् परमेश्वर के गुणों और उपकारों का ध्यान कर पश्चात् प्रार्थना करें।

अथ मनसापरिक्रमा–मन्त्राः

निम्न मन्त्रों को पढ़तें जाना और अपने मन से चारों ओर बाहर–भीतर परमात्मा को पूर्ण जानकर निर्भय, निश्शंक, उत्साही, आनन्दित तथा पुरुषार्थी रहना।

ओ३म् प्राची दिगग्निरधिपतिरसितो रक्षितादित्या इषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः!!1!!

दक्षिणा दिगिन्द्रोऽधिपतिस्तिरश्चिराजी रक्षिता पितर इषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः!!2!!

प्रतीची दिग्वरुणोऽधिपतिः पृदाकू रक्षितान्नमिषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः!!3!!

उदीची दिक् सोमोऽधिपतिः स्वजो रक्षिताशनिरिषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः!!4!!

ध्रुवा दिग्विष्णुरधिपतिः कल्माषग्रीवो रक्षिता वीरुध इषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः!!5!!

ऊर्ध्वा दिग्बृहस्पतिरधिपतिः श्वित्रो रक्षिता वर्षमिषवः।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु।
योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः!!6!!

— अथर्व. 3/27/1–6

पूर्वदिशा या सामने की ओर ज्ञानस्वरूप परमात्मा सब जगत् का स्वामी है। वह बन्धन–रहित भगवान् सब ओर से रक्षा करता है। सूर्य की किरणें उसके बाण अर्थात् रक्षा के साधन हैं। उन सबके गुणों के अधिपति ईश्वर के गुणों को हम लोग बारम्बार नमस्कार करते हैं। जो ईश्वर के गुण और ईश्वर के रचे पदार्थ जगत् की रक्षा करनेवाले हैं और पापियों को बाणों के समान पीड़ा देनेवाले हैं उनको हमारा नमस्कार हो। जो अज्ञान से हम से द्वेष करता है और जिससे हम द्वेष करते हैं उन सबकी बुराई को उन बाण–रूपी मुख के बीच में दग्ध कर देते हैं!!1!!

दक्षिण दिशा में सम्पूर्ण ऐश्वर्ययुक्त परमात्मा सब जगत् का स्वामी है। कीट–पतंग, वृश्चिक आदि से वह परमेश्वर रक्षा करनेवाला है। ज्ञानी लोग उसकी सृष्टि में बाण के सदृश हैं। उन सबके .... इत्यादि पूर्ववत्!!2!!

पश्चिम दिशा में वरुण सबसे उत्तम परमेश्वर सबका राजा है। वह बड़े–बड़े अजगर, सर्पादि विषधर प्राणियों से रक्षा करनेवाला है। पृथिव्यादि पदार्थ उसके बाण से सदृश हैं अर्थात् श्रेष्ठों की रक्षा और दुष्टों की ताड़ना के निमित्त हैं। उन सबके.......इत्यादि पूर्ववत्!!3!!

उत्तर दिशा में सोम–शन्यादि गुणों से आनन्द प्रदान करने वाला जगदीश्वर सब जगत् का राजा है। वह अजन्मा और अच्छी प्रकार रक्षा करनेवाला है। विद्युत उसके बाण हैं। उन सबके ..... इत्यादि पूर्ववत्!!4!!

नीचे की दिशा में विष्णु–सर्वत्र व्यापक परमात्मा सब जगत् का राजा है। चित्रग्रीववाला परमेश्वर सब प्रकार से रक्षा करता है।
CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
नाना प्रकार की वनस्पतियाँ उसके बाण के सदृश हैं। उन सबके .....इत्यादि पूर्ववत्!!5!!

ऊपर की दिशा में बृहस्पति, वाणी, वेदशास्त्र और आकाश आदि बड़ी–बड़ी शक्तियों का स्वामी सबका अधिष्ठाता है। अपने शुद्ध ज्ञानमय स्वरूप से हमारा रक्षक हैं। वृष्टि उसके बाण–रूप अर्थात् रक्षा के साधन हैं। उन सबके.......इत्यादि पूर्ववत्!!6!!

अथोपस्थानमन्त्राः

अब परमात्मा का उपस्थान अर्थात् परमेश्वर के निकट मैं और मेरे निकट परमात्मा है ऐसी बुद्धि करें–

ओ३म् उद्वयन्तमसस्परि स्वः पश्यन्त उत्तरम्। देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम्!!1!!

–यजु० 35/14

हे परमेवर! आप अन्धकार से पृथक् प्रकाशस्वरूप हैं। आप प्रलय के पश्चात् भी सदा विद्यमान रहते हैं। आप प्रकाशकों के प्रकाशक, चराचर के आत्मा और ज्ञानस्वरूप हैं। आपको सर्वश्रेष्ठ जानकर श्रद्धापूर्वक हम आपकी शरण में आये हैं। नाथ! अब हमारी रक्षा कीजिए।

उदु त्य जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः। दृशे विश्वाय सूर्यम्!!2!!

–यजुः० 33/31

वेद की श्रुति और जगत् के नाना पदार्थ झण्डों के समान उस दिव्य गुणयुक्त, सर्व प्रकाशक, चराचर के आत्मा, वेदप्रकाशक भगवान् को विविध विद्या की प्राप्ति के लिए उत्तम रीति से जानते और प्राप्त कराते हैं।

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः। आ प्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्ष॰ सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च स्वाहा!!3!!

—यजुः॰ 7/42

जो सब देवों में श्रेष्ठ और बलवान् है, जो सूर्यलोक, प्राण, अपान और अग्नि का भी प्रकाशक है, जो द्युलोक, अन्तरिक्ष ओर पृथिवीलोक में व्यापक है, जो जड़ और चेतन जगत् का आत्म–जीवन है, वह चराचर जगत् का प्रकाशक परमात्मा हमारे हृदयों में सदा प्रकाशित रहे।

तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शत जीवेम शरदः शतं शृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्!!4!!

—यजुः॰ 36/24

सबका द्रष्टा, धार्मिक विद्वानों के परमहितकारक, सृष्टि से पूर्व, पश्चात् और मध्य में सत्यस्वरूप से विद्यमान रहनेवाले और सर्व जगदुत्पादक ब्रह्म को सौ वर्ष तक देखें। उसके सहारे से सौ वर्ष तक जीयें। सौ वर्ष तक उसका ही गुण–गान सुनें। उसी ब्रह्म का सौ वर्ष तक उपदेश करें। उसी की कृपा से सौ वर्ष तक किसी के अधीन न रहें। उसी ईश्वर की आज्ञापालन और कृपा से सौ वर्ष के उपरान्त भी हम लोग देखें, सुनें, सुनावें और स्वतन्त्र रहें।

अथ गुरुमन्त्रः

ओ३म भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात्। —यजुः॰ 36/3

सच्चिदानन्द, सकल जगदुत्पादक, प्रकाशकों के प्रकाशक, परमात्मा के सर्वश्रेष्ठ, पापनाशक तेज का हम ध्यान करते हैं। वह परमेश्वर हमारी बुद्धि और कर्मों को उत्तम प्रेरणा करे।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हे ईश्वर दयानिधे! भवत्कृपयानेन जपोपासनादिकर्मणा धर्मार्थकाममोक्षाणां सद्यः सिद्धिर्भवेन्नः।

नमस्कार–मन्त्रः

ओ३म् नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च।।

—यजुः॰ 16/41

जो सुखस्वरूप और संसार के उत्तम सुखों को देनेवाला, कल्याण का कर्त्ता, मोक्षरूप और धर्म के कामों को ही करनेवाला, अपने भक्तों को धर्म के कामों में युक्त करनेवाला, अत्यन्त मङ्गलरूप और धार्मिक मनुष्यों को मोक्ष देनेवाला है उसको हमारा बारम्बार नमस्कार हो।

इति सन्ध्योपासनाविधिः

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देवयज्ञ : अग्निहोत्र

आचमन मन्त्र

ओं अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा।

ओं अमृतापिधानमसि स्वाहा।

ओं सत्यं यशः श्रीर्मयि श्रीः श्रयतां स्वाहा।

इन मंत्रों से तीन बार आचमन करें।

अंगस्पर्शविधि

ओं वाङ्म आस्येऽस्तु (मुख)

ओं नसोर्मे प्राणोऽस्तु (नासिका)

ओं अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु (आंख)

ओं कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु (कान)

ओं बाह्वोर्मे बलमस्तु (बाहु)

ओं ऊर्वोम ओजोऽस्तु (जंघा)

ओं अरिष्टानि मेऽङ्गानि तनूस्तन्वा मे सह सन्तु (शरीर)

ईश्वर–स्तुति–प्रार्थनोपासना मन्त्राः

नीचे लिखे मन्त्रों का पाठ अर्थ–सहित श्रद्धा और भक्ति से करें। संस्कारों, विशेष यज्ञों, साप्ताहिक सत्संगों, पारिवारिक सत्संगों में इन मन्त्रों का पाठ एक विद्वान् अथवा योग्य सज्जन अर्थ सहित स्थिर चित्त होकर परमात्मा में ध्यान लगाकर करे ओर सब लोग उसमें ध्यान लगाकर सुनें एवं विचारें–

ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव।

यद् भद्रन्तन्न आसुव!!1!! यजु. 30.3

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हे सकल जगत् के उत्पत्तिकर्त्ता, समग्र ऐश्वर्ययुक्त शुद्धस्वरूप, सब सुखों के दाता परमेश्वर! आप कृपा करके हमारे समस्त दुर्गुण, दुर्व्यसन और दुःखों को दूर कर दीजिए और जो कल्याणकारक गुण, कर्म, स्वभाव और पदार्थ हैं, वह सब हमको प्राप्त कीजिए।

हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमाम् कस्मै देवाय हविषा विधेम!!2!!

यजु. 13.4

जो प्रकाशस्वरूप और जिसने प्रकाश करने हारे सूर्य, चन्द्रमादि पदार्थ उत्पन्न करके धारण किये हैं, जो सब जगत् के उत्पन्न होने से पूर्व वर्तमान था, वह इस भूमि और सूर्यादि को धारण कर रहा है, हम लोग उस सुखस्वरूप शुद्ध परमात्मा के लिए ग्रहण करने योग्य योगाभ्यास और अतिप्रेम से विशेष भक्ति किया करें।

य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः।
यस्यच्छायाऽमृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम!!3!!

यजु. 25.13

जो आत्मज्ञान का दाता, शरीर, आत्मा और समाज के बल का देनेहारा, जिसकी सब विद्वान् लोग उपासना करते हैं और जिसका प्रत्यक्ष सत्यस्वरूप शासन, न्याय, अर्थात् शिक्षा को मानते हैं, जिसका आश्रय ही मोक्ष–सुखदायक है, जिसका न मानना, अर्थात् भक्ति न करना ही मृत्यु आदि दुःख का हेतु है, हम लोग उस सुखस्वरूप सकल ज्ञान के देनेहारे परमात्मा की प्राप्ति के लिए आत्मा और अन्तःकरण से भक्ति, अर्थात् उसी की आज्ञा पालन करने में तत्पर रहें।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक इद्राजा जगतो बभूव।

य ईशेऽअस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम!!4!!

यजु. 23.3

जो प्राणवाले और अप्राणिरूप जगत् का अपनी अनन्त महिमा से एक ही विराजमान राजा है, जो इस मनुष्यादि और गौ आदि प्राणियों के शरीर की रचना करता है, हम लोग उस सुखस्वरूप सकल ऐश्वर्य को देनेहारे परमात्मा के लिए अपनी सकल उत्तम सामग्री को उसकी आज्ञापालन में समर्पित करके विशेष भक्ति करें।

येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृढ़ा येन स्वः स्तभितं येन नाकः।

यो अन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम!!5!!

यजु. 32.6

जिस परमात्मा ने तीक्ष्ण स्वभाववाले सूर्य आदि और भूमि को धारण किया, जिस जगदीश्वर ने सुख को धारण और जिस ईश्वर ने दुःखरहित मोक्ष को धारण किया है, जो आकाश में सब लोक–लोकान्तरों को विशेष मानयुक्त, अर्थात, जैसे आकाश में पक्षी उड़ते हैं, वैसे सब लोकों का निर्माण करता और भ्रमण कराता है, हम लोग उस सुखदायक कामना करने के योग्य परब्रह्म की प्राप्ति के लिए सब सामर्थ्य से विशेष भक्ति करें।

प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परि ता बभूव।

यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम्!!6!!

ऋ.10.121.10

हे सब प्रजा के स्वामी परमात्मन्! आपसे भिन्न दूसरा कोई उन, इन सब उत्पन्न हुए जड़–चेतनादिकों का नहीं तिरस्कार करता

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

है, अर्थात् आप सर्वोपरि हैं। जिस–जिस पदार्थ की कामनावाले होके हम लोग भक्ति करें, आपका आश्रय लेवें और वाञ्छा करें, उस–उसकी कामना हमारी सिद्ध होवे, जिससे हम लोग धनैश्वर्यों के स्वामी होवें।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स नो बन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा।
यत्र देवा अमृतमानशानास्तृतीये धामन्नध्यैरयन्त!!7!!

यजु.32.10

हे मनुष्यो! वह परमात्मा अपने लोगों का भ्राता के समान सुखदायक, सकल जगत् का उत्पादक, वह सब कामों का पूर्ण करनेहारा, सम्पूर्ण लोकमात्र और नाम–स्थान–जन्मों को जानता है और जिस सांसारिक सुख–दुःख से रहित नित्यानन्दयुक्त मोक्षस्वरूप धारण करनेहारे परमात्मा में मोक्ष को प्राप्त होके विद्वान् लोग स्वेच्छापूर्वक विचरते हैं, वही परमात्मा अपना गुरु, आचार्य, राजा और न्यायाधीश है। अपने लोक मिलके सदा उसकी भक्ति किया करें।

अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठान्ते नम उक्तिं विधेम!!8!!

यजु. 40.16

हे स्वप्रकाश, ज्ञानस्वरूप, सब जगत् के प्रकाश करनेहारे सकल सुखदाता परमेश्वर! आप जिससे सम्पूर्ण विद्यायुक्त हैं, कृपा करके हम लोगों को विज्ञान वा राज्यादि ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिए अच्छे, धर्मयुक्त, आप्त लोगों के मार्ग से सम्पूर्ण प्रज्ञान ओर उत्तम कर्म प्राप्त कराइए और हमसे कुटिलतायुक्त पापरूप कर्म को दूर कीजिए। इस कारण हम लोग आपकी बहुत प्रकार की स्तुतिरूप नम्रतापूर्वक प्रशंसा सदा किया करें और सर्वदा आनन्द में रहें।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अग्न्याधानम्

ओ३म भूर्भुवः स्वः। गोभिलगृह्य 1/1/11

इस मन्त्र का उच्चारण करके दीपक जलाकर पात्र में रखे हुए कपूर को प्रदीप्त करें।

ओ३म भूर्भुवः स्वर्द्यौरिव भूम्ना पृथिवीव वरिम्णा। तस्यास्ते पृथिवि देवयजनि पृष्ठेऽग्निमन्नादमन्नाद्यायादधे!!1!!

—यजु. 3/5

(इससे अग्नि प्रदीप्त करें)

ओ३म् उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्ते सँ सृजेथामयं च।
अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत!!2!!

—यजु. 15/54

समिदाधानमन्त्राः

ओ३म् अयन्त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्द्धस्व चेद्ध वर्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा। इदमग्नये जातवेदसे–इदन्न मम!!1!! (पहली समिधा)

—आ.गह्य

य 1/10/12

ओ३म् समिधाग्निं दुवस्यत घृतैर्बोधयतातिथिम्।
आस्मिन् हव्या जुहोतन स्वाहा। इदमग्नये–इदन्न मम!!1!!

ओ३म् सुसमिद्धाय शोचिषे घृंतं तीव्रं जुहोतन।
अग्नये जातवेदसे स्वाहा। इदमग्नये जातवेदसे इदन्न मम!!2!1 (दूसरी समिधा)

—यजु. 3/1–2

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

ओ३म् तन्त्वा समिद्भिरङ्गिरो घृतेन वर्द्धयामसि। यविष्ठ्य स्वाहा।
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इदमग्नयेऽङ्गिरसे–इदन्न मम!!3!! (तीसरी समिधा)

–यजु॰ 3/3

पञ्चघृताहुतयः

ओ३म् अयन्त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्धस्व चेद्ध वर्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा। इदमग्नये जातवेदसे इदन्न मम!!1!! (इस मन्त्र को पाँच बार पढ़कर पाँच घृताहुति दें)

जल प्रसेचन

ओ३म् अदितेऽनुमन्यस्व। पूर्व दिशा में– (दक्षिण से उत्तर की ओर)
ओ३म् अनुमतेऽनुमन्यस्व। पश्चिम दिशा में– (दक्षिण से उत्तर की ओर)
ओ३म् सरस्वत्यनुमन्यस्व। उत्तर दिशा में– (पूर्व से पश्चिम की और

गोभिलगृह्य 1/3/1–3

ओ३म् देव सवितः प्रसुव यज्ञं प्रसुव यज्ञपतिं भगाय।
दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतन्नः पुनातु वाचस्पतिर्वाचं नः स्वदतु।

(चारों ओर)

–यजु॰ 30/1

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आधारावाज्याहुति मंत्र

ओ३म् अग्नये स्वाहा। इदमग्नये–इदन्न मम!!

उत्तर भाग में– (पश्चिम से पूर्व की ओर)

ओ३म् सोमाय स्वाहा। इदं सोमाय इदन्न मम!!

दक्षिण भाग में– (पश्चिम से पूर्व की ओर)

ओ३म् प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापते इदन्न मम!!

मध्य भाग में– (पश्चिम से पूर्व की ओर)

ओ३म् इन्द्राय स्वाहा!! इदमिन्द्राय–इदन्न मम!!

मध्य भाग में – (पश्चिम से पूर्व की ओर)

व्याहृति मंत्र

ओ३म् भूरग्नये स्वाहा!!इदमग्नये–इदन्न मम!

ओ३म् भुवर्वायवे स्वाहा!! इदं वायवे–इदन्न मम!

ओ३म् स्वरादित्याय स्वाहा!! इदमादित्याय—इदन्न मम!

ओ३म् भूर्भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः स्वाहा!!

इदमग्निवाय्वादित्येभ्यः –इदन्न मम!!

स्विष्टकृत् आहुति

ओ३म् यदस्य कर्मणोऽत्यरीरिचं यद्वा न्यूनमिहाकरम्। अग्निष्टत् स्विष्टकृद्विद्यात् सर्व स्विष्टं सुहुतं करोतु मे। अग्नये स्विष्टकृते सुहुतहुते सर्वप्रायश्चित्ताहुतीनां कामानां समर्द्धयित्रे सर्वान्नः कामान्त्समर्द्धय स्वाहा इदमग्नये स्विष्टकृते–इदन्न मम। (केवल घृत या भात से ही आहुति दें।) शतपथ.ब्रा॰ 14/9/4/24

मौन आहुति

ओ३म् प्रजापतये स्वाहा।। इदं प्रजापतये–इदन्न मम।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज्याहुति मंत्र

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। अग्न आयूंषि पवस आ सुवोर्जमिषं च नः। आरे बाधस्व दुच्छुनां स्वाहा। इदमग्नये पवमानाय–इदन्न मम!!1!!

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। अग्निर्ऋषिः पवमानः पाञ्चजन्यः पुरोहितः। तमीमहे महागयं स्वाहा। इदमग्नये पवमानाय– इदन्न मम!!2!!

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। अग्ने पवस्व स्वपा अस्मे वर्चः सुवीर्यम्। दधद्रयिं मयि पोषं स्वाहा। इदमग्नये पवमानाय–इदन्न मम!!3!!

ऋ 9/66/19,20,21

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परिता बभूव।

यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणां स्वाहा। इदं प्रजापते–इदन्न मम!!4!!

ऋ 10/121/10

अष्टाज्याहुति मंत्र

ओ३म् त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेलोऽव यासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषांसि प्र मुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा।। इदमग्नीवरुणाभ्याम्–इदन्न मम!!1!!

ओ३म् सं त्वन्नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ। अव यक्ष्व नो वरुणं रराणो वीहि मृळीकं सुहवो न एधि स्वाहा।। इदमग्नीवरुणाभ्याम्–इदन्न मम!!2!!

ऋ 4/1/4,5

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओं इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय। त्वामवस्युरा चके स्वाहा।
इदं वरूणाय—इदन्नमम

ओ३म् तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः।
अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशंस मा न आयुः प्र मोषीः स्वाहा।। इदं
वरूणाय इदन्न मम!!4!!

ओ३म् ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः।
तेभिर्नोऽद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा!!
इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यः
इदन्न मम!!5!!

ओ३म् अयाश्चाग्नेऽस्यनभिशस्तिपाश्च सत्यमित्वमयासि। अया नो
यज्ञं वहास्यया नो धेहि भेषजꣳ स्वाहा।। इदमग्नये अयसे—इदन्न
मम!!6!!

ओ३म् उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं विमध्यमं श्रथाय। अथा वयमादित्य
व्रते तवानागसोऽदितये स्याम स्वाहा!! इदं वरूणायाऽऽ—दित्यायाऽदितये
च—इदन्न मम !!7!!

ओ३म् भवतन्नः समनसौ सचेतसावरेपसौ! मा यज्ञꣳ हिंꣳ सिष्टं
मा यज्ञपतिं जातवेदसौ शिवौ भवतमद्य नः स्वाहा। इदं
जातवेदोभ्याम्—इदन्न मम !!8!!

प्रातःकालीन मंत्र

ओ३म सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा !!1!!

ओ३म् सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा !!2!!

ओ३म् ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा !!3!!

ओ३म् सजूर्देवेन सवित्रा सजूरुषसेन्द्रवत्या जुषाणः सूर्यो वेतु स्वाहा !!4!!

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओ३म् अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा !!1!!

ओ३म् अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा !!2!!

ओ३म् अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा!! (मौन आहुति)

ओ३म् सजूर्देवेन सवित्रा सजूर्रात्र्येन्द्रवत्या। जुषाणो अग्निर्वेतु स्वाहा !!4!!

सामान्य–यज्ञ

ओ३म् भूरग्नये प्राणाय स्वाहा!!इदमग्नये प्राणाय–इदन्न मम!!1!!

ओ३म् भुवर्वायवेऽपानाय स्वाहा!! इदं वायवेऽपानाय इदन्न मम!!2!!

ओ३म स्वरादित्याय व्यानाय स्वाहा!! इदमादित्याय व्यानाय–इदन्न मम!!3!!

ओ३म् भूर्भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः स्वाहा।। इदमग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः–इदन्न मम!!4!!

ओ३म् आपो ज्योतीरसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरों स्वाहा !!5!!

ओं यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते।
तया मामद्य मेधयाऽग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा। यजु॰32/14

ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव! यद् भद्रं तन्न आसुव स्वाहा!!7!!

ओ३म् अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्। युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम स्वाहा!!8!!

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूर्णाहुति मंत्र

ओ३म् सर्व वै पूर्णꣳ स्वाहा। (तीन बार)

शान्ति–पाठ

ओ३म् द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वꣳ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि। ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।

राष्ट्रीय–प्रार्थना

ओ३म् आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामाराष्ट्रे राजन्यः शूरऽइषव्योऽतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढाऽनड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्ताम् योगक्षेमो नः कल्पताम्।।

मंगल कामना

तेजोऽसि तेजो मयि धेहि। वीर्यमसि वीर्यं मयि धेहि।
बलमसि बलं मयि धेहि। ओजोऽसि ओजो मयि धेहि।
मन्युरसि मन्यु मयि धेहि। सहोऽसि सहो मयि धेहि।।

सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःख भाग्भवेत्।।
त्वमेव माता च पिता त्वमेव त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।।
त्वमेम विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देव देव।।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओम् अग्नये स्वाहा। ओं सोमाय स्वाहा। ओम् अग्नीषोमाभ्यां स्वाहा। ओं विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा। ओं धन्वन्तरये स्वाहा। ओं कुह्वै स्वाहा। ओम् अनुमत्यै स्वाहा। ओं प्रजापतये स्वाहा। ओं द्यावापृथिवीभ्यां स्वाहा। ओं स्विष्टकृते स्वाहा।

प्रातः कालीन मन्त्र

प्रातरग्निं प्रातरिन्द्रं हवामहे प्रातर्मित्रावरुणा प्रातरश्विना।
प्रातर्भगं पूषणं ब्रह्मणस्पतिं प्रातस्सोममुत रुद्रं हुवेम!!1!!
प्रातर्जितं भगमुग्रं हुवेम वयं पुत्रमदितेर्यो विधर्ता।
आध्रश्चिद्यं मन्यमानस्तुरश्चिद्राजा चिद्यं भगं भक्षीत्याह!!2!!
भग प्रणेतर्भग सत्यराधो भगेमां धियमुदवा ददन्नः।
भग प्र णो जनय गोभिरश्वैर्भग प्र नृभिर्नृवन्तः स्याम!!3!!
उतेदानीं भगवन्तः स्यामोत प्रपित्व उत मध्ये अह्नाम्।
उतोदिता मघवन्त्सूर्यस्य वयं देवानां सुमतौ स्याम!!4!!
भग एव भगवाँ अस्तु देवास्तेन वयं भगवन्तः स्याम।
तं त्वा भग सर्व इज्जोहवीति स नो भग पुर एता भवेह!!5!!

ऋ॰ म॰ 7। सू॰ 4

भोजन समय का मन्त्र

ओ३म अन्नपतेऽन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिणः।
प्र प्रदातारं तारिष ऊर्जं नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे।।

यजु॰ 11/8

हे अन्न देने वाले स्वामी! हमें पुष्टिकारक अन्न दीजिये अन्नादि दान करने वालों को खूब बढ़ाइये। हमारे दो पग वाले मनुष्यादि तथा चार पग वाले पशुओं के लिए बल कार

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्न प्रदान कीजिये।

जन्मदिवस का मन्त्र

ओ३म् उप प्रियं पनिप्नतं युवानमाहुतिवृधम्।
अगन्म बिभ्रतो नमो दीर्घमायुः कृणोतु मे।।

अभर्व 7/32/1

हे प्रिय स्तुति योग्य ईश्वर! मेरी दीर्घ आयु करो। आज जैसे मैं आहुति से इस यज्ञ की अग्नि को बढ़ा रहा हूं, मैं सात्विक अन्न भक्षण करके यौवन को प्राप्त करु और अपने जन्मदिन निरन्तर मनाता रहूं।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रार्थना

असतो मा सद् गमय!
तमसो मा ज्योतिर्गमय!!
मृत्योर्माऽमृतं गमय!!

हे सर्वाधार, सर्वान्तर्यामिन् परमेश्वर! तुम अनन्तकाल से अपने उपकारों की वर्षा किये जाते हो। प्राणि–मात्र की सम्पूर्ण कामनाओं को तुम्हीं प्रतिक्षण पूर्ण करते हो। हमारे लिए जो कुछ शुभ व हितकर है उसे तुम बिना माँगे ही स्वयं हमारी झोली में डालते जाते हो। तुम्हारे आंचल में अविचल शान्ति तथा आनन्द का वास है। तुम्हारी चरण शरण की शीतल छाया में परम तृप्ति है, शाश्वत सुख की उपलब्धि है तथा सब अभिलषित पदार्थों की प्राप्ति है।

हे जगत्पिता परमेश्वर! हममें सच्ची श्रद्धा तथा विश्वास हो। हम तुम्हारी अमृतमयी गोद में बैठने के अधिकारी बनें। अन्तः करण को मलिन बनाने वाली स्वार्थ तथा संकीर्णता की सब क्षुद्र भावनाओं से हम ऊँचे उठें। काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या, द्वेष इत्यादि कुटिल भावनाओं तथा सब मलिन वासनाओं को हम दूर करें। अपने हृदय की आसुरी प्रवृत्तियों के साथ युद्ध में विजय पाने के लिए हम तुम्हें पुकारते हैं और तुम्हारा आंचल पकड़ते हैं।

हे परम पावन प्रभु! हममें सात्विक वृत्तियाँ जागरित हों। क्षमा, सरलता, स्थिरता, निर्भयता, अहंकारशून्यता इत्यादि शुभ भावनाएँ हमारी सम्पत्ति हों। हमारा शरीर स्वस्थ तथा परिपुष्ट हो, मन सूक्ष्म तथा उन्नत हो, आत्मा पवित्र तथा सुन्दर हो। तुम्हारे संस्पर्श से हमारी सारी शक्तियाँ विकसित हों। हृदय दया तथा सहानुभूति से

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection

भरा हो। हमारी वाणी में मिठास हो तथा दृष्टि में प्यार हो। विद्या और ज्ञान से हम परिपूर्ण हों। हमारा व्यक्तित्व महान् तथा विशाल हो।

अन्त में हो प्रभो! तुमसे यही विनय है कि फल फूलों से लदा पेड़ जैसे झुक जाता है वैसे हम भी सब समृद्धियों और सफलताओं सहित तुम्हारे चरणों में झुक जायँ, तुमसे पाई हुई सब शक्तियों तथा ऐश्वर्यों को तुम्हारी प्रजा में वितरण करें। अपने विशुद्ध जीवन से हम जगत् में पवित्रता, मधुरता तथा आनन्द का प्रसार करें, दुःखितों की सेवा करें, पतितों की सहायता करें तथा तृषितों की प्यास बुझाने का प्रयास करें। जनता जनार्दन की इस सेवा से हमारा स्वार्थ तथा अहंकार दूर हो। अहंकार–रूपी दीपक के बुझने पर ही अमर आत्मा के दर्शन तथा सर्वत्र फैले हुए तुम्हारे दिव्य प्रकाश का साक्षात् होता हैं

हे प्रभो! अपने आशीर्वादों की वर्षा करो। दीनातिदीनों के मध्य में विचरने वाले तुम्हारे चरणाविन्दों में हमारा जीवन अर्पित हो इसे अपनी सेवा में लेकर हमें कृतार्थ करो।

कृपा करो! इस सुन्दर वेला में यही याचना है पिता स्वीकार करो! स्वीकार करो!

✡✡✡✡✡

ओं भूर्भुवः स्वः।
तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात्।।

हे सविता देव! पृथ्वीलोक, अंतरिक्षलोक तथा द्युलोक आदि लोक–लोकान्तरों की तुम सृष्टि करने वाले हो। चराचर विश्व के

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एकमात्र तुम्हीं अधिपति हो। हम तुम्हारे अमृतपुत्र हैं। इस या उस देश के हम अधिवासी नहीं। संपूर्ण विश्व हमारा घर है। पृथ्वी, अन्तरिक्ष तथा द्युलोक आदि लोक लोकान्तर इस राजमहल की दीवारें हैं। सूर्य, चन्द्र और ग्रह–नक्षत्रों से जड़ित विस्तृत नीलाम्बर इसकी छत हैं।

हे परम पिता! अपने पुत्रों को, आनन्द विहार के लिए, तुमने कितना विस्तृत आँगन दिया है! हम मिल जुलकर खेलें और मोद–मंगल मनावें। छोटी छोटी सीमाएँ और अपने पराये के भेद की दीवारें खड़ी करके हम बँध न जावें। असंख्य नक्षत्रों से जड़ित नील नभो–मंडल तक हमारा चित्त विचरण करे। मानवमात्र के प्रति स्नेह और आत्मीयता की धड़कन से हमारा हृदय स्पंदित हो। विशाल आँगन मधुर मुस्कानों और क्रीड़ा–कल्लोलों से गूँज उठे, पृथ्वी पर स्वर्ग उतरे।

हे सृष्टिकर्ता! तुमने मानव को खूब महिमामंडित किया है। इसके अन्तर को अनुराग से भर दिया है, मस्तिष्क को बुद्धि से अभिषिक्त किया है। तुम्हारे दिये प्रकाश से हम भले बुरे को परख सकते हैं, अनुराग से सब को अपना बना सकते हैं।

हे सवितादेव! प्रज्ञा के रूप में तुमने अपने तेजस्वी स्वरूप का प्रतीक मानव–मन में निहित किया है। यह अनमोल भेंट देकर तुमने संसार में भटकने के लिए हमें छोड़ नहीं दिया। सत्य में श्रद्धा के रूप में हमारे हृदयों में विराजकर तुम प्रतिक्षण प्रेरणा दे रहे हो। सिर्फ सन्मार्ग–प्रदर्शन ही नहीं, उस पर चलने को भी तुम प्रोत्साहित करते हो। तुम्हारी इन प्रेरणाओं और प्रोत्साहन से, हम तुम्हारे ज्ञान, तुम्हारे कर्म और तुम्हारे वरेण्यरूप का प्रत्यक्ष अनुभव करते हैं।

हे विराट्! मानव के अन्तःकरण में ही नहीं, चराचर के भीतर

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
भी तुम्हारा ही स्पंदन है। अणु–अणु में जो गति और चेष्टा है, उस सब के तुम ही अधिपति हो। जगत का समस्त हर्षोल्लास तुम्हारी इच्छा का खेल है। सब कहीं तुम्हारा ही दिव्य–संगीत और आनन्द–नर्तन है।

हे वरेण्य! हम तुम्हारा संगीत सुनें, नर्तन का आनन्द लें। सब ओर काम करती तुम्हारी शक्ति का साक्षात्कार करें। तुम्हारी प्रेरणा की धड़कन सुनें; समस्त भूमण्डल को मंगल की ओर ले चलने वाले तुम्हारे धर्ममय रूप का निकट से दर्शन करें।

हे आनन्दसिन्धो! तुम्हारी इच्छाएँ आदेश और प्रेरणाओं को समझते हुए भी उनके अनुरूप आचरण करने का हममें पर्याप्त बल नहीं है, यही हमारी सबसे बड़ी कठिनाई है। काम (भोगपरायणता, स्वार्थ) क्रोध, लोभ आदि आन्तरिक दुश्मन, सुख और सफलता शीघ्र दिला देने की आशा दिलाकर, हिंसा, द्रोह और असत्य (अधर्म) के मार्ग पर हमें बलपूर्वक ले चलते हैं। इनके पीछे चल कर सांसारिक सफलता तो प्राप्त होती है, किन्तु जीवन चरितार्थता और चित्त की शान्ति से हम वंचित हो जाते हैं। इस मुसीबत में हम तुम्हारी शरण आते हैं; कुबुद्धि के नाश के लिए और मोहजाल को भस्म करने के लिए तुम्हारे पापहारी रूप का अधिकाधिक स्मरण करते हैं।

हे तेजोमय! धर्म की स्थापना करने वाला तुम्हारा दीप्तिमन्त रूप हमारी आँखों में झूले। पृथ्वी के कण–कण में श्री और शक्ति का आधान करने वाली तुम्हारी विभूति हमारी पलकों में समाये। पंगु को गिर–लंघन में समर्थ बनाने वाली तुम्हारी लीला, सर्वत्र आनन्दप्रसार करने वाली तुम्हारी कला, तथा पृथ्वी और नभ में फैली हुई तुम्हारी रूप–छटा, हमारी आत्मा में भर–भर जाय।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

हे विराट्! तुम्हारी रूप–सुधा के पान से हमारे अन्तर की स
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कुरूपता दूर हो। नस–नस में नवजीवन का संचार हो। निराली मस्ती हो, मृत्यु दूर हो, अमरत्व प्राप्त हो। सम्पूर्णरूप से रूपान्तर हो। तुम्हारी तरह हम भी प्रेममय, धर्ममय और तेजोमय बनें। अल्प न रहें 'भूमा' बनें। बन्धन टूटें, 'बृहत्' बनें। संशय छिन्न हों, 'शिव' बनें द्वैत (विरोध वैषम्य) न रहे, आनन्द का कभी अन्त न हो।

हे सवितादेव! तुम में हम में पूर्ण एकता हो, सामंजस्य हो। हृत्तंत्री के तार परस्पर मिले हों। तुम सुर छेड़ो, हम राग–रागनियाँ सुनें। तुम ताल दो, हम नृत्य का उपहार दें। तुम प्रेरणा दो, हम प्रवृत्ति दें। तुम दृष्टि दो, हम स्वर्गीय सृष्टि रचें।

रथ का संचालन स्वयं तुम्हारे अमृतमय हाथों से हो, इस से बढ़कर सौभाग्य और आनन्द क्या हो सकता है! क्या हो सकता है!!

हे नाथ दया करो! कृपा करो! प्रेरणा दो! यही प्रार्थना है पिता स्वीकार करो स्वीकार करो।

ओं त्वं हि नः पिता वसो
त्वं माता शतक्रतो बभूविथ।
अधा ते सुम्नमीमहे।।

हे सकल संसार के उत्पन्न करने वाले परम सुख–दायक परमेश्वर! तुम्हीं हम सबके सच्चे पिता हो। तुम से बढ़कर हमारा कोई रक्षक तथा पालक नहीं। हमारे जन्म देने वाले पिता भी कई बार हमारी रक्षा करने में असमर्थ हो जाते हैं, उस समय तुम्हीं हम

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
सब की पुत्रों के समान रक्षा तथा पालना करते हो। हमारी रक्षा के लिए तुमने अपनी रक्षक भुजाएँ सब जगह फैलाई हुई हैं। सैकड़ों संकटों से घिरे होने पर, जब बचने की कोई आशा नहीं होती, उस समय भी तुम्हारी प्रेमभरी भुजाएँ हमें विपत्तियों से उबारती हैं। पिता! तुम्हारा प्रेम अनन्त है।

हे जगत् पिता परमेश्वर! तुम्हीं हम सबकी माता हो। तुम्हारे स्नेह तथा दया का कोई अन्त नहीं। तुम सर्वान्तर्यामी हो। हमारे प्रत्येक दोष और अवगुणों को तुम जानते हो। परन्तु फिर भी स्नेहमयी माता के समान तुम हमसे प्यार करते हो। हमारे दोषों तथा अवगुणों को जानकर तो कोई भी हमें अपने पास बैठाना पसन्द नहीं कर सकता। परन्तु तुम हमारे हृदय की सब कलुष भावानाओं को जानते हुए भी, माता जैसे मैले कुचैले और धूलि से लिपटे अपने बच्चों को अपनी गोद में बिठलाती है, पुचकारती है और प्यार करती है, उसी प्रकार तुम भी हमें अपनी अमृतमयी गोद में बिठाते हो, हमसे प्यार करते हो, शक्ति और सान्त्वना देते हो।

हे जगज्जननी! तुम धन्य हो! हम सबके पालन करने वाले सच्चे पिता, तुम धन्य हो! तुम्हारे सिवाय हमारे लिए स्तुत्य कौन है? हम सब अपना प्रेम तुम्हें अर्पण करते हैं, तुम्हारी महिमा के गीत गाते हैं और कृतार्थ होते हैं।

हे परमपिता परमेश्वर! पुत्र की तरह तुम्हारी आज्ञाओं का पालन करना ही हमारा परम कर्त्तव्य है। इस सृष्टिरूपी महाकाव्य द्वारा तुम्हारी आज्ञाओं को हम जानें और उनका पालन करते हुए तुम्हें प्रसन्न करें। तुम्हारी प्रीति, तुम्हारी सुमति और तुम्हारे आशीर्वादों को प्राप्त करने के लिए, हम सदा सत्य का ही चिन्तन करें, सत्य का

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

ही आचरण करें, और तुम्हारे सब अमृत-पुत्रों से प्रीति करें।
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हे जगत् पिता! हम अबोध बालक हैं। अपने भले बुरे का हमें सम्यक् ज्ञान नहीं। तुम्हीं जानते हो कि हम बच्चों का कल्याण किसमें है। इसलिए हम तो तुमसे सिर्फ कल्याण की याचना करते हैं, सिर्फ तुमसे तुम्हारी प्रीति और सुमति माँगते हैं। हम सब तुम्हारे पुत्र हैं। हमारे लिए जो कुछ शुभ है, वह हमें दो। तुम सदा हमारा कल्याण ही करते हो, हमें श्रद्धा तथा अटल विश्वास दो पिता!

हे पालक पिता! हे जगज्जननी! तुम्हारी सुखद और स्नेह भरी गोद में हमारी सब कामनाएँ पूर्ण हों, हम निर्भय हों, मोद–मग्न हों। यही अभिलाषा हैं यही कामना है पिता! स्वीकार करो। स्वीकार करो।

वयं सोम व्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः।
प्रजावन्तः सचेमहि।। (ऋ० 10 | 57 | 6)

सब प्रजाओं में रमण करने वाले परमात्मन्! तुम्हीं हम सबके सच्चे पालक तथा पोषक हो। तुम्हारी शरण में पहुँच कर भक्तजन निर्भय हो जाते हैं। तुम्हारी शरण में पहुँचने से ही हमारी सब कामनाएँ पूर्ण होती है। तुम्हारी शरण के सामने संसार के सब सुख, सब आश्रय और सब शरण अत्यन्त तुच्छ हैं। इसलिए हे प्रभो! हम सब तुम्हारी शरण में उपस्थित होते हैं।

हे जगज्जननी! तुम्हारी सुखद गोद में स्थान पाने के लिए हम तुम्हारे व्रतों का पालन करतें हैं। दिन रात परोपकार किये जाना

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
तुम्हारा महाव्रत है। आठों पहर, हर घड़ी और हर पल, तुम हमारे न समझने पर भी, हम पर उपकार कर रहे हो।

तुम्हारे रचे हुए पदार्थ भी परोपकार के व्रत का निर्देश कर रहे हैं। सूर्य और चन्द्र, प्राणिमात्र के भले के लिए बिना कुछ चाहते हुए, दिन रात प्रकाश किये जाते हैं। विविध प्रकार के फूल, बिना स्वार्थ के, अपनी मीठी सुगन्ध से सब स्थानों को सुरभित किए जाते हैं। वर्षा की नन्हीं–नन्हीं बूँदें, नाना प्रकार की औषधियों और वनस्पतियों की उत्पत्ति के लिए पृथ्वी पर अपनी आहुतियाँ दे रही हैं। यह विस्तृत पृथ्वी हे प्रभो! तुम्हारी यज्ञस्थली है। यहाँ हर पदार्थ पर–उपकार में लगा है। परोपकार करना तुम्हारा व्रत है।

हे परम पिता परमात्मन्! इस यज्ञस्थली में, हम ही एक ऐसे हैं जो तुम्हारे व्रत का भंग करते हैं। हमारे प्रत्येक कार्य के पीछे स्वार्थ छिपा है। जो भी हम कार्य करते हैं। स्वार्थ के लिए; अपने स्वार्थ की कलुषित भावनाओं से, हम तुम्हारे यज्ञ को दूषित करते हैं।

हे प्रभो! तुम्हारी शरण और कल्याण के चाहने वाले हम, दृढ़संकल्प के साथ परोपकार के तुम्हारे व्रत में दीक्षित हों। तुम्हारे व्रत का पालन करने वाले, तुम्हारी सर्वशक्तिमान् शरण में पहुँच जाते हैं, जहाँ किसी प्रकार के भय अथवा संकट का प्रवेश ही नहीं। तुम्हारी शरण तो एक आनन्द और मंगल का मूल है।

हे परमात्मन्! तुम्हारी शरण और तुम्हारा अमूल्य प्रेम पाने के लिए एकमात्र तुम्हारे व्रत के पालन की जरूरत है। इसलिए हमारी बार–बार यही प्रार्थना है, कि हमारी स्वार्थ की तुच्छ भावनाओं को दूर कीजिए। हम सब प्राणियों के साथ प्रेम करें। सबको मित्र की

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

दृष्टि से देखें। सब के भले में हम अपना भला समझें। हमारे हृदय उदार, विशाल तथा सहानुभूतिपूर्ण हों, जिससे कि हम प्रत्येक कार्य को शुद्ध परोपकार की भावना से कर सकें।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हे प्रभो! तुम्हारी कृपा और तुम्हारे उपकारों को स्मरण कर, हम सजल नयन हो, तुम्हारे चरणों में मस्तक झुकाते हैं। अपनी शरण में हमें स्थान दो, हमारी यहीं विनय हैं। पिता स्वीकार करो।

✡✡✡✡✡

दृते दृंह मा, ज्योक्ते संदृशि जीव्यासम्।
ज्योक्ते संदृशि जीव्यासम्।।

यजु॰ 36 । 19

हे सर्वशक्तिमान्, परमदृढ़ परमेश्वर! मुझे अपने समान दृढ़ तथा शक्तिमान् बनाओ। हे जगदीश्वर! तुमसे पाया हुआ जीवन, मैं तुम्हारी देख–रेख में बिताना चाहता हूँ। मुझे यह सदा स्मरण हो कि तुम मुझे देखते हो। तुम्हारी स्मृति जागृत रखते हुए और तुम्हें निरन्तर अपने सामने अनुभव करते हुए मैं पूर्ण आयु व्यतीत करूँ। प्रत्येक क्रिया और चेष्टा करते हुए मुझे यह अनुभव हो कि तुम मुझे देख रहे हो।

हे परमात्मन्! तुम्हारी देख–रेख में जीने से काम, क्रोध, लोभ, मोह, शोक आदि कोई भी विकार, जो आयु को क्षीण करते हैं, अपना कुप्रभाव नहीं डाल सकते। आयु को क्षीण करने वाले इन कुप्रभावों से बचने से दीर्घ–जीवन स्वयं ही प्राप्त हो जाता है। इसलिए मेरी तो यही चाहना है, कि प्रतिक्षण तुम्हारी देख–रेख का अनुभव करते हुए, अपने कर्तव्य कर्म करता हुआ मैं जी सकूँ।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हे परमात्मन! तुम मेरे प्राणों के प्राण तथा जीवन–सार हो। फिर भी सांसारिक झमेलों में उलझकर मैं तुम्हें बहुधा भूल जाता हूँ। कभी अहंकारवश और कभी निर्बलतावश, कभो सुख में और कभी दुःख में, मुझसे तुम ओझल हो जाते हो। तुम्हें भूलकर मैं पाप का आचरण करता हूँ। प्रलोभनों और कलुष भावनाओं के जाल में फँसता हूँ। अपने आप को दीन–हीन तथा दुःखी अनुभव करता हूँ। इसलिए हे प्रभो! मेरी तो यही प्रार्थना है कि मुझे दृढ़ बनाओं, मुझे श्रद्धा तथा अटल विश्वास दो, जिस से कि मैं तुम्हें कभी भूलूँ नहीं, तुम्हारी सर्वव्यापकता का भाव मेरे अन्तः करण में सदा जागृत रहे।

हे सर्वशक्तिमान् प्रभु! तुम्हारी अध्यक्षता में रहना और दीन–हीन होना सम्भव नहीं। तुम्हारी कृपा से मेरी सब कामनाएँ प्रतिक्षण पूर्ण होती रहती हैं। मेरी तो तुम से यही याचना है, कि मैं तुमसे कभी विमुख न होऊँ। मैं सदा यह अनुभव करूँ, कि तुम सब जगह व्याप रहे हो, सदैव तुम्हारी प्रेममयी दृष्टि और करूणाभरा हाथ अपने ऊंपर देखूँ। अपने कर्तव्य पालन द्वारा तुम्हारी प्रसन्नता और प्रेम प्राप्त कर सकूँ।

✡✡✡✡✡

अग्ने नय सुपथा राये अस्मान्
विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।
युयोध्यस्मत् जुहुराणम् एनो
भूयिष्ठान्ते नम उक्तिं विधेम।।

हे सच्चिदानन्दस्वरूप परमात्मन्! इस संसार के सम्पूर्ण पदार्थों को तुमने हम सबके सुख, संवृद्धि तथा उन्नति के लिए रचा है। तुम्हारे दान तथा उपकारों का कोई अन्त नहीं। तुम्हीं हमारे सच्चे

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
पिता, माता तथा सखा हो। हे प्रभो! तुम्हारी कृपा तथा करुणा का स्मरण करते हुए, हम सब श्रद्धा और भक्तिभाव से तुम्हारे चरणों में प्रणाम करते हैं।

सब प्रकार के बलों के स्वामिन्! हमें बल दो। हमारा शरीर स्वस्थ हो, सुन्दर और बलिष्ठ हो। हमारे प्रत्येक अंग में शक्ति हो। हमारा जीवन नियमित हो, जिस से कि हम सौ वर्ष की पूर्ण आयु प्राप्त करें। हे परमात्मन्! हम सौ वर्ष तक सुनते रहें, सौ वर्ष तक देखते रहें, सौ वर्ष तक उत्तम उत्तम कार्य करते रहें, और सौ वर्ष तक तुम्हारे गुणगान गाते रहें।

हे सर्वज्ञ परमेश्वर! बाल्यकाल का समय अत्यन्त मूल्यवान है। हम इसे खेल–कूद में यों ही न गवाँ दें। इस समय की शिक्षा, परिश्रम और पुरुषार्थ पर ही हमारा उज्ज्वल भविष्य आश्रित है। इसलिए हम अपने समय का सदुपयोग करें। खूब शिक्षा प्राप्त करके और अत्यधिक पुरुषार्थ करें। हम कभी आलस्य और प्रमाद न करें। विद्या की प्राप्ति में हे परमात्मन्! हम कभी सन्तोष न मानें। अनेक प्रकार के ज्ञान के संचय द्वारा हम अपने मन को उन्नत, पवित्र तथा विकसित बनावें।

हे शुद्ध पवित्र परमात्मन्! हम सबके साथ प्रीति–पूर्वक वर्ताव करें। हम किसी से ईर्ष्या तथा द्वेष न करें। हमारे व्यवहार में स्वार्थ तथा छल कपट न हो। यह समझते हुए कि सत्य से बढ़कर कोई पुण्य नहीं, और असत्य से बढ़कर कोई पाप नहीं, हम सदा सत्य ही बोलें। कितनी ही मुसीबत और संकट क्यों न आवें, हम कभी भी सत्य को न छोड़ें। हम वीर, तेजस्वी तथा निर्भय हों। हे प्रभो! हममें विनय, सरलता तथा सादगी हो। माता, पिता तथा गुरुजनों का हम

CC-0 In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सदा कहना मानें, तथा उन्हें सब प्रकार से सदा प्रसन्न रखें।

हे प्रभो! हमारी वाणी में मिठास हो, हमारे उठने बैठने में मिठास हो, हमारे व्यवहार में मिठास हो, हमारे सम्पूर्ण जीवन में मिठास हो, जिसमें हम सबके प्यारे बनें। हे परमात्मन्! सबसे प्रेम करने से तथा सबके प्यारे बनने से, तुम हमसे अत्यधिक प्रसन्न होते हो और हम पर आनन्द की वर्षा करते हो।

अन्त में हे प्रभो! तुमसे यही विनय है, कि हमारा जीवन पवित्र और ज्योतिर्मय हो, जिससे हम तुम्हारा प्रेम, तुम्हारी कृपा और तुम्हारा आनन्द प्राप्त कर सकें।

✡✡✡✡✡

जन्मदिवस के उपलक्ष्य में

हे प्राणों के प्राण! दुखविनाशक! सुखस्वरूप! आनन्दघन! हम सब के रोम रोम में बसने वाले ओ३म्। हम सब आपकी दिव्यता, आपकी शक्तिमत्ता आपकी सर्वज्ञता, कणकण में व्याप्त होनी वाली आपकी व्यापकता का अनुभव करते हैं। पृथिवी, आकाश, बहती हुई नदियाँ, सूर्य की चमक, चाँद की चाँदनी, झिलमिलाते तारे, वायु के झौंके, गरजते बादल, कड़कती बिजली, मोरों का नर्त्तन, कोयल की मीठी गूंज आदि आपके अस्तित्व और आपका ही आभास दे रहे हैं। ऐसी महान् सर्वोपरि सत्ता के सामीप्य और सान्निध्य का अनुभव करने के लिए आज हम सब यहाँ एकत्रित हैं।

आज हमारे पुत्र.......का जन्मदिवस है। इसने आज मानवजीवन के ....वर्ष बिता दिये हैं। आज के दिन ही आपने इस सन्तान का सम्बन्ध हमारे साथ जोड़ा था। आप का बहुत बहुत धन्यवाद कि

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपने हमें सन्तान सुख दिया और इसके लिए भी हम आपके बहुत कृतज्ञ हैं कि आपने सर्वथा स्वस्थ और सुन्दर सन्तान हमारी झोली में डाली। आपसे प्रार्थना और याचना है कि हे प्रभो! यह सन्तान अपने मानव जीवन के लक्ष्य को समझने वाली हो। यह धार्मिक, सत्यवादी, ईमानदार, नेक, प्रभुविश्वासी, आस्तिक, दयालु, परोपकारी, याज्ञिक, स्वाध्याय शील और सत्संगी हो। आपकी प्रेरणा को सुनने वाली हों। यह हर कदम पर प्रगतिशील हो। ऐसा कार्य करने वाली हो, जिससे इसका यशस्वी जीवन हो। इसके कार्यों से इसके माता, परिवार जन तथा कुल प्रकाशित हों।

हे प्रभो! हम नादान हैं, नासमझ हैं, हम में भी ऐसा विवेक, बुद्धि व सामर्थ्य दो, जिससे हम इसे उत्तम मार्गदर्शन दे सकें। इसका अंग प्रत्यंग स्वस्थ रहे। अपनी इन्द्रियों से ये दुखियों का दुःख दूर करे।

इस सन्तान को अपनी प्रेरणा तथा अपने स्नेह सुधा से सिञ्चित कर दो। इनकी इन्द्रियाँ आपकी अर्चना के फूल बन जाएँ। इनकी समस्त शक्तियां आपकी पूजा के नैवेध बन जाएँ इस सन्तान की समस्त बागडोर आपको समर्पित है। ये सन्तान ऐसे कार्म करें जिससे इन का जन्म लेना और हमारा जन्म देना सार्थक हो। इस वेला में यही प्रार्थना है, यही कामना है, पिता! स्वीकार करो, स्वीकार करो।

(विवाह समय)

हे सर्वहितकारी, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वगुणनिधान दाता! आपकी कृपा असीम है। मैं किस मुख से उसका बखान करूँ, किस मन से उसकी कल्पना करूँ, वाणी में शक्ति नहीं, और मन की पहुँच नहीं।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
बुद्धि परिश्रान्त होकर रह जाती है, काँपती है। जिसके सम्मुख अहंकार लज्जित है। भगवान हमारा मंगलकार्य भी तभी मंगल है जब इसका हर अंग और सम्बन्ध आप मंगलों के मंगल रूप से जुड़ा रहे और हमारा यह दोनों का सम्बन्ध, यह शरीर, परिवार, घर हमारे पवित्र बनाने का, निष्काम बनने का उपकरण बने। साध्य न बनकर साधना बने। हमारे मानसिक, शारीरिक, विकारों का प्रतिकार बनकर हमें शांति व सुख की पराकाष्ठा तक पहुँचानेवाला सिद्ध हो। प्रभु! हमारा यह पवित्र संयोग हमें पवित्र लक्ष्य की ओर ले जानेवाला पाठ बनें।

हे सर्वसुखों के स्वामी! आपकी रचना में आपकी सब भौतिक शक्तियाँ, प्रत्येक बुद्धि रखनेवाले मानव के सम्मुख मर्यादा व नियमबद्ध रहने का व्याख्यान दे रही है, जिसको इन भौतिक नेत्रों से देखते हुए भी अन्दर के नेत्रों पर तथा मन पर कोई आवरण है, जो ग्रहण करने में रोक बन रहा है। इस रोक को मुझे भी मर्यादा व नियम में रहने का उत्तम गुण व शक्ति देकर दूर करा दो ताकि इस सम्बन्ध को हम भी जीवन के नियम व मर्यादा के अन्दर लाकर दीर्घजीवी बनें और अपने सब शरीर की शक्तियों की पूर्णरूप से रक्षा करते हुए अपनी सन्तानों को पवित्र व बलवान बनाकर संसार में लाएँ जो तेजस्वी और ओजस्वी बनकर कुलों का यश बढ़ानेवाले, माता-पिता, गुरु, सज्जन और सन्तों के सेवक और दीन-दुखियों, अज्ञानियों के सुधारक, पालक बनकर आपका और अपने पुरखों का आशीर्वाद पाएँ। हमारा यह संयोग मानसिक विकारों पर जीत पाने का सोपान बने और अपनी सांसारिक कामनाओं को पवित्र मार्ग पर लाकर निष्काम स्थिति को सिद्ध करें और परस्पर सच्चे आदर्श गृहस्थी बने। मर्यादा के अन्दर रहकर उत्तम सन्तति को जन्म देकर पितृऋण को चुकाएँ। अग्निहोत्र आदि के सेवन से देवताओं का सत्कार पूजा करके उनके

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऋण से उऋण हों और हम इस गृहस्थ मार्ग से लक्ष्य की ओर जाने के लिए मिलकर महान् यत्न करें। भगवान जब–जब भी हमारे अन्दर राक्षसी वृत्तियों के वेग जागृत होने लगें, तब–तब ही हम उन वेगों का, अपनी दृढ़ता का, अपनी जीत का, अपने उत्थान का साधन बना कर उसकी अधीनता को त्याग कर, उसे अपने वश में करें और अपनी विजय का उपकरण बनाएँ। गृहस्थ जीवन के सब कर्त्तव्यों को वेद शास्त्र से अंगीकार कर सात्विक दान द्वारा हम अपने दयालु स्वभाव की पूजा करें, आराधना करें। प्राणियों पर दया रखकर आपके रक्षक स्वभाव का सत्कार करें। सद्व्यवहार द्वारा आपकी सत्यस्वरूपता के निकट हों। आपके न्याय के अनुकरण से अपने अन्दर आपकी भक्ति को जगाएँ। हे पिता, हमारा परस्पर का ऐसा सम्बन्ध भोग की वस्तु न बनें। अपितु संयमी होकर नियम के अन्दर रहकर व्यवहार साधन करें। अन्त में आपके चरणों में बैठ नम्रता से अपना शीश झुकाते हुए प्रार्थना करते हैं कि हमारा यह पवित्र सम्बन्ध राक्षसी नहीं, दैवी वृत्तियों को जागृत करने के लिए हो। इस व्रत को अच्छे उद्देश्य की ओर ले जाने के लिए आपके सहारे की मुख्य आवश्यकता है। शुद्धमति और आत्मबल दो कि हम इस व्रत को पूर्ण कर सकें। आपको हमारा सहस्रशः नमस्कार है।

विवाह की वर्षगाँठ पर

ओं ध्रुवाऽसि ध्रुवोऽयं यजमानोऽस्मिन्नायतने प्रजया पशुभिर्भूयात्। घृतेन द्यावा पृथिवी पूर्येथां इन्द्रस्य छदिरसि विश्वजनस्य छाया।।

हे सच्चिदानन्द! आनन्दघन! सर्वाधार! सर्वव्यापक अतिपावन!

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर्वशक्तिमन्! परमात्मन्!

यह दम्पति आज आपकी विशेष कृपा पाने हेतु आपकी स्तुतिप्रार्थना और उपासना करते हुए आपके सान्निध्य के लिए लालायित बैठे हैं। पिता! इन पर कृपा करो, अनुकम्पा करो। इन पर दया की दृष्टि करो। ये दो दूर देश के पथिक आपकी ही असीमकृपा से एक उद्देश्य हेतु परस्पर सम्बद्ध हुए हैं। इनके ज़ीवन में स्थिरता, प्रेम, एकता और अखण्डता का समावेश हो। ये एक व्रत, एक मन तथा एक विचार वाले हों। एक दूसरे का सम्मान करने वाले हों, एक दूसरे के सुख दुख के साथी हों। एक दूसरे के संकेतों को समझने वाले हों। बड़े से बड़ा संकट या सन्देह इनके जीवन में लघु दरार करने में भी कभी समर्थ न हो सके। अपने गुणों की वृद्धि करते हुए फूलों से खिलते हुए चहुँ ओर से सुगन्धि बिखेरे।

हे संसार के मूलाधार! अनादि अनुपम! ईश्वर! ये अपने गृहस्थ जीवन के वास्तविक उद्देश्य को पूर्ण करे। इनकी गृहस्थरूपी वाटिका में ऐसे पुष्प उगे जो सदाबहार और खुशबूदार हों। जिनका आकर्षण दूर दूर तक प्रसृत हों।

हे प्रभो! ये दम्पत्ति ईश्वरभक्त,-आस्तिक, धार्मिक, परोपकारी, सन्त विद्वानों की सेवा करने वाला, दानी परोपकारी व स्वाध्यायशील हो। धर्म, अर्थ और काम के साथ साथ मोक्षपथ के भी अभिलाषी हों। परिवार, समाज तथा राष्ट्र के दायित्वों को समझने वाले हों। वेदमार्ग पर चलने वाले हों। स्वाध्यायशील हों। हम सभी हृदय की गहराइयों से इन्हें शुभकामनायें अर्पित करते हैं। प्रभु से इनके लिए उत्तम स्वास्थ्य, आनन्द, दीर्घायुष्य, बल, बुद्धि व धन की प्रार्थना करते हैं।

✡✡✡✡✡

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

(स्त्रियों की ओर से)

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हे. पतियों के पति, विश्वपति आपसे, महामते, अगतिमते भगवान! मेरा करबद्ध नमस्कार है। बारम्बार नमस्कार है। भगवान! मुझे शुद्ध मति दो, कि मैं आपकी इस अद्‌भुत रचना, संसार का मन, वाणी व आचरण से हर समय सत्कार करती रहूँ। आपकी किसी भी वस्तु का दुरुपयोग कर आपकी इस रचना का निरादर न हो। शरीर बलहीन न हो। प्रभो! आपने मुझे यह श्रेष्ठ मनुष्य–जन्म दिया। उन्नति की पराकाष्ठा तक पहुँचाने का शुभावसर प्रदान किया। ये इन्द्रियरूपी शक्तियाँ और मन ऊँचे पद पर पहुँचने की साधन दिये। कुमार्ग से बचानेवाली बुद्धि दी। पिता! अब मुझे ज्ञान–बल भी दें, जिससे कि आपकी इन दी हुई शक्तियों का मन खिलौना न बनने देकर सावधानी से इनकी रखवाली करती रहूँ। यही दिन भर की, आठों याम की मेरी यह रखवाली आपकी सच्ची भक्ति का रूप धारण करे। कुसंस्कारों के बल से, प्रभाव से उठने वाली कुचेष्टाएँ मेरे से किसी प्रकार की सहायता न ले सकें। मेरा असहयोग उनको निरर्थक, व्यर्थ बनाता रहे। शरीर की सभी शक्तियाँ शुद्ध आत्मा की अनुमति से काम करें। मेरी बुद्धि को आप के ज्ञान भण्डार से बल मिलता रहे। संसार के प्रलोभन, दुर्गुण, मुझ से हार खा–खा कर दुर्बल होते रहें। सत्य व न्याय पर दृढ़ रहने के लिए मेरे अन्दर आत्मबल, मनोबल, शरीरबल का संचार करो। सत्य व शुद्ध मार्ग पर चलते हुये जो भी आपत्तियाँ, कष्ट, क्लेश, रुकावटें सम्मुख आयें, उनसे न घबरा कर दृढ़ बनी रहूँ। अपना व अपना कहे जानेवाला पुत्र, पुत्रियों आदि का यह मेरा जो परिवार है उसके सुधार करने की मुझे शक्ति दो। उनके प्रति मेरा जो –जो कर्त्तव्य हो, उसको पूरा करने का यत्न करती रहूँ। अपने परिवार को उत्तम शिक्षा से बुद्धिमान, देशभक्त, प्राणी मात्र से प्रेम

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
करनेवाला बनाने में समर्थ बनूँ। दीन–दुखियों की सहायक बनकर आपकी प्रसन्नता का लाभ करूँ। मर्यादा के अन्दर रहकर जीवन व्यतीत करूँ। मेरे भगवान मुझे व मेरे परिवार को ऐसा बल दो, दृढ़ता दो कि आपसे की गई इस प्रार्थना को सार्थक बना लूँ और आपकी प्यारी पुत्री बनकर रहूँ। यही मेरी आपसे प्रार्थना है।

ओ३म् शान्ति! शान्ति! शान्ति!!!

(बच्चों, युवकों, जरूरतमन्दों के लिए)

हे सकल जगत् के स्वामी! सबके अन्तर्यामी आपकी महिमा महान् है। आपका ही यह सब जहान है। सबके दिलों में आपका ही मान है। सब की जुबानों पर आपका ही बयान है। यह आपकी सुन्दर रचनां मनुष्य के लिए बड़ा ही साधन ज्ञान है।

हे नारायण! आपको भूलने वाला बहुत ही अनजान है। आप प्राणियों के प्राण हैं। हमारा उल्टा आचरण ही हमारा अज्ञान है। सृष्टि का एक–एक कार्य, पदार्थ आपका उत्तम व्याख्यान है। मेरे प्रभु! मुझ अज्ञान बालक के आप ही मार्ग दिखानेवाले ज्ञान की खान है। बस प्रभु! मुझे अपने भण्डार से पाँच चीजें दे दो। वह पाँच चीजें हैं–

1) पवित्र बुद्धि, (2) शूरवीरता (3) अक्रोध (4) बड़ों की सेवा, (5) ज़रूरत के मुताबिक शरीर को आहार देने का ज्ञान।

मिताहार, जिससे आपका दिया हुआ यह मेरा शरीर पोषण पाए, बलवान बने, निरोग रहे, बुद्धि पर दबाव न पड़े, बुद्धि मन्द न हो। जरूरत से अधिक लेकर आपके भण्डार से चोरी का अपराध न

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगें। बस इतना ही माँगता हूँ। आप जो कमी मुझ में देखें, उसे पूर्ण करने का ज्ञान प्रदान करें, उसको मुझसे दूर कराएँ।

मेरे नारायण! आपके भण्डार में कमियों को स्थान ही नहीं है और ये चीजें मुझे दे दो ताकि मैं आपका सच्चा पुत्र, सच्ची प्रजा बन जाऊँ। आपका सच्चा पुत्र बनने के लिए अपने आचरण द्वारा आपके सम्मुख सच्ची, साक्षी देने का यत्न करता रहूँ। क्रोध को जीतूँगा। शरीर को ज़रूरत के अनुसार ही आहार दूँगा। सब कार्य सोच–विचार कर ही किया करूँगा। बड़ों की, सज्जनों की सेवा किया करूँगा। किसी से भय न करूँगा। सत्य का अभ्यास करूँगा। दीन–दुखियों पर दया करूँगा। यह आपका गुण है। मुझे भी दे दो। यही मेरी याचना है।

(रोग व कष्ट के समय)

हे दुखनिवारक, सुखसंचारक, करुणामय पिता! आप ही एकमात्र हमारे सच्चे हितकारी और रक्षक हो। प्रभो! आपको भूलकर अर्थात् आपकी मंशा से बाहर होकर रजोगुणी कामनाओं ने मेरे शरीर में प्रकट होने वाले कष्ट और रोग के, शरीर के अन्दर प्रवेश करने का मार्ग बताया। मैं ज्ञान की नींद में पड़ा रहा। शरीर की शक्तियों पर शासन का अधिकार भूल गया। इस चरम जिह्वा ने अनगढ़ गुरु, मन के साथ मेल करके मुझे उकसाया, भुलाया ओर तरह तरह के चस्कों में फँसा कर मुझे उलझाया। मेरे स्वामी! मैं यह न समझा कि इन जड़ शक्तियों से सुसज्जित यह शरीर किसी पवित्र उद्देश्य पूर्ति के लिए आपने साधन रूप से मुझे दिया था इसकी रक्षा मात्र के लिए खान–पान के वास्तविक सिद्धान्त की अवहेलना कर, मनमानी करता रहा और विवेकभ्रष्ट होकर, उचित–अनुचित, समय–असमय,

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मित–अमित, हित–अहित के विचार को त्याग, जिह्वा द्वारा मन के चस्कों के वशीभूत होकर रोगों का आखेट बना हूँ।

मेरे प्रभु! इन भूलों के परिणाम मुझे निर्बल बना रहे हैं। जीवन को कलंकित कर रहे हैं और कष्ट विपत्तियों के समय वास्तव में आपकी गुप्त कृपा व दया को नहीं पा सका हूँ कि आपने ऐसे समय पर मेरी भूल को चेताया और सुझाया है और सावधान रहने का आदेश देकर मुझे अपनी ओर बुलाया है। नियम ओर मर्यादा में स्थिर रहने का संकेत देकर कष्टों के कारण को सोचने का अवसर दिया है और अपनी सेविका प्रकृति को हर शरीर के विकारों को, जिसे हम रोग व कष्ट का नाम देते हैं, बाहर निकालने की आज्ञा देकर अपनी महान् कृपा का परिचय दिया है। अपनी कृपा का हाथ हमारे सर पर रखा है। प्रभु इतनी दया करो, मुझे विवेक शक्ति दो कि कष्ट नाम के आपके इन सन्देशों को समझ कर कारणों पर विचार करूं कि हमसे क्या भूल हुई हैं? किस इन्द्रियरूपी शक्ति द्वारा हुई है? और क्यों हुई हैं? उसका कारण, सुधार, प्रतिकार क्या है?

मेरे प्रभु ऐसा न हो कि ऐसी भूल पर विचारने का अवसर यूँ ही गुजर जाये और मेरे अन्दर कोई भलाई पैदा न हो। और मेरी लापरवाही को, मेरी भूल को मुँह आने का अवसर मिलें। मेरे दिल को, मन को अपने नियमों पर पाबन्द रहने की प्रबल प्रेरणा देकर अपनी इच्छा की ओर लगाओ। मेरे दुख हरो। सच्चे सुख व शान्ति–कान्ति का संचार करों शरीर व अन्तः करण को निरोगता प्राप्ति के नियमों को समझने व उन पर पाबन्द होने की सामर्थ्य प्रदान करो। मुझे दृढ़ता दो कि मैं इन्द्रियों के विलास–विनोदों के निमन्त्रणों को अस्वीकार करता हुआ सब शक्तियों को आपकी आज्ञाओं के अधीन रखकर सब कार्य करूँ। जिससे आपकी सच्ची उपासना, आठों याम, अपने सच्चे रुप में प्रकट होती रहे। मेरी प्रार्थना स्वीकार करो।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(यज्ञोपवीत के अवसर पर)

हे अनन्त सूर्यों के स्वामी, उनके प्रकाशों के स्रोत, चन्द्रमाओं की शोभा, पृथिवियों के पति, पतियों के अधिपति भगवान्! मनुष्य को सच्चा मनुष्य बनाने वाले, सुधारक व्रतों को पूरा करनेवाले, आप ही व्रतों के पति हो। ऐसे सारे व्रत आपके सतत नियमों का पालन करके ही पूर्ण होते हैं। प्रभु! व्रतों की पूर्णता आपके सत्य नियमों से बँधी हुई है और आपके सत्य नियम प्रमाद को सहन नहीं करते। यह प्रमाद ही मानव का शत्रु है। व्रतपते, ऐसे प्रमाद के स्वभाव को अस्वीकार करने का मैं सबसे प्रथम यत्न–व्रत लेता हूँ और आपसे ऐसे यत्न के लिए बल की याचना करता हूँ।

हे साक्षीरूप द्रष्टा प्रभो! जिस मानव शरीररूपी रथ पर आपने मुझे चढ़ा कर बुद्धिरूपी सारथी को साथ कर दिया है। मेरे प्रभु! आखिर यह बुद्धि भौतिक ही तो है। जो आपके ज्ञान भण्डार से ही ज्ञान लेकर मानव को ठीक मार्ग दिखला सकती है। तब मुझे केवल इस भौतिक आधार पर ही कैसे विश्वास हो सकता है? यह बुद्धि आपसे जुड़ी रह कर ही अपने सारथी नाम और काम को सार्थक बना सकती है। अतः इसे अपने ज्ञान–विज्ञान भण्डार से जोड़ कर मुझे सत्य मार्ग दिखलाते रहें। इसको प्रकाश व उजाला प्रदान करते रहें।

हे पिता! व्यवहार रूप से यह मेरा कहा जाने वाला जीवन आपकी धरोहर है। इस तरंगित जीवन की तरंगे विषय वासनाओं के कंटक मार्ग से, अन्धकारमय मार्ग से, यात्रा करके अन्धकार में लीन न हों। किन्तु वह यौवनावस्था की रजोगुणी तरंगे आत्म–सुधार के

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पश्चात् आत्म स्वभाव का संयम करके, वेद–शास्त्र तथा ऋषि –मुनि आदि महापुरूषों के मार्ग से यात्रा करके परोपकार व सर्वभूतों के हित में रत रहकर अपने सच्चिदानन्दरूपी अथाह समुद्र में विलीन हों।

आपके दियें हुए पुरूषार्थ साधनों द्वारा, आपकी आज्ञा पालन रूप मेरे यत्न और कार्य, संसार के यश और मान के ग्रास न बनें। किन्तु आपकी आज्ञा की जीत बने। आपकी पूजा के पुष्प व प्रसाद बनें।

मेरे भगवान! अपने जन्मकाल में ही मैं अपने को ऋणी देखता हूं। आपका ऋण न कोई चुका सका है और न चुका सकेगा, न किसी में ऐसी शक्ति है। केवल इतना ही कर सकता हूँ कि यह सिर बार–बार आपके सम्मुख झुकता रहे, झुकता रहे, झुकता रहे। मेरी सांसारिक कामनाओं ने और कामनाओं से छुटकारा पाने की भी कामना ने मुझे माता का, पिता का, गुरु आचार्य का, पशु–पक्षियों तक का ऋणी बनाया। मेरे पूज्य पिता! यह ऋण का भार कब तक मुझ पर चढ़ते रहेंगे? और बिना इन ऋणों के उतारे मैं कैसे उऋण हो सकूँगा? कितने लम्बे काल तक यह व्यापार चलता रहेगा? यह मेरी समझ से बाहर है। इसलिए आज मैं आपको साक्षी रूप जान कर यह सर्वऋणों में उऋण होने के लिए यज्ञोपवीत नाम पानेवाली, तीन तारों वाली सूत की माला दीक्षा रूप से, व्रत रूप से गले में लटकाता हूँ। भगवान सूत्र रूप से यह माला मेरे अन्दर नैसर्गिक रूप से भले ही कुछ प्रभाव न डाल सके, पर हाँ प्रभु, मेरे उद्देश्य को सम्मुख रखते हुए यह चिह्न रूप से सुझाती रहे। मेरी असावधानी, मेरी भूल जाने की आदत से मुझे चेताती रहे और धारण किये व्रत की याद दिलाती रहे। भगवान! मैं शास्त्रीय कर्मकाण्ड शारीरिक उन्नति और बल लाभ कर लूँ। विचार शुद्धि से मस्तिष्क को पवित्र कर के ज्ञान में उन्नत

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होऊँ। वृत्तियों व व्यवहारों को शुद्ध बनाकर उपासना का अधिकार प्राप्त कर लूँ। शुद्ध भावों को जागृत कर और माता–पिता का धर्म मार्ग से सेवक बनकर प्रतिदिन नमस्कार कर पितृ ऋण को चुकाऊँ। अग्निहोत्र आदि भगवत् अर्पण कर्मों द्वारा जल–वायु, सूर्य, चन्द्र, पृथ्वी आदि देवताओं का ऋण पूरा करूँ। मानव सन्तान को धार्मिक शिक्षा से सुसज्जित कर देश ऋण से उत्रृण होऊँ। हे व्रतपते! यह गले का हार बनने वाली माला मुझे आध्यात्मिक महाविद्यालय से उत्तीर्ण करवा कर ही गले से बाहर आये। मुझे बल व बुद्धि प्रदान कर यह व्रत पूरा कराएँ। यही आपके सम्मुख याचना है।

(संस्कारों के समय की जाने वाली साँझी प्रार्थना)

हे जगदाधार! यह मनुष्य जीवन आपकी भौतिक, अभौतिक दोनों प्रकार की (जड़ चेतन) शक्तियों से बँधा हुआ है। भगवान! हमें मनुष्यकोटि की हद तक पहुँचने के लिए, सच्चा मनुष्य बनने के लिए क्या–क्या उपाय करने पड़ते हैं? किन–किन विरोधी अवस्थाओं से बचने का यत्न करना पड़ता है? प्रभु! यह सब ज्ञान आपकी दी हुई निर्मल् सूझ से ही जाना जाता है और ऐसी उत्तम सूझ आपके सत्य व सरल नियमों का आधार लेकर ही जागृत होती हे। आत्मा में बल आता है। मन सुधरता है। बुद्धि को प्रकाश मिलता है। शरीर बलवान् व स्वस्थ बनता है।

हे इस संसाररूपी बाग के माली प्रभु! जिस प्रकार बुद्धिमान माली आपके जड़ संसार के उत्पत्ति नियमों का सहारा लेकर अपनी उत्तम बनायी हुई कंकर–कंटक रहित भूमि में अनुकूल ऋतु के दिनों में उगनेवाले बीज बोकर पौधें उगाता है और उनके अंकुरों मे मधुर

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
और सुगन्धि देनेवाली सुगन्धित वस्तुएँ भर कर उनकी रखवाली करता है और उन पौधों को पालने व बढ़ाने–वाली जल, खाद आदि सामग्री देता है और उन अपने लगाये पौधों की शक्ति न क्षीण होने देने के लिए उनके समीप उगने वाली घास–फूस को उखाड़ कर फैंकता रहता है इनता ही नहीं बड़ी–बड़ी आँधियों की ठोकरों से रक्षा करता है। कीड़ों से बचाता है और उनको उत्तम फलवान् बनाने तक अनेकों यत्न करता है। हे जगत् स्वामी, हम भी आपके ज्ञान भण्डार वेद शास्त्र की आज्ञाओं के अनुसार अपनी सन्तानों को संसार क्षेत्र में लाने और सब प्रकार से उनका शुद्ध रूप देने की शुद्ध अन्तः करण से चेष्टा करें और पवित्र धारणा से शुद्ध रूप दें और बुद्धिमान माली की तरह हम भी संसार में आने वाले नवागत शिष्यों (बालक अथवा बालिका रूप में आने वाले) के अंकुररूप अन्तःकरण की भूमि के अन्दर शूरवीरता, निर्भयता, सत्यता, दृढ़ता, सहानुभूति आदि अनेक गुणों के सुन्दर व सुगन्ध देने वाले संस्काररूपी बीजों को बोकर उनको उगाने का अनुकूल यत्न करते रहें और उचित समय तक उनकी रखवाली के कर्त्तव्य का पालन करते हुये अपने माता–पिता व भ्राता होने के सम्बन्ध को सार्थक व सच्चा बनाएँ और उनको दुर्गुण रूपी विषैले कीड़ों के डकों से बचाएँ। और यथासमय सब तरह की विरोधी अवस्थाओं से बचने का यत्न करें। हे नारायण! हमको ऐसी मंति दें। हमारी सन्तानें आपके नियमों का पालन करती हुई दीर्घजीवी, बुद्धिमान्, माता–पिता, गुरू व महापुरुषों की आज्ञाकारी बनकर उनका सत्कार करें और आपकी आज्ञा पालन कर आपकी पूजा करती रहें। भगवान्! आपके चरणों में हमारी यहीं याचना है।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(अन्त्येष्टि प्रार्थना)

हे हमारी आत्माओं के एकमात्र परमात्मा! इन प्राणों के प्राण! इन जीवनों के जीवन देनेवाले, पूज्यदेव भगवान्! इस विश्व की बागडोर और जीवन कला आपके अभौतिक गुप्त हाथों से बँधी हुई है। आपकी महान् महिमा का वर्णन करने में संसार के बड़े से बड़े ज्ञानी–विज्ञानी, आत्मदर्शी मुख से 'बेअन्त, बेअन्त' कहते हुये हार कर मौन साध गये और आपका पार न पा सके। भगवान् आपने मानव को संसार की सब योनियों से प्रधान बना कर बुद्धिरूपी शक्ति के साथ ऊँचे पद पर बिठाया। इतना ही नहीं, किन्तु उन्नति की उचित पराकाष्ठा तक पहुँचाने के लिए वैसे सब साधन साथ दिये। मगर प्रभु! हमने (मानव की अधिक संख्या ने) इस विज्ञान को समझने का यत्न नहीं किया और संसार की रँगरलियों में उलझ कर आपकी प्रदत्त शक्तियों के महत्व को, बड़ाई को न जाना और ऐसे अमूल्य चोले और बुद्धिरूपी शक्ति को कलंकित कर उनका आदर न किया। आपसे हंस नाम की उपाधि लेकर आये और परमहंस बनकर जाने के बदले मूर्खों के साथ होते हुए कागों की तरह संसार के विषयों पर मुँह मार–मार कर, मनुष्य बनना तो दूर रहा, अपने इस हंस नाम–वाली पदवी को भी खो दिया। आपसे शक्तियाँ लेकर आए मगर दुर्भाग्यवश उन शक्तियों को अपने हाथों राक्षसों के सुपुर्द करते रहे और अपनी भूल व अज्ञानता का आपके सम्मुख परिचय दिया और दे भी रहे हैं। आपके उपदेशों और सन्देशों को भुलाकर जिन विकारों से हमने मित्रता गाँठी, जिस जाल में उलझ कर आपका परम पुनीत, परम सुखदायी और पवित्र संग का त्याग किया, जिस संसार के धन, मान, मोह, घमण्ड पर आपसे मुंह फेरते रहे, जिन आपकी कल्याणमयी आज्ञाओं का और आपके सरल व नित्य नियमों की हम अवहेलना करते रहे। एक दिन उन सब को छोड़कर हमें जाना पड़ता है। ये

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भौतिक वस्तुएँ व साथी हमारे कभी स्थायी सहारा नहीं बन सकते। भगवान्! आपने मानव को इस पवित्र जन्म की सार्थकता सिद्ध करने के लिए पर्याप्त समय भी दिया। हमने व्यर्थ ही, खेल ही खेल में गँवाया। कभी मान की इच्छा ने गिराया, तो कभी अहंकार ने दबाया और भुलाया और आपके न्याय नियम में बँधे हुए जब इस शरीर का परिवर्तन अति निकट पहुँचा, उस समय अपनी असमर्थता का भान हुआ। तब हमारी मान इच्छा को लज्जित होना पड़ा, अभिमान को आँसू बहाने पड़े। आज यह पाँचों ज्ञानेन्द्रियों का स्वामी और कर्मेन्द्रियों का दर्शक, व मालिक गतिरहित होकर, मनों लकड़ियों के ढेर और काँटों के नीचे इस भौतिक लपटों वाली ज्वालामुखी का ग्रास बनकर जिस मुट्ठी पर धूलि से बना था उसमें समा जाने के लिए मजबूर हुआ। वायु का भाग वायु, जल का जल ले जा रहा है। अपना कहा जानेवाला हमारे पास क्या रहा? हम खड़े–खड़े देख रहे है।

इस अपनी अन्तःकरण की भूमि में बोए हुए, अच्छी–बुरी बीजों के सिवाय संसार की कोई चीज साथ न चली। क्या बोया और क्या काटेंगे? भगवान्! आपके सिवाय कौन जान सकता है?

हे महान महिमावाले, बेअन्त विस्तृत शक्तियों वाले प्रभु! आपका न्याय जीवन काल में हमारी भूलों को सुझाता रहा, हमने ध्यान न दिया। जिन परम स्नेही सम्बन्धियों पर गर्व करते थे, संसार से विदा होते समय, उनसे भी कोई सहायता नहीं मिली। हमारे जन्म–मृत्यु के संगी प्रभु! सच यह है कि संसार में एकमात्र आपका सम्बन्ध ही सच्चा और अटूट है। आप जैसा परम स्नेही पिता, निःस्वार्थ रक्षक, बन्धु और सखा संसार में ढूँढे से भी नहीं मिलता। आपके पिलाए हुए कड़वे घूँट भी हमारे आत्म–स्वास्थ्य के लिए

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
महौषधि रूप है। हम आपको भूलें न। आपका सच्चा संग न छूटे। हम प्राणी बड़े भूलनहार हैं। पग–पग पर भूलकर नहीं, जान कर भूलें हुई, अनजान से भूलें हुई। परन्तु आपके ही पुत्र हैं। आपकी गोदी में जाकर ही शान्त व सुरक्षित रह सकते हैं। इसलिए हे भगवन्, जगत् स्वामी हम आपको करबद्ध शीश झुकाकर यही याचना करते हैं कि आप हमारी बुद्धियों को प्रबल प्रेरणा दो कि हम प्रथम अशान्त, दुःखी संसार से शिक्षा ग्रहण करें और फिर स्वयं अपने डाँवा–डोल, अशान्त आत्मा, अशान्ति का कारण जानने का यत्न करें और अन्त में उन कारणों को जान उन्हें दूर करके जग से पार हों। प्राणियों की सद्गति व शान्ति आपकी कृपा से ही होती है। आशीर्वाद दो कि हम आपकी कृपा के अधिकारी बनें। सद्गति व शान्ति के लिए हमारी यह याचना है।

(वियोग)

हे सच्चिदानन्द स्वरूप, जगत पिता परमात्मा! जड़–चेतन संसार के उत्पादक प्रभो! संसार की हर वस्तु पर आपका न्याय नियमपूर्ण रूप से लागू है। आपकी महिमा महान् है। छोटे–बड़े सबके लिए आपका न्याय समान है। जो प्राणी बुद्धिपूर्वक आपके सृष्टि नियम का पालन कर, मान शोक रहित हो संसार से पार होता है, वह भाग्यवान् है, महान् है और जो सृष्टि नियम की अवहेलना कर आपसे मुँह मोड़ता है वह अनजान है।

भगवन्! हम अनजान हैं, इसलिए आपकी कृपा के पात्र बनने की बजाय हम आपको भूले रहते हैं। आप इन भूलों को सुधारने के लिए चेतावनी देते हो। ठोकर से चेताते हो। दुःख–पीड़ा द्वारा चेताते हो। असमय वियोग का कड़वा घूंट पिला कर सत्य मार्ग

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिखाते हो। ऐ हमारे रक्षक पिता! आपका यह कड़वा घूंट हमारे आत्मिक स्वास्थ्य के लिए महौषधि रूप है। प्रभो! हम अभिमान में आकर अपने से बाहर होकर, क्या–क्या भूलें कर बैठते हैं? मगर आपकी महान् शक्ति के सामने बड़े से बड़ा अभिमानियों के अभिमान अन्तिम समय मृत्युशय्या पर बुरी तरह हार खाकर आँखें मूँद, रुदन करते हुये अपनी असमर्थता का पूरा परिचय देते हुये संसार से विदा होते हैं। प्रभु ऐसा यह अभिमान आपके बनाये नियम और शक्ति के सम्मुख झुकता रहे। हमारे प्रभो! आप जैसा पिता और आप जैसा बन्धु–सखा संसार में ढूँढ़ना बड़ी भूल करना है। संसार के बन्धु–बांधव और सखा बनते व बिगड़ते रहते हैं। पिता शत्रु बन जाते हैं। मित्र प्राणलेवा बन जाते हैं। तब इस स्वार्थ के सारे खेल की वास्तविकता सामने आती भासती है। पर हे दीनबन्धु! हमें ऐसे बनने–बिगड़ने वाले सम्बन्धियों से कुछ ऐसा भय नहीं है। यदि भय है तो हमें आप से बिछोह का भय है। आप हमारे जीवन–मृत्यु काल में, सुख–दुःख में सच्चे सहायक हैं नायक हैं। आपका सम्बन्ध ही सच्चा व अटूट सम्बन्ध है जो शोक, भय, मोहजनित दुःखों से बचाने वाला, शान्ति दिलाने वाला, भूलों से बचाने वाला, ज्ञानामृत पिलाने वाला, जीवन को प्रधान लक्ष्य की ओर ले जाने वाला है। हमारे स्वामी आपका ऐसा सम्बन्ध कभी न टूटें। आपको भूलने की भूल करने वाला प्रकट में तो श्वास लेते हुये जीता दिखलाई देता है। परन्तु उस सच्चे जीवन से वंचित हैं जो ज्ञान और शान्ति से भरपूर है। अन्दर में होने वाले क्लेशों से दूर है। प्रभु आपके अटल सृष्टि नियमों के अन्दर बँधे हुए जिस प्राणी के आत्मरहित देह को भस्म होने के लिए आपकी आज्ञा में कार्य करने वाली इस भौतिक भयंकर लपटों वाली प्रचण्ड अग्नि को भेंट किया गया है। प्रभु इस वियोगी आत्मा की सदगति व शान्ति के लिए हमे आपसे विनयपूर्वक करबद्ध प्रार्थना करते हैं।

CC-0 In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बालक को आशीर्वाद (संस्कार में)

नाथ! हो बालक आयुष्मान्।।
ज्योति है जिस कुल की बालक–कुल का हो उत्थान।
धर्म में निष्ठा सत्यव्रती हो–वेदों का विद्वान्।
माता पिता का हो आज्ञाकारी–श्रवण कुमार समान।
राम भरत सा होवे प्रेमी–उत्तम गुण की खान।
वीर हो श्रद्धानन्द सरीखा–दे निर्भयता दान।
देशभक्त हो सुभाष जैसा–रखे देश की शान।
दयानन्द सा ईशभक्त हो–हरे सकल अज्ञान।
ब्रह्मचारी ईश्वर विश्वासी–गुणग्राही श्रीमान्।

भजन (जन्मदिवस के उपलक्ष्य में)

जन्मदिन आज फिर आया, बधाई हो बधाई हो।
खुशी का रंग है छाया, बधाई हो बधाई हो।।
हवन से है सुगन्धित हो, गया वातावरण सारा।
ऋचाएं वेद की बोली, गईं गूंजा गगन सारा।।
ये दिन ईश्वर ने दिखलाया, बधाई हो बधाई हो।।1।।
यहां बैठे पड़ोसी हैं, यहीं बैठे हैं सम्बन्धी।
यहां कहकहे उठते हैं, यही फैली है सुगन्धी।।
सभी ने प्रेम से गाया, बधाई हो बधाई हो।।2।।
जिधर देखो उधर मिलते, नजारे ही नजारे हैं।
दिलों में फूट निकले आज, खुशियों के फव्वारे हैं।।
बाग परिवार लहराया, बधाई हो बधाई हो।।3।।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जये सौ साल तू राजा, रहे खुशहाल जीवन में।
बहारें झूम के आये, तुम्हारे दिल के आंगन में।।
रहे मन खूब हरषाया, बधाई हो बधाई हो।।4।।
करे विद्या ग्रहण इतनी, कि जग में नाम हो रोशन।
जहां में चांद सूरज की, तरह हर काम हो रोशन।।
बुजुर्गों का रहे साया, बधाई हो बधाई हो।।5।।
हृदय अन्दर सच्चाई हो, मधुर वाणी सदा बोले।
धर्म की राह पर चलते, हुए तिल भर नहीं डोले।।
"पथिक' नीरोग हो काया, बधाई हो बधाई हो।।6।।

परिवार मंगल–कामना

सदा फूलता फलता भगवन्, यह याज्ञिक परिवार रहे।
प्रेम प्रीति से रहें सभी जन, सदा आप से प्यार रहे।।
मिथ्या कर अभिमान कभी ना जीवन का अपमान करे।
देव जनों की करके सेवा, वेदामृत का पान करे।।
आपकी आज्ञा का ही पालन, करता हर नर नार रहे।।1।।
मिले सदा सम्पदा जो भी इन को उस को माने आपकी।
घड़ी न आने पावे इन पर कोई भी सन्ताप की।।
यही कामना प्रभु आपसे, कर हम बारम्बार रहे।।2।।
दुनियादारी रही चमकती, धर्म निभाने वाले हों।
सेवा के सांचे में सबने जीवन अपने ढाले हों।।
इस घर का हर बच्चा, बनकर श्रवणकुमार रहे।।3।।
बनें रहें सन्तोषी सारे जीवन के हर काल में।
हाल चाल हो कैसा ही इनका, मस्त रहे हर हाल में।।
जिससे 'देश' बसाया इनका सुखदायी संसार रहे।।4।।

CC-0 In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भरोसा कर उस पर

भरोसा कर तू ईश्वर पर, तुझे धोखा नहीं होगा ।
यह जीवन बीत जायेगा, तुझे रोना नहीं होगा ।।
कभी सुख है, कभी दुःख है, यह जीवन धूप छाया है ।
हंसी में ही बिता डाले, बितानी ही यह माया है ।।1।।
जो सुख आवे तो हंस देना, जो दुःख आवे तो सह लेना ।
न कहना कुछ कभी जग से, प्रभु से ही तू कह लेना ।।2।।
यह कुछ भी तो नहीं जग में, तेरे बस कर्म की माया ।
तू खुद ही धूप में बैठा, लखै निज रूप की छाया ।।3।।
कहां ये था कहां तू था, कभी तो सोच ऐ बन्दे ।
झुकाकर शीश को कह दे, प्रभु वन्दे प्रभु वन्दे ।।4।।

भजन

भला किसी का कर न सको तो, बुरा किसी का मत करना ।
पुष्प नहीं बन सकते तो तुम कांटे बनकर मत रहना ।।
बन न सको भगवान् अगर तुम कम से कम इन्सान बनो ।
नहीं कभी हैवान बनो तुम नहीं कभी शैतान बनो ।।
सदाचार अपना न सको तो पापों में पग मत धरना ।।1।।
सत्यवचन न बोल सको तो, झूठ कभी भी मत बोलो ।
मौन रहो तो भी अच्छा कम से कम विष तो मत घोलो ।।
बोलो यदि पहले तोलो फिर मुंह को खोला तुम करना ।।2।।
घर न किसी का बसा सको तो, झोपड़ियां न जला देना ।
मरहम पट्टी कर न सको तो, क्षार नमक न लगा देना ।।
दीपक बनकर जल न सको तो, अंधियारे भी मत करना ।।3।।
अमृत पिला सको न किसी को, जहर पिलाते भी डरना ।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धीरज नहीं बंधा सकते तो, घाव किसी को मत करना ।।
प्रभु नाम की माला लेकर, सुबहो शाम भजन करना ।।4।।

कैसी प्रभु तूने कायनात बांधी

कैसी प्रभु तूने यह कायनात बांधी ।
एक दिन के पीछे एक रात बांधी साथ–साथ बांधी ।

1. कभी थकते नहीं है ये घोड़े,
तूने सूरज के रथ में जो जोड़े।
रज़नी ब्याहने चला चांद दूल्हा बना,
साथ चन्द्रमा के तारों की बारात बांधी ।।....

2. कैसी खूबी से बांधे ये मौसम,
वर्षा सर्दी हेमन्त और ग्रीष्म ।
ये बहार की शमा और ये पतझड़ खिजां,
हवा बादलों के बीच बरसात बांधी ।।....

3. पक्षी जलचर व जन्तु चौपाये,
तूने सबके हैं जोड़े बनाये ।
नाग और नागनी राग और रागनी,
साथ स्त्री और पुरुष की भी जात बांधी।।...

4. तू ही सब का पिता तू ही माता है,
जो समझ में न आये तू वो बात है ।
तेरी क्या बात है सौ की एक बात है,
तूने हर बात में है कोई बात बांधी ।।....

5. नत्थासिंह है अनन्त तेरी माया,
जग के कण–कण में तू है समाया ।
जग से बाहर नहीं फिर भी जाहिर नहीं,
अपने दामन में ऐसी करामात बांधी ।।....

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तेरी मेहरबानी

तेरी मेहरबानी का है बोझ इतना,
जिसे मैं उठाने के काबिल नहीं हूँ ।
मैं आ तो गया हूँ मगर जानता हूँ,
मैं सिर को झुकाने के काबिल नहीं हूँ ।
ये माना कि दाता हो तुम कुल जहां के,
मगर कैसी झोली फैलाऊं मैं आके ।
जो पहले दिया है वो कुछ कम नहीं है,
मैं ज्यादा उठाने के काबिल नहीं हूँ ।।
तुम्हीं ने अता की, मुझे जिन्दगानी,
तेरी महिमा फिर भी मैंने न जानी ।
कर्जदार तेरी दया का हूँ इतना,
जिसे मैं चुकाने के काबिल नहीं हूँ ।।
जमाने की चाहत में खुद को मिटाया,
तेरा 'नाम हरगिज जुबां पे न आया ।
गुनहगार हूँ मैं सजावार हूँ मैं
तुम्हें मुंह दिखाने के काबिल नहीं हूँ ।।
यही मांगता हूँ सिर को झुका लूं,
तेरा दीद इक बार जी भर के पा लूं ।
सिवा दिन के टुकड़े के, अय मेरे मालिक,
मैं कुछ भी चढ़ाने के काबिल नहीं हूँ ।।

दाता तेरे सुमिरन का

दाता तेरे सुमिरन का, वरदान जो मिल जाए ।
मुरझाई कली दिल की, इक आन में खिल जाए ।।
दाता तेरे .... ।।

CC-0 In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुनते हैं तेरी रहमत, दिन रात बरसती है ।
इक बूंद जो मिल जाए, तकदीर बदल जाए ।।
दाता तेरे.......... ।।

यह मन बड़ा चंचल हैं, चिन्तन में नहीं लगता ।
जितना इसे समझाएं, उतना ही मचल जाए ।।
दाता तेरे.......... ।।

हे नाथ मेरे दिल की, बस इतनी तमन्ना है ।
पापों से बचा लेना, पांव न फिसल जाएं ।।
दाता तेरे.......... ।।

देवत्व के फूलों से, दामन को मेरे भर दो ।
जीवन यह सुगन्धित हो, दुर्गन्ध निकल जाए ।।
दाता तेरे.......... ।।

ऐ मानव तू दिल से, प्रभु नाम का सुमिरन कर ।
दोषों भरे जीवन का, कांटा ही बदल जाए ।।
दाता तेरे.......... ।।

भजन

उलझ मत दिल बहारों में, बहारों का भरोसा क्या ।
सहारे टूट जाते हैं, सहारों का भरोसा क्या ।।
तमन्नाएँ जो तेरी हैं, फुहारें हैं ये सावन की ।
फुहारें सूख जाती हैं, फुहारों का भरोसा क्या ।।1।।
दिलासे जो जहां के हैं, सभी रंगी बहारें हैं।
बहारें रूठ जाती हैं, बहारों का भरोसा क्या ।।2।।
तू सम्बल नाम का लेकर, किनारों से किनारा कर ।
किनारे टूट जाते हैं, किनारों का भरोसा क्या ।।3।।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अगर विश्वास करना है, तो कर दुनिया के मालिक पर ।
धनी अभिमानी लोभी दुनियादारों का भरोसा क्या ।।4।।
तूँ अपनी अक्लमंदी पर, विचारों पर न इतराना ।
जो लहरों की तरह चंचल, विचारों का भरोसा क्या ।।5।।
परम प्रभु की शरण लेकर, विकारों से सजग रहना।
कहां कब मन बिगड़ जाये, विकारों का भरोसा क्या ।।6।।

पर तू उदास है

आनन्द स्रोत बह रहा, पर तू उदास है ।
अचरज है जल में रहकर मछली को प्यास है ।।
फूलों में ज्यों सुवास, ईश में मिठास है ।
भगवान् का त्यों विश्व के कण–कण में वास है ।।
टुक ज्ञानचझु खोल के देख तो सही ।
जिसको तू ढूंढता है वो तेरे पास है ।।
कुछ तो समय निकाल आत्मशुद्धि के लिए ।
नर जन्म का उद्देश्य न केवल विलास है ।।
आनन्द मोक्ष का न पा सकेगा तब तलक ।
कि जब तलक 'प्रकाश' तू इन्द्रियों का दास है ।।

भजन

उस प्रभु की है कृपा बड़ी, याद कर ले घड़ी दो घड़ी ।
घण्टी बज जाये कब कूच की, मौत हरदम सिरहाने खड़ी ।/
तेरे शुभ कर्मों का फल है ये, तुझे मानव का चोला मिला ।
जो भी आया है जायेगा वो, बन्द होगा न ये सिलसिला ।।
वेद की कहती हर एक कड़ी, याद कर ले घड़ी दो घड़ी ।।1।।
इस जवानी पे इतरा न तूँ, बातों बातों में मुक जायेगी ।

CC-0. Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भरा सीना सिकुड़ जायेगा, और कमर तेरी झुक जायेगी ।।
क करके चलेगा छड़ी, याद कर ले घड़ी दो घड़ी ।।2।।
ो करना है ले आज कर, कुछ खबर प्यारे पल की नहीं ।
ानव चोले को कर ले सफल, ढील दे इसमें पल की नहीं ।।
ट श्वासों की जाये लड़ी, याद कर ले घड़ी दो घड़ी ।।3।।
ायावादी चकाचौंध में, इसमें मत झूल मतिमन्द तू ।
च्चिदानन्द सुखकन्द की, आ शरण में ले आनन्द तू ।।
वीर" विपदाएं जायें हटी, याद कर ले घड़ी दो घड़ी ।।4।।

भजन

तर्ज– ऐ दिल जरा बता दे ।

फूलों के बदले में तू, कांटे सजा रहा है ।
कुछ नेक काम कर ले, ये वक्त जा रहा है ।।
षयों में होके अन्धा, दिन रात झूमता है ।
ाया करूँ इकट्ठी, इस धुन में घूमता है ।।
ब जाग ओ मुसाफिर, क्यों धोखा खा रहा है ।।1।।
टकरा के जाय हँ कर, निर्धन का खून पीना ।
मरना भला इससे, किस काम का है जीना ।।
उस ईश को भुला कर, सब कुछ भुला रहा है ।।2।।
ड़कन ये तेरे दिल की, तुझ से कह रही है ।
ागज की नाव तेरी, तूफाँ में बह रही है ।।
ैया को तू बचा ले, अन्धेरा छा रहा है ।।3।।
दुनिया है सराय रवानी, यहाँ कितने आ चुके हैं।
ओ बन्दे तू जो गाए, यहाँ कितने गा चुके हैं ।।
जीवन सफल है उसका, प्रभु गुण जो गा रहा है ।।4।।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिव्य कामना

श्री प्रकाशचन्द्र जी

तुम्हारे दिव्य दर्शन की मैं इच्छा ले के आया हूँ ।
पिला दो प्रेम की अमृत पिपासा लेके आया हूँ ।।
रतन–अनमोल लाते लाने वाले भेंट को तेरी ।
मैं केवल आंसुओं की मन्जु माला लेके आया हूँ ।।
जगत् के रंग फीके तू अपने रंग में रंग दे ।
मैं अपना ये महा बदरंग बाना लेके आया हूँ ।।
'प्रकाशानन्द' छा जाये मेरी अन्धेरी कुटिया में ।
तुम्हारा आसरा विश्वास आशा लेके आया हूँ ।।

भजन

हम सब मिल के आए दाता तेरे दरबार।
बर दो झोली सबकी तेरे पूर्ण भण्डार ।।
होवे जब सन्ध्या काल निर्मल होके तत्काल ।
अपना मस्तक झुका के करके तेरा ख्याल ।।
तेरे दर पे आके बैठा सार परिवार ।।1।।
लेके दिल में फरियाद तुझ को करते हैं याद ।
जब हो संकट की घड़ियां मांगे तुम से इमदाद ।।
सब से बढ़कर ऊंचा जग में तेरा दरबार ।।2।।
चाहे दिन हो विपरीत होवे तुझ से ही प्रीत ।
सच्ची श्रद्धा से गावें, तेरी भक्ति के गीत ।।
होवे सब का प्रभु जी तेरे चरणों में प्यार ।।3।।
तू है सब जग का वाली करता सब की रखवाली ।
हम हैं रंग–रंग के पौधे तुम हो हम सब के माली।।
"पथिक" बगीचा है ये तेरा सुन्दर संसार।।4।।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रभु मिलन की राह

अगर पाप में आपका दिल नहीं है ।
तो ईश्वर का मिलना भी मुश्किल नहीं है ।।
हथेली पै हो जिसका सिर इसमें कूदे ।
यह दरिया है वो जिसका साहिल नहीं है ।।
न हो उसकी मखलूख से प्यार जिसका ।
वो आविद कहाने के काबिल नहीं है ।।
तुझे दुनिया काबू में कर लेगी नादां ।
जो काबू में तेरे तेरा दिल नहीं है ।।
जिसे दुनिया कहते हो ऐ दुनिया वालो ।
ये रणक्षेत्र है कोई महफिल नहीं है ।।
मुसाफिर है तू हार हरगिज न हिम्मत ।
जरा और चल दूर मंजिल नहीं है ।।

भजन

इतनी शक्ति हमें देना दाता, मन का विश्वास कमजोर हो ना ।
हम चले नेक रस्ते पे हम से, भूलकर भी कोई भूल हो ना ।।

दूर अज्ञान के हों अंधेरे,
तूँ हमें ज्ञान की रोशनी दे ।
हर बुराई से बचते रहें हम,
जितनी भी दे भली जिन्दगी दे ।।
वैर हो न किसी का किसी से ।
भावना मन में बदले की हो ना ।।1।।

हम न सोचें हमें क्या मिला है,
हम ये सोचें किया क्या है अर्पण ।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फूल खुशियों के बाँटे सभी को,

सब का जीवन ही बन जाये मधुबन ।।

अपनी करुणा का जल तूँ बहा के।

कर दे पावन हर एक मन का कोना ।।2।।

हर तरफ ये बसी बेबसी है,

सहमा–सहमा सा हर आदमी है।

पाप का बोझ बढ़ता ही जाये,

जाने कैसे ये धरती थमी है ।।

बोझ ममता से ये तू उठा ले।

तेरी रचना का ही अन्त हो ना ।।3।।

प्रभु एक बार

मेरी बांह पकड़ लो प्रभु एक बार ।

प्रभु एक बार, बस एक बार ।।

यह जग अति गहरा सागर है ।

सिर धरी पार की गागर है ।।

कुछ हल्का कर दो भार ।

प्रभु एक बार, बस एक बार ।।

इक जाल बिछा मोह माया का ।

इक धोखा कञ्चन काया का ।।

मेरा कर दो मुक्त विचार ।

पभु एक बार, बस एक बार ।।

है कठिन डगर मुश्किल चलना ।

बलहीन को बल दे दो अपना ।।

कर जाऊं भव भय पार ।

प्रभु एक बार, बस एक बार।।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं हार गया अपने बल से ।
निर्दोष बचाओ जग छल से ।।
सौ बार नहीं बस एक बार ।
प्रभु एक बार, बस एक बार ।।
निर्बल हूँ मेरी बांह पकड़ लो ।
मेरा हाथ पकड़ लो ।।

कृपा–कण चाहता हूँ

न मैं धाम धरती, न धन चाहता हूँ ।
कृपा का तेरी एक, कण चाहता हूँ ।।
रटे नाम तेरा वह, चाहूं मैं रसना ।
सुने यश तेरा, वो वह श्रवण चाहता हूँ ।।1।।
विमल ज्ञानधारा से, मस्तिष्क उर्वर ।
मैं श्रद्धा से भरपूर मन चाहता हूँ ।।2।।
करें दिव्य दर्शन, तेरा जो निरन्तर ।
वही भाग्यशाली, नयन चाहता हूँ ।।3।।
नहीं चाहना है मुझे स्वर्ण छवि की।
मैं केवल तुम्हें, प्राण धन चाहता हूँ ।।4।।
'प्रकाश' आत्मा में, आलोक तेरा हो ।
परम ज्योति प्रत्येक, क्षण चाहता हूँ ।।5।।

सुमिरन कर ले

सुमिरन कर ले मेरे मना,
तेरी बीती उमर प्रभु नाम बिना ।।
देह नैन विन, रैन चन्द्र बिन, धरती मेह बिना ।
जैसे पण्डित वेद विहीना, वैसे प्राणी प्रभु नाम बिना ।।
नदी नीर बिनु, धेनु क्षीर बिन, वाणी सत्य बिना ।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
जैसे तरुवर फल बन सूनी, वैसे ही प्राणी नाम बिना ।।
हस्ती दन्त बिन, पक्षी पंख बिन, नारी पुरुष बिना ।
जैसे पुत्र पिता बिन हीना वैसे ही प्राणी प्रभु नाम बिना ।।
काम, क्रोध मद लोभ विरोध त्यागो सन्त जना ।
नानक शाह कहें सुन सन्तो, प्रभु बिन कोई नहीं अपना ।।

द्वार तिहारे आऊं

मैली चादर ओढ़ के कैसे द्वार तिहारे आऊं ।
हे मेरे पावन परमेश्वर मन ही मन शर्माऊं ।।
तूने मुझ को जग में भेजा देकर निर्मल काया,
इस जीवन को पाकर मैंने गहरा दाग लगाया ।
जन्म–जनम की मैली चादर कैसे दाग छुड़ाऊं ।।
निर्मल वाणी पाकर मैंने नाम तेरा न गाया,
नयन मूंदकर हे परमेश्वर ! कभी न तुझ को ध्याया ।
तार वीणा के टूटे सारे कैसे गीत सुनाऊं ।।
इन पैरों से चलकर कभी भी सत् संगति न आया,
जहां जहां हो चर्चा तेरी कभी न शीश झुकाया ।
हे प्रभुवर मैं हार चुका हूँ कैसे तुम्हें रिझाऊं ।।

तेरी डोली निकाली जायेगी

जब तेरी डोली निकाली जाएगी।
बिन मुहूरत ही उठा ली जाएगी।।
सब महल और माडियां रह जाएंगी,
तन से जब यह जां निकाली जाएंगी । जब....
वक्त है कुछ कूच का सामान कर,
फिर तबीयत कब संभाली जाएगी ।। जब....

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जर्रे जर्रे से नजर आयेगा वह,

आंखे जब उससे मिला ली जाएंगी । जब....

काम–क्रोध लोभ मोह तज जायेंगे,

जोत जब मन में जगा ली जाएगी ।। जब....

जब बने शैदा ही उसके प्रेम से,

खाक फिर दुनिया पै डाली जाएगी । जब....

'वीर' फिर दीवानगी में है मजा,

जब लगन प्रभु से लगा ली जाएगी ।। जब....

भजन

आया था कुछ काम को तू सोया चादर तान ।

सुरत संभाल ऐ गाफिल अपना आप पहचान ।।

रात गंवाई सोय के दिवस गंवाया खाय ।

हीरा जन्म अनमोल था कौड़ी बदले जाय।।

मांगन मरण समान है मत मांगो कोई भीख ।

मांगन से मरना भला यह बेदों की सीख ।।

लूट सके तो लूट ले प्रभु नाम की लूट ।

फिर पीछे पछताओगे प्राण जाहिं जब छूट ।।

माया मरी न मन मरा मर मर गये शरीर ।

आशा तृष्णा न मरी कह गये दास कबीर ।।

यह तन उसी का है दिया

मैं नहीं मेरा नहीं यह तन है उसी का दिया ।

जो कुछ मेरे पास है वह धन किसी का है दिया ।।

देने वाले ने दिया और दिया इस शान से ।

मेरा है यह लेने वाला कह उठा अभिमान से ।

CC-0 In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं और मेरा कहने वाला, मन किसी का है दिया ।।
जो कुछ भी मेरे पास है वह भी तो रह सकता नहीं ।
कब बिछुड़ जाये यह जन कह सकता नहीं ।
जिन्दगानी का मधुवन खिला किसी का है दिया ।।
जग की सेवा, खोज अपनी, प्रेम प्रभु से कीजिए ।
जिन्दगी का राज है यह जान कर जी लीजिए ।
साधना की राह में, साधन किसी का है दिया ।।

तुम हो प्रभु चाँद

तुम हो प्रभु चाँद, मैं हूँ चकोरा।
तुम हो कमल फूल, मैं रस का भौंरा।।
ज्योति तुम्हारी का, मैं हूँ पतंगा ।
आनन्द घन तुम हो, मैं वन का मोरा ।।
जैसे हे चुम्बक की, लोहे से प्रीति ।
आकर्षण करे मोहि, लगातार तोरा ।।
पानी बिना जैसे, हो मीन व्याकुल ।
ऐसे ही तड़पाये, तुमरा बिछोड़ा ।।
इक बिन्दू जल का, मैं प्यासा हूँ चातक ।
अमृत की करो वर्षा, हरो ताप मोरा ।।

किसी दिन देख लेना

किसी दिन देख लेना तुझ को ऐसी नीद आयेगी।
तू सोया फिर न जागेगा न दुनिया ही जगायेगी।।
तुझे संसार के खूंटे से जिसने बांध रखा है।
तेरे सोते ही वो ममता की रस्सी टूट जायेगी।।
तेरे घरवाले जिस सूरत से इतना प्यार करते हैं।
यही सूरत उन्हें फिर मृतक बन करके डरायेगी।।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
तेरी हस्ती को जिस खलकत ने पस्ती में गिराया है।
वो ही बंधकर दुनिया तुझ को कन्धों पर बिठायेगी।।
तू आंखे फेरेगा तो दुनिया भी मुंह फेर जायेगी।
जो आंखों पर बिठाती थी, वो ही आंखे दिखायेगी।।
जो कहते थे मरेंगे साथ, वो थोड़ा कदम चलकर।
वो मोह मटकी भी तिनके तोड़ते ही टूट जायेगी।।
जिन्हें समझा है 'नत्थासिंह' अपने वो तो लौटेंगे।
तेरी नेकी बदी ही अन्त में तेरे साथ जायेगी।।

कहां लौट जाए

गति जीव आत्मा की कोई समझाए।
कहां से यह आए कहां लौट जाए।
कभी इसका आना जाना किसी ने न जाना।
कहां का निवासी है यह कहां है ठिकाना।
किसी को भी कोई अपना पता न बताए।
मिली एक नगरी इस को अयोध्या निराली।
जो है आठ चक्रों और नौद्वारों वाली।
सिर्फ चार दिन ही इस का बादशाह कहाए।
प्रभु ने हजारों तोहफें बना कर दिए हैं।
कुदरती नजारे जग में इसी के लिए हैं।
इन्हें छोड़ क्यों जाता है समझ में न आए।
'पथिक' यह प्रभु की माया प्रभु जानता है।
प्रभु के सिवा न कोई पहचानता है।
जो महान् शक्ति सारे विश्व को चलाए।

CC-0 In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शान्ति कीजिए

शान्ति कीजिए प्रभु त्रिभुवन में।
जल में थल में और गगन में,
अन्तरिक्ष में अग्नि पवन में।
औषधि वनस्पति वन उपवन में,
सकल विश्व के जड़ चेतन में।।
शान्ति कीजिए.......

ब्राह्मण के उपदेश वचन में,
क्षत्रिय के द्वारा हो रण में।
वैश्य जनों के होवे धन में,
और शूद्र के हो चरणन में।।
शान्ति राष्ट्रनिर्माण–सृजन में,
नगर ग्राम में और भुवन में।
जीव मात्र के तन में मन में,
और जगत के हो कण कण में ।।
शान्ति कीजिए प्रभु त्रिभुवन में।।

!!ओ३म्!!

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

लेखक परिचय :

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डॉ॰ प्रतिभा पुरन्धि

पितृनाम -- श्री जगदीशराज गुप्ता

मातृनाम -- श्रीमती सुदर्शन रानी

पति - डॉ॰ नरेश मिश्रा (संस्कृत के प्रतिष्ठित विद्वान् तथा आशुकवि। स.ध. संस्कृत कालेज अम्बाला कैण्ट में प्रोफेसर पद पर कार्यरत)

जन्म - 25-3-1961

शिक्षा - पाणिनि कन्या महाविद्यालय वाराणसी गुरुकुल में डा॰ प्रज्ञा देवी, आचार्या मेधा जी के सान्निध्य व शिष्यत्व में ग्यारह वर्ष अष्टाध्यायी, महाभाष्य, निरुक्त, वेदादि शास्त्रों का अध्ययन किया। आचार्या जी से 'व्याकरणोत्तमा' उपाधि ग्रहण की।

मध्यमा, शास्त्री, एम. ए - वाराणसी

शिक्षा शास्त्री - रा॰सं॰सं॰, दिल्ली

एम.फिल, पीएच.डी - जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू।

एम. फिल - ऋग्वेदीय सूर्या विवाह सूक्त का अध्ययन

पीएच.डी - सामवेद एक अध्ययन

अध्यापन - स्कूल, कालेज, विश्वविद्यालय, आदि विभिन्न संस्थाओं में अस्थायी सेवाकार्यकिया। 14 वर्ष राजकीय विद्यालय अम्बाला कैण्ट में सेवाकार्य किया। सम्प्रति 4 वर्षो से संस्कृत विभाग जम्मू विश्वविद्यालय जम्मू में असिस्टैण्ट प्रोफेसर के पद पर नियुक्त हैं।

सम्मान - श्रेष्ठ अध्यापक हेतु जिला शिक्षा अधिकारी अम्बाला द्वारा 'सम्मान' तथा व्यासआश्रम हरिद्वार में गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार के कुलपति डॉ॰ स्वतन्त्र कुमार जी के द्वारा संस्कृत भाषा तथा वेदप्रचार प्रसार के कार्यो में योगदानहेतु 'सम्मान' उत्तरा×चल संस्कृत अकादमी हरिद्वार द्वारा सर्वश्रेष्ठ संस्कृत कथा लेखिका के पुरस्कार से पुरस्कृत।

***

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
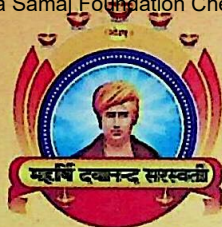
आर्यसमाज के नियम

1. सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सब का आदि मूल परमेश्वर है।
2. ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरुप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्त्ता है, उसी की उपासना करनी योग्य है।
3. वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, वेद का पढ़ना पढ़ाना और सुनना सुनाना सब आर्यो का परम धर्म है।
4. सत्य को ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहियें।
5. सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार कर के करने चाहियें।
6. संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।
7. सबसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य वर्तना चाहिए।
8. अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिये।
9. प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट न रहना चाहिए किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।
10. सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिये और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

Lakshmi Art Printers # 9419182553

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.